

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-५६

विदेह शुद्ध मैथिली लेखन-शैली निर्देशिका

५६

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-५६

विदेह शुद्ध मैथिली लेखन-शैली निर्देशिका

आशीष अनचिन्हार | विदेह · २०२६

स्रोताधारित साहित्यिक आ भाषिक अध्ययन

प्रकाशन-विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड ५६। सम्पादक: आशीष अनचिन्हार।

प्रथम प्रकाशन: २०२६। भाषा: मैथिली। मुद्रित आकार: ६ × ९ इन्च। © २०२६

Gajendra Thakur / Preeti Thakur।

एहि खण्डमे विदेह शुद्ध मैथिली लेखन-शैली निर्देशिकाक नियम, प्रयोग-साक्ष्य, कोश आ परीक्षण-पञ्जीक विवेचन अछि।

मूल ग्रन्थक लेखकीय कथनकेँ आलोचनाक निष्कर्ष बुझि नहि छापल गेल अछि। उद्धरण, उदाहरण, क्षेत्रीय रूप, वर्तनी-विकल्प आ मूल लेखकीय शैलीक प्रमाण-स्थिति सुरक्षित राखल गेल अछि।

सम्पादकीय भूमिका : पाठ, प्रमाण आ समीक्षा

साहित्यिक सम्पादनमे भाषा-सुधारक अधिकार स्वतन्त्र लेखक-स्वरकेँ मिटेबाक अधिकार नहि दैत अछि। “आएल/आयल”, “नहि/नै”, “कएल/कयल” आ “होयत/होएत/हएत” सभ मान्य लेखकीय विकल्प; एकरूपताक निर्णय संदर्भ-सापेक्ष अछि।

ध्वनि, पद, वाक्य, अर्थ, शिल्प, कोश, शिक्षा, अनुसन्धान आ डिजिटल माध्यमक सम्बन्ध क्रमशः देखल जाए; एकटामे प्रमाणित तथ्यकेँ दोसरा विधा वा भाषापर स्वतः लागू नहि मानल जाए।

मूल ग्रन्थक अध्याय-विन्यासक संग पाठ-सन्दर्भ आ आलोचनात्मक विवेचन प्रस्तुत अछि।

विस्तृत अनुक्रम : खण्ड ५६

एहि अनुक्रममे मूल ग्रन्थक विभाग आ विषयसभ अपन क्रममे प्रस्तुत अछि।

- १. लेखन-मानक बनाम साहित्यिक स्वतन्त्रता
- २. ५१२ नियमक बनावट आ अधिकार
- ३. लेखकीय विकल्प : आएल/आयल
- ४. नकार : नहि, नै आ ने

- ५. कएल/कयल आ भविष्यक रूप
- ६. नुक्ता, चन्द्रबिन्दु आ अवग्रह
- ७. कारक, सम्मान आ पाठकीय अर्थ
- ८. ४९४ प्रविष्टिक सम्पादकीय कोश
- ९. नियम-पञ्जी आ प्रतिगमन-परीक्षण
- १०. प्रमाणक सीमा आ भविष्यक विस्तार
- नियम १-८६
- नियम ८७-२००
- नियम २०१-३१७
- नियम ३१८-४६६
- नियम ४६७-५९२ आ ९१क
- ४९४ कोश प्रविष्टि
- १७७ परीक्षण-वाक्य

प्रथम भाग — विषयवार विस्तृत समालोचना

१. लेखन-मानक बनाम साहित्यिक स्वतन्त्रता

निर्देशिका मैथिली वर्तनी, व्याकरण, कारक, क्रिया, विराम आ सम्पादनक सुसंगत निर्णय लेल तैयार कएल गेल अछि। तथापि मानकक प्रयोजन लेखकक स्वर मिटाएब नहि; सम्पादकीय स्थिरता आ पाठकक स्पष्टताक बीच विवेकपूर्ण सम्बन्ध बनायब अछि। मूल उद्धरण, लोकपाठ, संवाद आ ऐतिहासिक वर्तनी स्वतन्त्र पाठ-साक्ष्य अछि। सामान्य गद्यक निर्णय ओकरा स्वतः संशोधित नहि करैत; परिवर्तनक कारण आ संस्करणक क्षेत्र अलग दर्ज होएब चाही।

एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठकक क्रमसँ राखल गेल अछि।

शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

अन्तरसम्बन्धक दृष्टिसँ एहि प्रकरणक पाठकँ एकरे लगक खण्डसभ, मूल पोथीक अनुक्रम आ विदेहक अभिलेखीय परम्परासँ जोड़िकऽ पढ़ब उपयोगी अछि। एहन पठनसँ भाषा, साहित्य, इतिहास, पहुँच आ सम्पादनक प्रश्न परस्पर सम्वादमे अबैत अछि, मुदा अलग स्रोतक भेद नहि मेटैत।

२. ५१२ नियमक बनावट आ अधिकार

मूल पुस्तक नियम १-८६मे भाषा-वर्तनी, ८७-२००मे क्रिया-वाक्य-शब्दार्थ, २०१-३१७मे विधा-सम्पादन, ३१८-४६६मे प्रयोग-कोश, आ ४६७-५१२मे स्रोत-परीक्षण आ विशिष्ट निर्णय समेटैत अछि। नियमकँ एकत्र क्रमांक देनाइ उपयोगी अछि, कारण समीक्षा निर्णयक आधार खोजि सकैत अछि। सम्पादकीय अधिकारक क्रममे मूल स्रोत उद्धरणक अखण्डता, विशिष्ट नियम, सामान्य नियम आ अन्तमे शैलीगत रुचि अछि। ई श्रेणी भङ्ग कऽ स्वचालित प्रतिस्थापन चलाओल गेल तँ नूतन त्रुटि उत्पन्न भऽ सकैत अछि।

३. लेखकीय विकल्प : आएल/आयल

आएल आ आयल दुनू निर्दिष्ट स्वीकार्य रूप अछि। एतय आवृत्तिक आँकड़ा भाषिक व्यवहारक वर्णन करैत अछि, शुद्धता-अशुद्धताक न्याय नहि। एकहि

लेखकीय कथावाचनमे विकल्प चुनल गेल तँ कारण बिना बारम्बार बदललाक समीक्षा होएब उचित अछि। संवादक पात्र क्षेत्रीय रूप बदलि सकैत अछि; इतिहासक उद्धरण अपना अक्षरमे सुरक्षित रहत। एकर अर्थ ई नहि जे संपादकीय गद्यमे अनियन्त्रित असंगति उचित अछि; उद्देश्यपूर्वक रूप-चयनक पद्धति चाही। पाठ-साक्ष्यक प्रश्न : एहि प्रसंगमे मूल प्रकाशनक शीर्षक, लिखित उदाहरण, क्षेत्र/विधा आ सम्पादकीय निर्णयक परिधि एक संग जाँचल जाए। उद्धरणक मूल अक्षररूपकेँ सुधारक नामपर नहि बदलब एहि समीक्षाक आवश्यक नीति अछि।

४. नकार : नहि, नै आ ने

नहि आ नै दुनू मान्य नकार अछि, मुदा ने बलाघात वा प्रश्नक भिन्न काज करि सकैत अछि। एकर एकहि रूपमे थोक प्रतिस्थापन व्याकरणिक अर्थ बिगाडि सकैत अछि। दो उपन्यासक आधार-पाठमे अलग-अलग नकार-आदत भेटबाक टिप्पणी विशेष महत्त्व राखैत अछि। ग्रन्थक पाठसाक्ष्यक उपस्थिति भाषा-समाजक समग्र सार्वभौम नियम नहि बनैत; ई पाठक वास्तविक वितरण देखेबाक अवसर अछि।

५. कएल/कयल आ भविष्यक रूप

कएल/कयल आ होयत/होएत/हएत एकल अनिवार्य विकल्पक सूची नहि अछि। क्रियाक काल, पक्ष, पुरुष, कर्ता-सम्बन्ध आ सम्मान एक-एक वाक्यमे अर्थ-निर्णय करैत अछि। त्रुटि सुधारमे शब्दक बाहरी रूप देखिकेँ क्रिया चुनब पर्याप्त नहि। वाक्यक भीतर कर्ता, कर्म, निषेध आ काल-सीमा पहिचानि तखन स्वीकृत रूप लागू करब निर्देशनक वैज्ञानिक उपयोग अछि।

६. नुक्ता, चन्द्रबिन्दु आ अवग्रह

निर्देशिकाक नव मैथिली लेखकीय गद्य लेल नुक्तायुक्त इ आ ढ मुख्य स्वीकृत अक्षर अछि; शब्दारम्भमे ढोल, ढाक, ढाँचा सन रूप साधारण ढसँ लिखल जाए। ई निर्दिष्ट नीति मूल गैर-मैथिली उद्धरणक अक्षर-रूप पर आक्रमण नहि करैत। देवनागरी अवग्रह ऽ केँ रोमन अपोस्ट्रोफसँ बदलला पर पाठक रूप आ खोज प्रक्रियामे अन्तर आबि सकैत अछि। अनुस्वार आ चन्द्रबिन्दु सेहो अर्थ आ ध्वनिक अनुसार जाँचब चाही, केवल दृश्य समानता देखकर नहि। पाठ-साक्ष्यक

प्रश्न : एहि प्रसंगमे मूल प्रकाशनक शीर्षक, लिखित उदाहरण, क्षेत्र/विधा आ सम्पादकीय निर्णयक परिधि एक संग जाँचल जाए। उद्धरणक मूल अक्षररूपकें सुधारक नामपर नहि बदलब एहि समीक्षाक आवश्यक नीति अछि।

७. कारक, सम्मान आ पाठकीय अर्थ

मैथिलीमे कर्ता-क्रिया-सामञ्जस्य आ मानवीय सम्मानक रूप संचारक अर्थमे निहित अछि। मानवीय पात्र लेल छुथि आ निर्जीव पोथी लेल अछि सन निर्णय केवल शब्द-चयन नहि, सामाजिक व्याकरणक अनुसरण अछि। संपादकक कठिन काम कोनो शब्द गलत देखलापर ओकरा बदलि देब नहि, बल्कि एकहिटा वाक्यक प्रसंगमे व्याकरणिक तथा वक्ता-सम्बन्धी अर्थक परीक्षण करब अछि।

कारकक अर्थक सम्बन्ध आ ओकर प्रत्यक्ष परसर्ग-संकेत हमेशा एक-एक अनुपातमे नहि भेटैत अछि। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककें क्रमसँ राखल गेल अछि।

कर्तृत्व, साधन, सम्प्रदान, स्रोत आ स्थानक अर्थकें अलग उदाहरणसँ परखब आवश्यक अछि। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

८. ४९४ प्रविष्टिक सम्पादकीय कोश

संलग्न JSON कोशमे ४९४ प्रविष्टि दर्ज अछि; किछु प्रविष्टि स्रोतपाठमे भेटल रूप आ प्रस्तावित रूपक अलग आवृत्ति दैत अछि। स्वयं कोश निर्दिष्ट करैत अछि जे ‘o’ केर अर्थ मूल पाठमे ठीक लिखित शब्द नहि भेटब, अशुद्धता नहि। प्रविष्टिक confidence, rule number, condition, source attestation आ auto_replace स्थिति संरक्षण-संवेदी सम्पादनक साधन अछि। सूचीमे रखल “wrong_form” नाम सन्दर्भ बिनु दोष-निर्णय नहि; प्रत्येक निर्णय वाक्यक अर्थ-सीमासँ जुडल रहत।

९. नियम-पञ्जी आ प्रतिगमन-परीक्षण

मशीन-पठनीय नियम-पञ्जी निर्देशिकाक निर्णयकें सत्यापित करबाक सुव्यवस्थित पद्धति अछि। संलग्न १७७ प्रतिगमन-परीक्षण सम्पादकीय वाक्य-प्रयोग दर्शबैत अछि; ओकरा उपन्यासक मूल उद्धरण नहि बुझल जाए।

परीक्षणक सफलताक अर्थ कोनो लघु वाक्य सुधारक नमूना सही रहब अछि, समग्र साहित्यिक सम्पादनक स्वयंसिद्ध शुद्धता नहि। मान्य इनपुट रूप सुरक्षित राखि विवादास्पद सुधारकें अलग समीक्षा-पञ्जीमे दर्ज करब बेहतर अछि। पाठ-साक्ष्यक प्रश्न : एहि प्रसंगमे मूल प्रकाशनक शीर्षक, लिखित उदाहरण, क्षेत्र/विधा आ सम्पादकीय निर्णयक परिधि एक संग जाँचल जाए। उद्धरणक मूल अक्षररूपकें सुधारक नामपर नहि बदलब एहि समीक्षाक आवश्यक नीति अछि।

१०. प्रमाणक सीमा आ भविष्यक विस्तार

दू उपन्यासक वर्ड पाठपर आधारित गणना उपयोगी किन्तु सीमित वर्णनात्मक कॉर्पस अछि। लेखक, विधा, कथावाचक, संवाद आ ऐतिहासिक भाषा-रूपक अनुपात एकही कच्ची गणनामे समेटल गेल तँ शोध निष्कर्ष सावधानी माँगैत अछि। एहि निर्देशिकाक सबल पहलू ई अछि जे बाहरी समीक्षाक अभाव आ आवृत्तिक सीमाकें स्पष्ट मानैत अछि। निरन्तर संशोधनक श्रेष्ठ शर्त खुलल निर्णय-इतिहास, प्रत्यक्ष स्रोत आ मैनुअल समीक्षा अछि।

द्वितीय भाग — पूर्ण ५१२ नियम आ नियम ११क : मूलक्रम जकाँ

नियम १-८६ : भाषा, लिपि आ वर्तनी

नियम १ — प्रमाण आ सम्पादकीय अधिकारक क्रम

मूल नियमक प्रतिपादन — सभसँ ऊपर स्पष्ट स्वीकृत नवतम विदेह-सुधार रहत; तकर बाद ई निर्देशिका, प्रामाणिक व्याकरण, शब्दकोश, स्रोत-पाठ आ क्षेत्रीय प्रयोगक क्रमसँ निर्णय होएत। पुरान उदाहरण नव स्वीकृत नियमकें निरस्त नहि करैत अछि।

सम्पादकीय परीक्षण — कारकक अर्थक सम्बन्ध आ ओकर प्रत्यक्ष परसर्ग-संकेत हमेशा एक-एक अनुपातमे नहि भेटैत अछि। कर्तृत्व, साधन, सम्प्रदान, स्रोत आ स्थानक अर्थकें अलग उदाहरणसँ परखब आवश्यक अछि। एकर प्रयोगमे उद्धृत मूल पाठ आ नव लेखकीय गद्यक अधिकार-सीमा पृथक राखल जाए।

नियम २ — बारह स्रोत-पोथीक आधार

मूल नियमक प्रतिपादन — छओ गद्य-पोथी, दू शब्दकोश आ चारि विशेषज्ञ शब्दावली विदेहक पहिनुक स्रोताधार अछि। नव अध्ययनमे ‘भाषापाक’ आ इग्नूक ‘मैथिली आधार पाठ्यक्रम’क पाठसाक्ष्य जोड़ल गेल अछि। स्रोत-संख्या आ स्रोत-प्रकारक भेद स्पष्ट राखू; कोनो स्रोतकें बिना प्रमाण सार्वभौम मानकक दर्जा नहि दिअ।

सम्पादकीय परीक्षण — एकर प्रयोगमे उद्धृत मूल पाठ आ नव लेखकीय गद्यक अधिकार-सीमा पृथक राखल जाए।

नियम ३ — स्रोतसँ की सिद्ध होइत अछि

मूल नियमक प्रतिपादन — शब्दकोशसँ शब्दक अस्तित्व आ अर्थ, उपन्याससँ पात्रक बोलचाल, विशेष शब्दावलीसँ पेशागत अर्थ आ पाठ्यपुस्तकसँ शिक्षण-परम्परा पता चलैत अछि; मात्र उपस्थितिसँ नव सम्पादकीय मानक सिद्ध नहि होइत अछि।

नियम ४ — नियमक अवस्थाक संकेत

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘अनिवार्य’, ‘विदेहक प्राथमिक रूप’, ‘स्वीकार्य विकल्प’, ‘बोलचाल’, ‘लोक/क्षेत्रीय’, ‘साहित्यिक’, ‘विशेषज्ञ’, ‘ऐतिहासिक’, ‘केवल उद्धरण’ आ ‘पुनर्जाँच’—ई दस चिह्न निर्णयमे उपयोगी अछि। चिह्नक आधार स्पष्ट राखू।

नियम ५ — मैथिली वाक्यक मूल स्वभाव

मूल नियमक प्रतिपादन — पहिने कथ्यक सम्बन्ध, क्रियाक पक्ष, कर्ता-कर्म, सर्वनाम, आदरस्तर आ कारक पहचानू; तकर बाद मैथिलीमे नव वाक्य रचू। हिन्दी अथवा अंग्रेजीक शब्दक्रम नकल कऽ शब्द बदलि देब मैथिली अनुवाद नहि अछि।

सम्पादकीय परीक्षण — वाक्यक संरचना केवल पदक्रम नहि, सूचना-केंद्र, निषेध, प्रश्न आ उपवाक्य-संबंधक क्रियाशील संयोजन अछि। वास्तविक पाठसँ कर्ता-कर्म-क्रिया, विराम आ परोक्ष कथनक भेद जाँचल जाए। एकर प्रयोगमे उद्धृत मूल पाठ आ नव लेखकीय गद्यक अधिकार-सीमा पृथक राखल जाए।

नियम ६ — शुद्धता बनाम कृत्रिमता

मूल नियमक प्रतिपादन — शुद्ध मैथिलीक अर्थ सभ संस्कृत शब्द ठूसब नहि। जीवित जनभाषाक स्वाभाविक रूपकें मान्यता दिअ; प्रचलित पारिभाषिक शब्दकें केवल विदेशी मूलक कारण हटाउ नहि।

नियम ७ — प्रतिस्थापनसँ पहिने अर्थ-जाँच

मूल नियमक प्रतिपादन — के काज कऽ रहल अछि, ककरापर काज होइत अछि, काल की अछि, कारक कोन अछि, आ शब्दक अर्थ कोन प्रसंगमे अछि—ई निश्चित कएने बिना शब्द नहि बदलू। ‘ओ घुरऽ लागल’ आ ‘ओ घुरबऽ लगल’ एके मानक नहि।

सम्पादकीय परीक्षण — अर्थ-निर्माण शब्दकोशक परिभाषामात्र नहि; सन्दर्भ, निहितार्थ आ वक्ताक अभिप्रायसँ बनैत अछि। समरूप शब्द, बहुअर्थक प्रयोग आ अनुवाद-चयनक प्रमाणित पाठसँ जाँच करी। एकर प्रयोगमे उद्धृत मूल पाठ आ नव लेखकीय गद्यक अधिकार-सीमा पृथक राखल जाए।

नियम ८ — पाठ-संग्रहक सदुपयोग

मूल नियमक प्रतिपादन — पाठ-संग्रहसँ प्रचलन, सहप्रयोग, किर्यारूप, कथ्यक लय आ संवादक भेद जाँचू। ओकर शब्द-गणना मतदान नहि; अधिक प्रचलित पुरान रूपक तुलना स्वीकृत नव मानकसँ करब आवश्यक अछि।

नियम ९ — वर्णनात्मक आ निर्देशात्मक कथन

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘फलाँ पोथीमे ई रूप भेटैत अछि’ एकटा वर्णन; ‘नव विदेह गद्यमे ई रूप लिखू’ एकटा निर्देश अछि। दूनूकें स्पष्ट अलग राखू।

नियम १० — लेखनक अनिवार्य स्वपरीक्षण

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रकाशनसँ पहिने स्रोत-पाठ, तथ्य-साक्ष्य, शब्दरूप, कारक, काल-पक्ष, सम्मानसूचकता, उद्धरण, नुक्ता, अनुस्वार-चन्द्रबिन्दु, अनुक्रम, मुद्रण आ डिजिटल पठनीयताक क्रमशः जाँच करू। आन्तरिक सम्पादकीय टिप्पणी मुख्य पाठमे नहि रहय। दोसर भाग

नियम ११ — लिपिक निर्धारण

मूल नियमक प्रतिपादन — सामान्य प्रकाशनमे मानक युनिकोड देवनागरी; तिरहुता लिपिक स्वतन्त्र मान आ प्रामाणिक रूप बनल रहत। पुरान फॉन्टक अक्षर-नक्शापर आधारित पाठकें नव फाइलमे सीधे नहि राखू।

सम्पादकीय परीक्षण — लिपि, उच्चारण आ ध्वनिमक तीन अलग स्तर अछि; एकर अदलाबदलीमे सूचना-हानि भऽ सकैत अछि। मूल कोडबिन्दु, Unicode सामान्यीकरण, राउण्ड-ट्रिप परीक्षण आ पाठक पठनीयता जाँचू। एकर प्रयोगमे उद्भूत मूल पाठ आ नव लेखकीय गद्यक अधिकार-सीमा पृथक राखल जाए।

नियम १२ — युनिकोडक अक्षर-सुरक्षा

मूल नियमक प्रतिपादन — पाठ चुनल, खोजल आ प्रतिलिपि कएल जा सकय, से आवश्यक अछि। सन्धि-अक्षर, अनुस्वार, चन्द्रबिन्दु, नुक्ता आ अवग्रहक क्रम दुरुस्त राखू; चित्रमे बदलल पाठ सामान्य लेखनक विकल्प नहि।

नियम १३ — छायापाठक त्रुटि-जाँच

मूल नियमक प्रतिपादन — यन्त्रपठित पुरान पाठमे जोड़ाक्षर, मात्रा आ शब्दक फाँक गलत भऽ सकैत अछि। संशय भेलापर मूल पृष्ठक छवि वा विश्वसनीय मुद्रण देखू; धुँधलका के आधार बना शब्दकोश नहि गढ़ू।

नियम १४ — स्वर आ मात्रा

मूल नियमक प्रतिपादन — एकहि शब्दक स्थापित स्वरूप समूचा पाण्डुलिपिमे एकसमान रहय। हिन्दी-सदृश शब्दक मात्रासँ मैथिली वर्तनी अपने-आप निर्धारित नहि होइत अछि।

नियम १५ — अनुस्वार आ चन्द्रबिन्दु

मूल नियमक प्रतिपादन — अनुस्वार 'ँ' आ चन्द्रबिन्दु 'ँ'क ध्वन्यात्मक काज एक नहि। 'साँझ', 'सोझाँ', 'पानि' जकाँ स्वीकृत रूप जाँचिकऽ उपयोग करू। पञ्चमाक्षर आ अनुस्वारक विकल्पकें यान्त्रिक ढंगसँ एक-दोसराक स्थानपर नहि राखू; मूल शब्द आ उच्चारणक प्रमाण निर्णायक अछि।

नियम १६ — विसर्ग आ तत्सम रूप

मूल नियमक प्रतिपादन — विसर्ग अथवा संस्कृतक विशेष रूप मात्र स्थापित तत्सम, शास्त्रीय पारिभाषिक शब्द, मन्त्र वा मूल उद्धरणमे राखू; जीवित मैथिली तद्भव शब्दकेँ जबरन संस्कृत रूप नहि बनाउ।

नियम १७ — संयुक्ताक्षर आ हलन्त

मूल नियमक प्रतिपादन — मानक युनिकोडक संयुक्ताक्षर लिखू। सामान्य गद्यमे हलन्त दिखेबाक लेल अनावश्यक चिह्न नहि घुसाउ; ध्वनिवैज्ञानिक उदाहरणमे आवश्यकता अनुसार स्पष्ट रूप दियौ।

नियम १८ — नुक्ताक एकमात्र मान्य दू अक्षर

मूल नियमक प्रतिपादन — अनिवार्य : नुक्ता केवल 'ड' आ 'ढ'। मैथिली लेखनमे ड/ढ छोड़ि आन नुक्तायुक्त अक्षर नहि लिखू। शब्दक आरम्भमे साधारण 'ड' आ 'ढ' लिखल जाएत; 'ढाक', 'ढोल', 'ढेकी'मे नुक्ता नहि। आरम्भक बाद जे शब्दमे मुड़ल ध्वनि अछि ताहिमे 'ड' वा 'ढ'—'पड़ल', 'बढ़ल', 'चढ़ल', 'पढ़ल', 'पीढ़ी', 'तरहड़ि'। मुदा भीतरक प्रत्येक 'ड/ढ' नुक्तायुक्त नहि होइत अछि: रूप, ध्वनि आ अर्थ सत्यापित करू। उद्धृत गैर-मैथिली पाठक मूल वर्तनीक मामला अलगसँ चिह्नित करू।

नियम १९ — अवग्रह आ संक्षिप्त क्रियारूप

मूल नियमक प्रतिपादन — 'कऽ', 'भऽ', 'घुरऽ' आदि लेल देवनागरी अवग्रह 'ऽ' प्रयोग करू। अंग्रेजी अपोस्ट्रोफ वा अशुद्ध आकृति नहि। मुद्रित पाठमे तऽ/तँ आ कऽक अर्थगत आ वर्तनीगत भेद सेहो जाँचू।

सम्पादकीय परीक्षण — काल, पक्ष, भाव आ आदरकेँ एकटा मात्र प्रत्यय-सारणीमे समेटलासँ अर्थभेद ओझराएत। प्रत्येक क्रियारूपकेँ कर्ता, प्रसंग, पूर्ण वाक्य आ स्रोतसहित मिलेनाइ जरूरी अछि। एकर प्रयोगमे उद्धृत मूल पाठ आ नव लेखकीय गद्यक अधिकार-सीमा पृथक राखल जाए।

नियम २० — शब्दक फाँक आ जोड़

मूल नियमक प्रतिपादन — सम्बन्धचिह्न ‘क’, ‘कै’, ‘सँ’, ‘मे’ आदि मैथिली व्याकरणक अनुसारै लगत; ‘क’ सटल, ‘कै’ आ ‘सँ’ स्थापित संयोजनमे प्रायः सटल, मुदा वाक्यांश, लेखकीय परम्परा आ अर्थ देखिकऽ निर्णय करू। ‘कऽ’ स्वतन्त्र पूर्वकालिक अव्यय अछि—‘देखि कऽ’। फाँकक प्रश्नमे एके यन्त्र-नियम नहि थोपल जाए।

सम्पादकीय परीक्षण — शब्दक अर्थ, पद-श्रेणी आ प्रयोगक्षेत्रकें स्थिर कोशीय लेबलमे सीमित करब कठिन अछि। सहप्रयोग, वाक्य-सन्दर्भ, क्षेत्रविशेष आ ऐतिहासिक स्रोत जाँचिकऽ निर्णय करब समीचीन अछि। एकर प्रयोगमे उद्धृत मूल पाठ आ नव लेखकीय गद्यक अधिकार-सीमा पृथक राखल जाए।

नियम २१ — समासक व्यवहार

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रचलित समस्त शब्द जकाँ स्थापित अछि, तहिना लिखू; जटिल पदसमूह केवल संस्कृत-सदृश देखाबय लेल नहि जोड़ू। स्पष्ट अर्थ लेल आवश्यक फाँक राखू।

नियम २२ — योजकचिह्न

मूल नियमक प्रतिपादन — युग्म, दोहराव आ किछु संयुक्त नाममे ‘-’ उपयोगी अछि; साधारण मैथिली पदबन्धकें सजावट लेल हाइफनसँ नहि भरू।

नियम २३ — दीर्घ विरामरेखा

मूल नियमक प्रतिपादन — वाक्यक बीच अतिरिक्त टिप्पणी, जोर अथवा सीमा स्पष्ट करबाक लेल विरामरेखा सीमित राखू। पूर्णविराम वा अल्पविराम जतेक साफ अछि, ओतय विरामरेखा नहि चाही।

नियम २४ — वाक्यक अन्त

मूल नियमक प्रतिपादन — सामान्य देवनागरी गद्यक पूर्णविराम ‘।’ अछि। वेब-पता, वैज्ञानिक सङ्केत आ विदेशी संक्षेपमे आवश्यक बिन्दु मूल रूपमे रहि सकैत अछि।

नियम २५ — अल्पविराम

मूल नियमक प्रतिपादन — सूची, मध्यवर्ती टिप्पणी आ लम्ब वाक्यक भेद स्पष्ट करबाक लेल ‘;’ उपयोग करू। अंग्रेजीक आदत अनुसार प्रत्येक छोट ठाम अल्पविराम नहि भरू; आवश्यक भेल वाक्य बाँटू।

नियम २६ — अर्द्धविराम

मूल नियमक प्रतिपादन — अर्द्धविराम दुर्लभ अवसरपर दू निकटवर्ती स्वतन्त्र कथन जोड़य; सामान्य पाठक लेल दू स्पष्ट वाक्य प्रायः नीक।

नियम २७ — द्विविन्दु

मूल नियमक प्रतिपादन — व्याख्या, व्यवस्थित सूची वा उद्धरणसँ पहिने द्विविन्दु उपयोगी अछि। प्रत्येक शीर्षकक बाद एकर अनिवार्यता नहि।

नियम २८ — प्रश्न आ विस्मय

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रत्यक्ष प्रश्नक अन्तमे ‘?’ आ वास्तविक विस्मयमे ‘!’ दिअ; लगातार अनेक चिह्न साहित्यिक संवादक विशेष प्रयोजनबिना नहि लगाउ।

नियम २९ — उद्धरणचिह्न

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रत्यक्ष उद्धरण लेल “...” आ ओकर भीतर ‘...’ स्थिर राखू। साहित्यिक मूल उद्धरणक शब्द, विराम, पाँति वा छन्द चुपचाप नहि बदलू। सम्पादकीय पूर्ति चौकोर कोष्ठकमे स्पष्ट करू; बिना देखल स्रोतक कथनकें उद्धरणचिह्नमे नहि राखू।

नियम ३० — त्रिविन्दु

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘...’ केवल अधूरल विचार, बोलतीक रुकावट वा स्पष्ट पाठ-विलोपन लेल राखू। दृश्य बदलबाक वा नाटकीयता बढ़ेबाक साधारण उपकरण नहि।

नियम ३१ — कोष्ठक

मूल नियमक प्रतिपादन — गौण जानकारी गोल कोष्ठकमे, सम्पादकीय जोड़ वा उद्धरणक स्पष्टीकरण चौकोर कोष्ठकमे दियौ। अनेक परतवला कोष्ठक पाठककें उलझाबैत अछि।

नियम ३२ — तिर्यकरेखा

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘/’ स्पष्ट विकल्प, संक्षिप्त जोड़ी वा तकनीकी संकेतमात्र लेल; साधारण गद्यमे सम्बन्ध शब्दसँ व्यक्त करू।

नियम ३३ — अङ्कक पद्धति

मूल नियमक प्रतिपादन — सामान्य मैथिली गद्य आ क्रमाङ्कमे देवनागरी अङ्क प्राथमिक अछि। आईएसबीएन, आईएसएसएन, जाल-पता, संगणकीय पहचान आ वैज्ञानिक अभिलेखमे अपेक्षित अन्तरराष्ट्रीय अङ्क यथावत् रखू। एक सारणीक भीतर एके प्रकारक संख्यापद्धति राखू।

नियम ३४ — तारीख लिखबाक ढंग

मूल नियमक प्रतिपादन — दिन-मास-वर्षक स्पष्ट क्रम राखू; संशयक स्थितिमे मासक नाम लिखू। अभिलेखीय सूचीमे यन्त्रानुकूल निश्चित तारीख-रूप उपयोगी अछि।

नियम ३५ — समय-लेखन

मूल नियमक प्रतिपादन — गद्यक सन्दर्भमे भिनसर, दुपहर, साँझ, राति आदि स्वाभाविक रूप; समय-सारिणीमे चौबीस-घण्टाक स्पष्ट व्यवस्था राखू। एके दस्तावेजमे अनावश्यक फेरबदल नहि।

नियम ३६ — संक्षेप शब्द

मूल नियमक प्रतिपादन — अपरिचित संक्षेप पहिल प्रयोगमे पूरा लिखू। संस्था अथवा विधिक अधिकृत संक्षेप जखन जरूरी, मूल रूप प्रमाणित रखू।

नियम ३७ — विदेशी नाम आ पारिभाषिक पद

मूल नियमक प्रतिपादन — नाम अथवा पारिभाषिक शब्दक मैथिली रूप लिखू;
मूल विदेशी वर्तनी पहिल उल्लेखपर कोष्टकमे देल जा सकैत अछि।
आधिकारिक नाम, सटीक शीर्षक, वैज्ञानिक द्विनाम आ खोजयोग्य डिजिटल
पहचानकें बदलि कऽ दूषित नहि करू।

नियम ३८ — पोथी आ रचनाक शीर्षक

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रकाशित कृतिक प्रामाणिक शीर्षक स्वयं ऐतिहासिक
तथ्य अछि। ओकरा विदेह शब्दरूपक आधारपर चुपचाप नहि सुधारू।
सम्पादकीय परीक्षण — रचनाक शिल्पमे अनुच्छेद, लक्ष्यपाठक, विधा, कथन-
स्वर आ अर्थ-क्रम एक-दोसराक पूरक अछि। सम्पादनमे वास्तविक लेखकीय
स्वरकें बचबैत शैलीक स्पष्टता जाँचल जाए। एकर प्रयोगमे उद्धृत मूल पाठ आ
नव लेखकीय गद्यक अधिकार-सीमा पृथक राखल जाए।

नियम ३९ — शीर्षकक गठन

मूल नियमक प्रतिपादन — शीर्षक छोट, सार्थक आ एकरूप हो; अनावश्यक
विरामचिह्न नहि। उपशीर्षक मूल शीर्षकक विषय-सीमा स्पष्ट करय।

नियम ४० — सूचीक अनुशासन

मूल नियमक प्रतिपादन — क्रमबद्ध प्रक्रिया लेल क्रमाङ्कित सूची, निरक्रम
बिन्दु लेल चिह्नित सूची। सभ पाँतिक व्याकरणिक गठन एकजकाँ राखू।

नियम ४१ — सारणीक प्रयोग

मूल नियमक प्रतिपादन — सारणी तुलना, मिलान वा तथ्य-संघटन लेल;
साधारण गद्य जबरन सारणीमे नहि। शीर्षकसँ स्तम्भक अर्थ स्पष्ट होअय।
सम्पादकीय परीक्षण — भाषाक वास्तविक प्रयोग नियमक अपवाद नहि, कतेको
बेर नियमक सीमा स्पष्ट करैत अछि। उद्धरण, संवाद, शिक्षण आ शोधमे एकहि
रूपक भिन्न स्वीकृति-स्थिति सुस्पष्ट राखू। एकर प्रयोगमे उद्धृत मूल पाठ आ नव
लेखकीय गद्यक अधिकार-सीमा पृथक राखल जाए।

नियम ४२ — डिजिटल नाम आ पता

मूल नियमक प्रतिपादन — फाइलनाम, वेब-पता आ डिजिटल पहचान तकनीकी रूपेँ अक्षुण्ण रहय; तिनकर आसपासक व्याख्या शुद्ध मैथिलीमे हो। तेसर भाग

नियम ४३ — संज्ञाक विस्तार

मूल नियमक प्रतिपादन — व्यक्ति, स्थान, वस्तु, घटना, पदार्थ आ भाव सभ संज्ञा अछि। अंग्रेजी-हिन्दीक लिङ्ग, वचन वा गणनीयता सीधा मैथिलीपर नहि थोपल जाए।

नियम ४४ — वचन आ समूहवाचक रूप

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘छात्रसभ’, ‘पोथीसभ’, ‘लोकसभ’ आदि सन्दर्भसंगत बहुवचन अछि; पदार्थवाचक वा भाववाचक शब्दपर अकारण ‘सभ’ नहि चढ़ाउ। सामान्य जनसमुदायक वर्णन आ आदरसूचक एकवचनक क्रियारूपकेँ गडुमडु नहि करू।

नियम ४५ — सभ बनाम सब

मूल नियमक प्रतिपादन — नव सामान्य विदेह गद्यमे ‘सभ’ प्राथमिक अछि। ‘सब’ स्रोत-उद्धरण, पात्रक बोली वा निश्चित क्षेत्रीय रूपमे सुरक्षित राखल जा सकैत अछि।

नियम ४६ — प्रत्येक आ सर्वकालिकता

मूल नियमक प्रतिपादन — हिन्दी ‘हर/हरेक’केँ सामान्य गद्यमे यान्त्रिक रूपसँ नहि राखू। ‘सभ पीढ़ी’, ‘सभ काल’, ‘हरदम’ वा नियत तकनीकी प्रसंगमे ‘प्रत्येक’ अर्थानुकूल अछि। ‘हरदम’क मूल शब्द रूपमे ‘हर’ हटा देब नहि।

नियम ४७ — गणनासँग वर्गसूचक

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘एकटा पोथी’, ‘दू गोटा लोक’ आदि रूप प्रसंगानुसार स्वाभाविक; अङ्कक बाद सभठाम ‘टा’ जोड़ी देब उचित नहि।

नियम ४८ — कारक आ परसर्ग

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘कै, सँ, मे, पर, लेल, संग, धरि, दिस, लग, कात, आगाँ, पाछाँ’ अर्थ अनुसार अपन स्थान लैत अछि। अनुवादमे हिन्दी विभक्तिक चिप्पी नहि लगाउ।

नियम ४९ — एक परसर्गक अनेक अर्थ

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘सँ’ स्रोत, साधन, तुलना आदि देखाबि सकैत अछि; अर्थ निश्चित कएने बिना एकरा ‘से’क एकमात्र पर्याय नहि बुझू।

नियम ५० — ‘सँ’क मुख्य प्रयोग

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘गामसँ आयल’—स्रोत; ‘हाथसँ लिखल’—साधन; ‘ओकरासँ पैघ’—तुलना। तीनू सम्बन्ध अलग अछि।

नियम ५१ — ‘मे’ आ ‘पर’

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘मे’ प्रायः भीतर वा क्षेत्र, ‘पर’ सतह, लक्ष्य वा विषय दर्शाबैत अछि; संस्थागत सन्दर्भमे स्वाभाविक सहप्रयोगकें प्राथमिकता दिअ।

नियम ५२ — ‘लेल’क सम्बन्ध

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘ओकरा लेल’, ‘पढ़बाक लेल’ जकाँ उद्देश्य वा हितक सम्बन्धमे ‘लेल’ प्रयोग करू। हिन्दी ‘के लिए’क पदक्रम नहि अपनाउ।

नियम ५३ — सम्बन्धवाचक ‘क’

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘गामक बाट’, ‘साँझक समय’, ‘मनक बात’, ‘पोथीक पन्ना’ मानक सम्बन्ध-निर्माणक रूप अछि। हिन्दी ‘का/की/के’क लिङ्ग-ढाँचा नहि अपनाउ।

नियम ५४ — लम्ब सम्बन्ध-शृङ्खला

मूल नियमक प्रतिपादन — तीन-चारि ‘क’ लगातार आ अर्थ अस्पष्ट भेलासँ वाक्यकें दू भागमे बाँटू वा क्रियायुक्त उपवाक्य बनाउ।

नियम ५५ — सर्वनामक समग्र संगति

मूल नियमक प्रतिपादन — सर्वनाम, कर्ता, कर्म, दूरी, सम्मान आ क्रिया एक व्यवस्था बनवैत अछि। हिन्दी 'वह/उसे' वा अंग्रेजी सर्वनामक एक-एक समानार्थी पर्याप्त नहि।

सम्पादकीय परीक्षण — व्यक्ति, दूरी, सामाजिक सम्बन्ध आ सम्मानक बहुस्तरीय व्यवस्था एहि विषयक वास्तविक केन्द्रीय प्रश्न अछि। एकहि व्यक्तिक रूपभेदकें वाक्यमे ओकर व्याकरणिक भूमिका आ सामाजिक प्रसंगसँ जोड़िकऽ पढ़ल जाए। एकर प्रयोगमे उद्धृत मूल पाठ आ नव लेखकीय गद्यक अधिकार-सीमा पृथक राखल जाए।

नियम ५६ — उत्तम पुरुष

मूल नियमक प्रतिपादन — 'हम', 'हमरा', 'हमर' कारक अनुसार; 'मुझे/मेरा'क हिन्दी वाक्य-विन्यास मैथिलीमे नहि उतरय।

नियम ५७ — मध्यम पुरुष आ आदर

मूल नियमक प्रतिपादन — 'अहाँ' सम्बोधनक संग सम्मानसूचक क्रिया राखू। एके वाक्यमे आदरसूचक सम्बोधन आ अनादरसूचक क्रियाक टकराव त्रुटि अछि।

नियम ५८ — सामान्य तृतीय पुरुष

मूल नियमक प्रतिपादन — 'ओ' कर्ता, 'ओकर' सम्बन्ध, 'ओकरा' कर्म/परोक्ष कारकक प्रसंगमे; तीनूकें अदलि-बदलि नहि लिखू।

नियम ५९ — आदरसूचक तृतीय पुरुष

मूल नियमक प्रतिपादन — 'हुनक', 'हुनका' आ तदनुकूल क्रियारूप सम्मानित व्यक्तिक सम्बन्धमे। केवल सर्वनाम बदलबासँ आदरक व्यवस्था पूर्ण नहि होइत अछि।

नियम ६० — निकटताक सर्वनाम

मूल नियमक प्रतिपादन — 'ई', 'एकर', 'एकरा' निकट अथवा वर्तमान निर्देशित वस्तु/व्यक्तिक कारक-रूप अछि; दूर 'ओ' शृङ्खलासँ भेद राखू।

नियम ६१ — मानवीय आ अमानवीय ‘छथि/अछि’

मूल नियमक प्रतिपादन — सम्मानसूचक मानवीय कर्ताक लेल ‘छथि’; निर्जीव वस्तु, पोथी, नियम, घटना अथवा भावक लेल अर्थानुकूल ‘अछि/छै’। उदाहरण — ‘लेखक उपस्थित छथि’; ‘ई पोथी उपयोगी अछि’। लोकगीत वा धर्मकथामे नदी अथवा देवीक व्यक्तिरूप संबोधन स्रोत-निष्ठ रखल जाए।

नियम ६२ — सम्मानक छओ अङ्ग

मूल नियमक प्रतिपादन — सम्बोधन, सर्वनाम, सम्बन्धसूचक, सहायक क्रिया, मुख्य क्रिया आ क्रियाक सम्मानसूचक प्रत्यय—छओक आपसी संगति देखू।

नियम ६३ — बहुवचन आ आदरसूचक एकवचन

मूल नियमक प्रतिपादन — दिखबामे समान रूप कखनो अनेक व्यक्ति, कखनो एक सम्मानित व्यक्ति लेल होइत अछि। आशय आ क्रियाक सन्दर्भ जाँचू।

नियम ६४ — प्रतिबिम्बवाचक ‘अपन’

मूल नियमक प्रतिपादन — कर्ता वा सम्बन्धित पात्रसँ एके व्यक्तिक अधिकार व्यक्त हो तँ ‘अपन’ उचित; प्रत्येक अंग्रेजीक ‘अपन’ अर्थ लेल नहि, मुदा जेठाम अपेक्षित ओतय ‘ओकर’ नहि।

नियम ६५ — संकेतवाचक भेद

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘ई/एहि’ निकट; ‘ओ/ओहि’ दूर अथवा पहिने उल्लिखित। कारक आ विशेषणक स्थिति अनुसार चयन करू।

नियम ६६ — ‘ओही’ आ ‘वएह’

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘ओही दिन’मे निर्धारक रूप ‘ओही’; ‘ई वएह बात अछि’मे पहिचानपर बल देबयवला ‘वएह’। हिन्दी ‘वही’क दू अर्थक एकहि मैथिली रूपमे नहि मिलाउ।

नियम ६७ — अनिश्चित सर्वनामक चारि भेद

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘कियो’—अनिर्दिष्ट मानवीय कर्ता; ‘ककरो’—तिर्यक/सम्बन्धसूचक; ‘कोनो’—संज्ञाक निर्धारक; ‘किछु’—अनिर्दिष्ट वस्तु वा परिमाण। ‘कियो ओकरा किछु नहि कहलक’—‘ककरो ओकरा’ नहि।

नियम ६८ — ‘कियो’क कर्ता-परीक्षा

मूल नियमक प्रतिपादन — आशय ‘कोनो व्यक्ति आयल/कहलक’ हो तँ कर्ता रूपमे ‘कियो’ देखू। हिन्दी ‘किसी ने’क कारण ‘ककरो’ नहि रखू।

नियम ६९ — ‘ककरो’क तिर्यक-परीक्षा

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘ककरो बात सुनू’ जकाँ सम्बन्ध, अधिकार वा तिर्यक कारकमे ‘ककरो’ उचित; कर्ताक स्थानमे यान्त्रिक उपयोग नहि।

नियम ७० — ‘कोनो’क विशेषक-परीक्षा

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘कोनो उपाय’, ‘कोनो लोक’मे ‘कोनो’ संज्ञाक विशेषक अछि। स्वतन्त्र मानवीय कर्ताक अर्थमे ‘कियो’ उचित।

नियम ७१ — सम्बन्ध-सहसम्बन्ध

मूल नियमक प्रतिपादन — मैथिलीक ‘जे...से’, ‘जखन...तखन’, ‘जँ...तँ’ जकाँ ढाँचा स्वाभाविक अछि; बाहरी भाषाक उपवाक्यक्रम यथावत् नहि राखू।

नियम ७२ — ‘जे...से’

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘जे’सँ उल्लिखित वस्तु/व्यक्ति आ ‘से’सँ ओकर उत्तरवर्ती सन्दर्भ जुड़ैत अछि। दूनू उपवाक्यक कारक स्पष्ट राखू।

नियम ७३ — ‘जखन...तखन’

मूल नियमक प्रतिपादन — कालसम्बन्ध देखेबाक मानक जोड़ी—‘जखन ओ आयत, तखन हम गप करब।’ हिन्दी ‘जब...तब’ सामान्य नव गद्यक प्राथमिकता नहि।

नियम ७४ — ‘जँ...तँ’

मूल नियमक प्रतिपादन — शर्त-फल—‘जँ ओ आयत, तँ हम बात करब।’
‘अगर...तो’क बाहरी ढाँचा बिना कारण नहि उपयोग करू।

नियम ७५ — प्रश्नवाचक शब्द

मूल नियमक प्रतिपादन — कोना—प्रकार; किएक—कारण; कतेक—मात्रा; कहिया—समय; कतय—स्थान; के—व्यक्ति; की—वस्तु वा प्रश्न। हिनकर कार्यक भेद स्पष्ट राखू।

नियम ७६ — निर्धारक पद

मूल नियमक प्रतिपादन — संकेत, अधिकार, संख्या, मात्रा आ अनिश्चितताक पद संज्ञाक संग मैथिलीक स्वाभाविक क्रममे रहय। अंग्रेजी पदक्रमक नकल नहि।

नियम ७७ — विशेषणक गठन

मूल नियमक प्रतिपादन — विशेषण अथवा सम्बन्धसूचक ‘-क’क बीच अर्थानुसार चयन करू। अनावश्यक हिन्दी-ढाँचाक व्युत्पन्न विशेषण बनाउ नहि।

नियम ७८ — ‘साँझक’

मूल नियमक प्रतिपादन — अनिवार्य: ‘साँझक समय’, ‘साँझक इजोत’; सामान्य मानक गद्यमे ‘साँझिक’ नहि।

नियम ७९ — तुलनाक रचना

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘ओकरासँ पैघ’, ‘एकरसँ नीक’ जकाँ ‘सँ’ आ मात्रासूचक पदक स्वाभाविक प्रयोग करू; बाहरी भाषाक ‘ज्यादा’ ढाँचा जबरन नहि।

नियम ८० — क्रियाविशेषणक स्थान

मूल नियमक प्रतिपादन — काल, स्थान, रीति, आवृत्ति आ परिमाणक शब्द वाक्यक आशय-जोर अनुसार रहय। अकारण आरम्भ वा अन्तमे ठेलि नहि दिअ।

नियम ८१ — कालसूचक प्राथमिक शब्द

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘आइ’, ‘एखन’, ‘आब’, ‘जखन’, ‘तखन’, ‘फेर’ स्वाभाविक रूप अछि। ‘आज, अभी, अब, जब, तब’ नहि अपनाउ, जँ स्रोत-उद्धरणक प्रश्न नहि हो।

नियम ८२ — ‘आ’ बनाम ‘आरो’

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘आ’ सामान्य जोड़; ‘आरो’ अधिकता अथवा अतिरिक्त अर्थ। ‘आ’क सभ स्थानपर ‘आरो’ नहि।

नियम ८३ — ‘मुदा’

मूल नियमक प्रतिपादन — विरोध, अपवाद वा कथनक मोड़ लेल ‘मुदा’ विदेहक प्राथमिक रूप। हिन्दी ‘लेकिन’ हटाउ, मुदा ‘मुदा’ सेहो अकारण दोहराउ नहि।

नियम ८४ — विकल्पक शब्द

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘वा’, ‘अथवा’, ‘कि’, ‘आकि’ प्रसंग, औपचारिकता आ प्रश्नक प्रकृति अनुसार; विकल्प आ उद्धरण-सूचक ‘कि’मे भेद राखू।

नियम ८५ — बलाघातक अव्यय

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘तऽ/तँ’, ‘सेहो’, ‘मात्र’, ‘केवल’ ककरापर जोर दैत अछि, से देखू। शब्दक स्थान बदललापर अर्थक व्याप्ति बदलि सकैत अछि।

नियम ८६ — अर्थ-व्याप्तिक परीक्षा

मूल नियमक प्रतिपादन — नकार, परिमाण, शर्त आ बलाघात एक-दोसरापर लागू भऽ सकैत अछि। सम्पादनमे केवल व्याकरण नहि, कथ्यक सत्य-मूल्य सुरक्षित राखू। चारिम भाग

नियम ८७-२०० : रूप-विज्ञान, वाक्य, शब्दार्थ

नियम ८७ — क्रियासँ वाक्यक जाँच

मूल नियमक प्रतिपादन — सम्पादनमे सभ उपवाक्यक मुख्य रूपान्तरित क्रिया चिन्हू। जाँ भाववाचक संज्ञाक शृङ्खला अछि, मुदा काजक क्रिया अस्पष्ट अछि, वाक्य फेर रचू।

नियम ८८ — सकर्मक-अकर्मक भेद

मूल नियमक प्रतिपादन — क्रिया सकर्मक, अकर्मक, अनुभववाचक वा दू कर्म लेनिहार अछि कि नहि, पहिने बुझू। कारकक निर्णय केवल हिन्दी वा अंग्रेजी वाक्य देखि नहि करू।

नियम ८९ — काल, पक्ष आ भावक भेद

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘घटना कहिया?’ काल; ‘चलि रहल कि पूरा भेल?’ पक्ष; ‘इच्छा, सम्भावना, आदेश कि शर्त?’ भाव। एकहि क्रियारूपक निर्णयमे तीनू परीक्षण आवश्यक अछि।

नियम ९० — ‘दैत’ आ ‘दैत’

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘दैत’ भविष्यक रूप—‘ओ पोथी दैत’। ‘दैत’ वर्तमान-आवृत्ति/कृदन्त—‘ओ पोथी दैत अछि’। दुनू वर्तनी-विकल्प नहि; समय आ पक्षक भिन्नता अछि। प्रसंग अनुसार पुरुष आ आदरस्तरक रूप मिलाउ।

नियम ९१ — ‘इत/-ऐत’क आवृत्तिपरक प्रयोग

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘करैत’, ‘होइत’, ‘बजैत’ आदिक अर्थसँ क्रियाक आवृत्ति वा अपूर्णता स्पष्ट होअय। गद्य सजाबय लेल अकारण नहि जोड़ू।

नियम ९१क — कृत्रिम ‘बैत’ रूपसँ बचू

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘देबैत’, ‘लेबैत’, ‘करबैत’, ‘कहबैत’ जकाँ मूल क्रियामे अनावश्यक ‘-ब’ जोड़ि बनाओल रूप कृत्रिम अछि; स्वाभाविक रूप क्रमसँ ‘दैत’, ‘लैत’, ‘करैत’, ‘कहैत’ अछि। ‘बैत’ मात्र वास्तविक प्रेरणार्थक अर्थमे

—‘देखाबैत’, ‘बनाबैत’—उपयुक्त; अर्थ जाँचि कऽ चुनू। ‘देत’ (भविष्य) आ ‘दैत’ (आवृत्ति)क भेद नियम १०मे अछि; मूल उद्धरणक रूप नहि बदलू।

नियम १२ — ‘रहल’क सावधानी

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘ओ पढ़ि रहल अछि’ जकाँ निरन्तर चलैत काजक ठाम ‘रहल’ सम्भव। अंग्रेजीक सभ अपूर्ण क्रियाकेँ बलपूर्वक ‘रहल’ नहि बनाउ; प्रसंगमे सरल रूप नीक भऽ सकैत अछि।

नियम १३ — भूतकालक कथन

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘आएल/आयल’, ‘गेल’, ‘भेल’, ‘कहलक’, ‘देलक’ जकाँ भूतकालक घटनारूप कथाकेँ आगाँ बढ़बैत अछि। आएल आ आयल दुनू मान्य; लेखक सम्पूर्ण रचनामे अपन चुन्नल रूपक एकरूपता राखथि। मूल स्रोतक रूप बदलब नहि।

नियम १४ — भविष्यकाल

मूल नियमक प्रतिपादन — व्यक्ति, आदर आ सम्भावना अनुसार उचित भविष्यरूप राखू। ‘होयत’, ‘होएत’, ‘हएत’ तीनू मान्य लेखकीय रूप; एक रचनाक लेखकीय स्वरमे चयन स्थिर राखू। हिन्दी ‘होगा/कर देगा’क सहायक संरचना यथावत् मैथिलीमे नहि।

नियम १५ — असमापिका क्रियाक भेद

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘बाक’, ‘ब’, ‘-ऽ’, ‘-य’ आदि विभिन्न काम करैत अछि। संज्ञार्थक क्रिया, उद्देश्य आ ‘लागल’क पूरक क्रियाकेँ एकरूप नहि बनाउ।

नियम १६ — ‘लागल’क आरम्भसूचक रचना

मूल नियमक प्रतिपादन — आरम्भबोधक ‘लागल’ संग प्राकृतिक क्रियापूरक राखू—‘ओ घुरऽ लागल’; ‘साँझक समय अन्हार खसय लागल’। ‘घुरबऽ लगल’, ‘अन्हार खसबाक लगल’ मानक रूप नहि। ‘घुरबाक कारण’ जकाँ नामधर्मी प्रयोगमे -बाक अलग काज करैत अछि।

नियम ९७ — ‘-बाक’क सही स्थान

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘पढ़बाक लेल’, ‘घुरबाक इच्छा’, ‘खसबाक कारण’मे संज्ञार्थक ‘-बाक’ उचित अछि। आरम्भसूचक ‘लागल’क संग अलग चयन करब पडैत अछि।

नियम ९८ — ‘लागल’ आ ‘लगैत’

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘लागल’ घटना शुरू होएब वा लगबाक भूत सन्दर्भ; ‘लगैत’ वर्तमान/आवृत्तिक भिन्न रूप। एकरा समानार्थी नहि बुझू।

नियम ९९ — ‘घुर-’ आ ‘आपस’

मूल नियमक प्रतिपादन — व्यक्ति वा वस्तुक पुनरागमनमे ‘घुरल’, ‘घुरि आयल’ आदिक जाँच करू; ‘आपस’ अलग सम्बन्धसूचक वा प्रसंगानुसार अर्थ राखैत अछि। हिन्दी ‘वापस’क अन्ध प्रतिस्थापन नहि।

नियम १०० — ‘कऽ’सँ क्रियाक क्रम

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘पोथी पढ़ि कऽ ओ लिखलक’ जकाँ पूर्वकाज आ मुख्य काजक सम्बन्ध स्पष्ट राखू। बहुतेक ‘कऽ’ जोड़ि घटना-क्रमकेँ अस्पष्ट नहि करू।

नियम १०१ — ‘भऽ’क प्रयोग

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘भऽ’ परिवर्तन, अवस्था-प्राप्ति आ किछु संयुक्त क्रियाक रूपमे; आशय जाँ ठोस घटना अछि तँ अनावश्यक ‘भऽ’क ठाम उचित क्रिया चुनू।

नियम १०२ — प्रेरणार्थक क्रिया

मूल नियमक प्रतिपादन — कियो दोसराक हाथे काज करबेलक कि स्वयं कएलक, से स्पष्ट करू। प्रेरणार्थक प्रत्यय कारक-सम्बन्ध बदलैत अछि।

नियम १०३ — संयुक्त आ हलुक क्रिया

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘देखि लेलक’, ‘कहि देलक’ जकाँ हलुक क्रिया काजक पूर्णता वा दृष्टिकोण बदलैत अछि। हिन्दी क्रियारूपक अनुकरणमे निरर्थक ‘देलक/लेलक’ नहि जोड़ू।

नियम १०४ — सम्भावना आ बाध्यता

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘सकैत’, ‘पड़त’, ‘चाही’, ‘हएत’ आदिक कार्य सम्भावना, कर्तव्य, अनुमान, आशा वा बाध्यताक हिसाबसँ अलग अछि। अर्थ-परीक्षा आवश्यक।

नियम १०५ — नकारक मानक

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘नहि’ आ ‘नै’ दुनू मैथिली नकारक मान्य रूप अछि। लेखक अपन गद्यक एकहि स्वरमे जे रूप चुनथि, तकर एकरूपता राखथि; संवाद, पात्रभाषा, लोकगीत आ मूल उद्धरण स्वतंत्र रहत। ‘ने’क पृथक अर्थ आ प्रयोगक जाँच करू।

नियम १०६ — ‘ने’क अलग काम

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘ने’ आग्रह, पुष्टि माँगनिहार प्रश्न, बलाघात वा मुहावरामे आबि सकैत अछि; सामान्य ‘नहि’क सभ स्थानपर ‘ने’ नहि।

नियम १०७ — नकारक व्याप्ति

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘ओ सभ पोथी नहि पढ़लक’ आ ‘ओ एकोटा पोथी नहि पढ़लक’क आशय भिन्न भऽ सकैत अछि। ‘नहि’ ककरा नकारैत अछि से जाँचू।

नियम १०८ — निषेधवाचक आदेश

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘ई काज नहि करू’ जकाँ सम्बोधन आ परिस्थिति अनुसार स्पष्ट निषेध राखू; हिन्दी ‘मत’क ढाँचा स्वतः नहि उतारू।

नियम १०९ — प्रश्नवाक्य

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रश्नक स्वर, अपेक्षित उत्तर आ वास्तविक उद्देश्य अनुसार वाक्य रचू। प्रत्येक अंग्रेजी सहायक क्रियाक बदला 'की' लगेनाइ जरूरी नहि।

नियम ११० — हाँ/नहि प्रकारक प्रश्न

मूल नियमक प्रतिपादन — 'अहाँ आइ आयब?' आ 'की अहाँ आइ आयब?' प्रसंगानुसार सम्भव; प्रश्नसूचक चिह्न आ लय स्पष्ट हो।

नियम १११ — सूचनामूलक प्रश्न

मूल नियमक प्रतिपादन — 'कहिया', 'कतय', 'ककरा', 'किएक', 'कोना', 'कतेक' सही अर्थ-कारकक ठाम राखू।

नियम ११२ — आदेश, निवेदन आ परामर्श

मूल नियमक प्रतिपादन — व्यक्ति आ सामाजिक दूरी अनुरूप क्रियारूप — 'आउ', 'बैसू', 'देखू', 'करू' आदि—अपनाउ। आदेशक कठोरता आ अनुरोधक विनम्रता एक समान नहि।

नियम ११३ — प्रत्यक्ष आ परोक्ष कथन

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रत्यक्ष वाक्य उद्धरणचिह्नमे, परोक्ष कथन अर्थरक्षा करैत स्वाभाविक उपवाक्यमे; वक्ता आ कथावाचकक दायित्व अलग राखू।

नियम ११४ — पूरक उपवाक्य

मूल नियमक प्रतिपादन — 'ओ कहलनि जे...' जकाँ कथन, ज्ञान, विश्वास आ चाहनाक क्रियाक संग उपवाक्यक अर्थ जाँचू। अंग्रेजीक सम्बन्धसूचक अव्ययक यान्त्रिक रूपान्तर नहि।

नियम ११५ — सम्बन्धवाचक उपवाक्य

मूल नियमक प्रतिपादन — 'जे...से' वा अर्थानुकूल संयुक्त वाक्य अपनाउ; लम्ब अंग्रेजीक सम्बन्धवाचक शृङ्खलाकेँ साँचे नहि उतारू।

नियम ११६ — कालसम्बन्धी उपवाक्य

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘जखन...तखन’, ‘तकर बाद’, ‘जाबत...ताबत’
अर्थानुसार; घटनाक वास्तविक क्रम सुरक्षित।

नियम ११७ — शर्तवाचक उपवाक्य

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘जँ...तँ’ प्रतिज्ञा, परिकल्पना वा शर्त स्पष्ट करैत
अछि। शर्तक अर्थकें निश्चित ऐतिहासिक तथ्य नहि बनाउ।

नियम ११८ — कारणवाचक उपवाक्य

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘किएक तँ’, ‘एहि कारणेँ’, ‘जाहिसँ’ जकाँ निर्माणमे
कारण, उद्देश्य आ फल अलग राखू।

नियम ११९ — उद्देश्यवाचक सम्बन्ध

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘पढबाक लेल’, ‘जाहिसँ ओ बुझि सकय’ जकाँ रूप
उद्देश्य बतबैत अछि। घटना-फलकें उद्देश्यक रूपमे नहि बदलू।

नियम १२० — रियायत आ विरोध

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘यद्यपि’, ‘तथापि’, ‘मुदा’ जकाँ भेद रियायत, विरोध
आ अपवाद अनुसार चुनू; सभठाम एक शब्द नहि।

नियम १२१ — वाच्य

मूल नियमक प्रतिपादन — कर्ता स्पष्ट अछि तँ सकर्मक/कर्तृवाच्य प्रायः नीक;
कर्मवाच्य जँ विषय वा अज्ञात कर्ताकें प्रधानता दे तँ उचित। अंग्रेजी निष्क्रिय
वाच्यक अन्धा अनुवाद नहि।

नियम १२२ — सूचना-क्रम

मूल नियमक प्रतिपादन — ज्ञात बातसँ नव जानकारी दिस वाक्य चलय। कर्ता,
कर्म, समयक स्थानमे फेरबदलसँ अर्थक जोर बदलैत अछि।

नियम १२३ — द्व्यर्थताक जाँच

मूल नियमक प्रतिपादन — सर्वनामक सन्दर्भ, कारक, वाक्यक फाँक, नकार आ विराम पट्टिकऽ जाँचू। दुई अर्थ सम्भव आ अनिच्छित अछि तँ फेर लिखू।

नियम १२४ — समापिका क्रियाक प्रवाह

मूल नियमक प्रतिपादन — लम्ब अनुच्छेदमे घटनावाचक क्रिया जेतय जरूरी, ओतय स्पष्ट रह्य। नामधातु आ संस्कृत भावसंज्ञाक ढेर लेखनकेँ जड़ बना सकैत अछि। पाँचम भाग

नियम १२५ — मूल शब्दक्रम

मूल नियमक प्रतिपादन — सामान्यतया कर्ता-पूरक-क्रियाक प्रवाह; बलाघात, संवाद आ काव्यात्मकता अनुसार परिवर्तन मान्य। बाहरी भाषाक क्रम बिना कारण नहि।

नियम १२६ — क्रियाकेँ सक्रिय बनाउ

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘निर्णय कएल गेल’क स्थानपर, जखन कर्ता ज्ञात, ‘समितिने निर्णय कएलक’ अधिक स्पष्ट। प्रमाण अज्ञात अछि तँ कर्ता कल्पित नहि करू।

नियम १२७ — सजावटसँ पहिने उपवाक्य

मूल नियमक प्रतिपादन — लम्ब विशेषण, सम्बन्धसूचक आ परसर्गक ढेर लगाएबासँ पहिने ‘के की करैत अछि’ साफ करू।

नियम १२८ — वाक्यक लम्बाइ

मूल नियमक प्रतिपादन — शब्दसुधारसँ पहिने अर्थ, वाक्यक्रम आ दृश्य-क्रम जाँचू। ‘देत’केँ ‘दैत’ करब वर्तनी नहि, काल-पक्ष परिवर्तन अछि; वाक्यक छिपल अर्थ नहि बदली।

नियम १२९ — लम्ब वाक्यक छओ परीक्षण

मूल नियमक प्रतिपादन — मुख्य क्रिया, कर्ता, पूरक, आश्रित उपवाक्य, जोड़-सम्बन्ध आ सर्वनामक सन्दर्भ—छओ स्पष्ट अछि कि नहि, देखू। अस्पष्टतापर वाक्य बाँटू।

नियम १३० — समानान्तर वाक्यरचना

मूल नियमक प्रतिपादन — एकहि सूचीमे संज्ञा, क्रिया वा उपवाक्यक मिलनसार रूप राखू; पाठककें तुलना सहज हो।

नियम १३१ — झूठ समानान्तरता

मूल नियमक प्रतिपादन — भिन्न अर्थवला पद मात्र बाहरी रूप समान होएबाक कारण एक सूचीमे समकक्ष नहि बनाउ।

सम्पादकीय परीक्षण — तुलनात्मक प्रतिपादनमे समानता आ भिन्नताक दून पक्ष व्यवस्थित प्रमाणसहित राखल जाए। प्रमाण-प्राप्त क्षेत्र आ अप्राप्त क्षेत्रक सीमा स्पष्ट करब वैज्ञानिक निष्ठाक आधार अछि। एकर प्रयोगमे उद्धृत मूल पाठ आ नव लेखकीय गद्यक अधिकार-सीमा पृथक राखल जाए।

नियम १३२ — विषय आ केन्द्रीय जोर

मूल नियमक प्रतिपादन — अनुच्छेदक मुख्य विषय आ ओकर बारेमे नव कथन अलग पहचानू; महत्त्वपूर्ण सूचना अनावश्यक गौण उपवाक्यमे नहि दबाउ।

नियम १३३ — समय-स्थानक आधार

मूल नियमक प्रतिपादन — दृश्य वा तर्कक शुरुआतमे आवश्यक समय-स्थान दियौ; प्रत्येक वाक्यमे उहे स्थान फेर लिखब बोझिल अछि।

नियम १३४ — सर्वनामक संयम

मूल नियमक प्रतिपादन — नामक बारम्बार प्रयोग टारबाक लेल सर्वनाम उपयोग करू, मुदा दू सम्भावित पात्र हो तँ नाम दोहरा कऽ अस्पष्टता हटाउ।

नियम १३५ — सन्दर्भक स्पष्टता

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘ओ’ ककरा लेल, ‘ई’ कोन बात लेल, ‘तकर बाद’ कोन घटनाक बाद—हरदम सन्दर्भ निश्चित रहय।

नियम १३६ — पुनरावृत्तिक कला

मूल नियमक प्रतिपादन — लोकगीत, लय, चरित्र वा तर्कक बलाघात लेल पुनरावृत्ति ठीक; सम्पादकीय गद्यमे अर्थबिना पुनरावृत्ति काटू।

नियम १३७ — पर्याय प्रदर्शन नहि

मूल नियमक प्रतिपादन — एक पद साफ अछि तँ केवल विद्वत्ता देखेबाक लेल ओकर पर्याय पर पर्याय नहि भरू। प्रामाणिक तकनीकी पदक पुनरावृत्ति कखनो आवश्यक अछि।

नियम १३८ — वाक्य-वाक्यक जोड़

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘एहि कारणेँ’, ‘मुदा’, ‘तकर बाद’, ‘फेर’ आदि अर्थसम्बन्धक लेल प्रयोग करू; अस्पष्ट जोड़ अनावश्यक।

नियम १३९ — अनुच्छेदक एकता

मूल नियमक प्रतिपादन — एक अनुच्छेदमे एक प्रधान तर्क, दृश्य वा घटनाक धुरी रहय। बिनु संकेत विषय बदललासँ नव अनुच्छेद शुरू करू।

नियम १४० — मुख्य कथनवला वाक्य

मूल नियमक प्रतिपादन — विश्लेषणात्मक अनुच्छेदमे आरम्भ अथवा प्रसंगानुकूल ठाम प्रधान दावा स्पष्ट हो; साहित्यिक वर्णनमे ई संरचना लचीली।

नियम १४१ — अनुच्छेदक प्रगति

मूल नियमक प्रतिपादन — दावा, प्रमाण, व्याख्या आ परिणामक सम्बन्ध पाठककै क्रमसँ भेटय। उहे वाक्य नव शब्दमे फेर नहि।

नियम १४२ — संक्रमण

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘पहिने’, ‘दोसर’, ‘एहि विपरीत’, ‘तकर बाद’ जकाँ संक्रमण अर्थक वास्तविक मोड़ देखाबय, मात्र सजावट नहि।

नियम १४३ — अनावश्यक दोहराव

मूल नियमक प्रतिपादन — एकहि बात दू-तीन शब्दसमूहमे दोहराओल हो तँ सभसँ स्पष्ट रूप बचाउ, जँ पुनरावृत्ति शिल्पगत नहि।

नियम १४४ — दफ्तरिया भरावट

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘एहि तथ्यक आलोकमे ई कहब आवश्यक अछि जे’ जकाँ लम्ब प्रस्तावना बदला सीधा दावा लिखू, जँ सन्दर्भ अनुमति दैत हो।

नियम १४५ — कर्तृवाच्य आ कर्मवाच्य

मूल नियमक प्रतिपादन — कर्ताक दायित्व महत्त्वपूर्ण अछि तँ कर्ता सोझाँ आनू; कर्ता अज्ञात वा गौण अछि तँ कर्मवाच्य रखल जा सकैत अछि।

नियम १४६ — भावसंज्ञाक अतिरेक

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘क्रियान्वयनक सम्पन्नता’ जकाँ रूपक अपेक्षा ‘काज पूरा भेल’ प्रायः सहज। शास्त्रीय विवेचनक आवश्यक संज्ञा अवश्य सुरक्षित।

नियम १४७ — कोष्ठकक बोझ

मूल नियमक प्रतिपादन — एके वाक्यमे अनेक कोष्ठक, तिर्यकरेखा आ टिप्पणीक बदला स्पष्टीकरण अलग वाक्यमे दियौ।

नियम १४८ — उदाहरण

मूल नियमक प्रतिपादन — उदाहरण वास्तविक नियम देखाबय; मनगढ़न्त ऐतिहासिक तथ्य वा पात्रक कथन उदाहरणक नामपर नहि जोड़।

नियम १४९ — परिभाषा

मूल नियमक प्रतिपादन — शब्दकोश वा शास्त्रीय लेखनमे वर्ग, विभेदक लक्षण आ उपयोग-सीमा सहित परिभाषा दियौ। एक पर्याय शब्द पूर्ण परिभाषा नहि।

नियम १५० — विरोधी उदाहरणसँ शिक्षा

मूल नियमक प्रतिपादन — सही-गलत जोड़ी दैत समय अर्थक भेद स्पष्ट करू; जँ दूनू रूप अलग प्रसंगमे मान्य, तखन 'अनुपयुक्त प्रसंग' लिखू, सार्वत्रिक निषेध नहि।

नियम १५१ — अनेकार्थताक समाधान

मूल नियमक प्रतिपादन — एकहि शब्दक दू सम्भव अर्थ हो तँ प्रसंग, कारक आ सहप्रयोगसँ मनचाहा अर्थ स्पष्ट करू।

नियम १५२ — स्वाभाविक लय

मूल नियमक प्रतिपादन — पूरा वाक्य उच्चारित करिकऽ देखू—केवल शब्द सही अछि कि मैथिली जकाँ बजैत अछि? अस्पष्ट लागय तँ फेर रचू।

नियम १५३ — संक्षिप्तताक परीक्षा

मूल नियमक प्रतिपादन — जे शब्द हटेलासँ आशय, लय अथवा प्रमाण नहि घटैत अछि, ओकरा हटेबाक विचार करू; साहित्यिक स्वरक विशेष पुनरावृत्ति नहि काटू।

नियम १५४ — भाषिक स्तरक स्थिरता

मूल नियमक प्रतिपादन — शोधगद्यक औपचारिकता आ पात्रक बोली बिनु उद्देश्य बीचमे नहि बदलय।

नियम १५५ — सामाजिक सम्बन्धक निरन्तरता

मूल नियमक प्रतिपादन — उमिर, सम्बन्ध, दूरी आ सम्मान अनुसार सम्बोधन बदलैत अछि; कथा बीचमे परिवर्तन भेलासँ कारण पाठमे स्पष्ट हो।

नियम १५६ — कालक निरन्तरता

मूल नियमक प्रतिपादन — मुख्य वर्णनक काल एकरूप राखू, स्मृति अथवा पूर्वघटना शुरू भेलापर संक्रमण चिह्नित करू।

नियम १५७ — पक्षक निरन्तरता

मूल नियमक प्रतिपादन — आवृत्तिपरक घटना आ एकबारगी सम्पन्न घटना मिश्रित भेलासँ पाठक भ्रमित भऽ सकैत अछि; 'दैत/देलक/देत'क भेद देखू।

नियम १५८ — शब्दरूपक निरन्तरता

मूल नियमक प्रतिपादन — एकहि अर्थमे स्वीकृत एक रूप अपनाउ; क्षेत्रीय पात्रक अलग रूप उद्धरणसहित सम्भव।

नियम १५९ — वर्तनीक निरन्तरता

मूल नियमक प्रतिपादन — मात्रा, चन्द्रबिन्दु, संयुक्ताक्षर, 'ड/ढ' आ विरामचिह्न समूचा पाण्डुलिपिमे जाँचू।

नियम १६० — विरामचिह्नक व्याकरणिक भूमिका

मूल नियमक प्रतिपादन — विराम अर्थक सम्बन्ध स्पष्ट करबाक लेल हो, सजावट लेल नहि; भ्रामक वाक्य केवल अल्पविराम जोड़ि ठीक नहि होइत।
छठम भाग

नियम १६१ — शब्दार्थ एक पर्याय नहि

मूल नियमक प्रतिपादन — शब्दक अर्थ प्रसंग, प्रयोग, मुहावरा आ सामाजिक स्थितिसँ खुलैत अछि। कोशक पहिल पर्याय लऽ प्रत्येक सन्दर्भमे नहि लगाउ।

नियम १६२ — शब्द + व्याकरण + प्रसंग

मूल नियमक प्रतिपादन — 'कियो'क अर्थ अकेले देखलासँ ओकर कर्ता-कारक बुझल नहि जाए; व्याकरण आ वाक्यक प्रसंग संग देखू।

नियम १६३ — अर्थगत भूमिका

मूल नियमक प्रतिपादन — कर्ता, भोगकर्ता, प्राप्तकर्ता, साधन, स्रोत, लक्ष्य, स्थान आ अधिकार-सम्बन्ध अलग चिन्हू; कारक-सम्पादन एहि आधारपर हो।

नियम १६४ — शब्दसहप्रयोग

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘गप करब’, ‘पानि खसब’, ‘सोझाँ ठाढ़’, ‘निर्णय लेब’ जकाँ प्रामाणिक सहप्रयोग जाँचू। शब्द पृथक् रूप सही भऽ कऽ सेहो संगतिहीन भऽ सकैत अछि।

नियम १६५ — पर्यायवाची शब्द

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘काज’ आ ‘काम’ हर प्रसंगमे एके रङ्ग नहि; अर्थ, क्षेत्र, व्यक्तिस्वर आ स्वीकृत प्राथमिकता मिलाउ।

नियम १६६ — विलोम

मूल नियमक प्रतिपादन — कथित विलोम वास्तविक अर्थ-क्षेत्रक हो; सामान्य ‘अभाव’ सदिखन शब्दकोशीय विलोम नहि।

नियम १६७ — अनेकार्थक शब्द

मूल नियमक प्रतिपादन — एक रूपक अनेक सम्बन्धित अर्थ एके प्रविष्टिमे उपार्थक क्रमसँ दिअ; प्रत्येक अर्थक स्वतन्त्र उदाहरण राखू।

नियम १६८ — समरूप भिन्नार्थक शब्द

मूल नियमक प्रतिपादन — उच्चारण वा वर्तनी समान मुदा अर्थ-इतिहास अलग हो तँ कोशमे अलग पहिचानपर विचार करू।

नियम १६९ — मुहावरा

मूल नियमक प्रतिपादन — मुहावराक अर्थ तकर अङ्गसभक शब्दार्थ जोड़ि नहि निकलैत; सन्दर्भसहित प्रयोग आ सामाजिक भाव राखू।

नियम १७० — लोकोक्ति

मूल नियमक प्रतिपादन — लोकोक्तिक पाँति, अर्थ, अवसर आ क्षेत्रीय रूप जाँचि लिखू; लोककथ्यकें वैज्ञानिक सत्यक रूप नहि देल जाए।

नियम १७१ — शब्द-निर्माण

मूल नियमक प्रतिपादन — उपसर्ग, प्रत्यय, संयोग आ तद्भव परिवर्तनसँ बनल रूपक अर्थ सहज अछि कि नहि, देखू; अनावश्यक नव संस्कृतनिष्ठ शब्द नहि गढ़ू।

नियम १७२ — नव पारिभाषिक शब्द

मूल नियमक प्रतिपादन — पहिने स्थापित मैथिली कोश आ विषयगत व्यवहार देखू; आवश्यक भेलासँ अर्थ स्पष्ट करऽवला पद बनाउ; उच्चारण, रूप-निर्माण आ अर्थ-संघर्ष जाँचि स्थिर रूप अपनाउ।

नियम १७३ — आगन्तुक शब्द

मूल नियमक प्रतिपादन — उधार लेल शब्द मैथिली व्याकरणमे स्वाभाविक भऽ गेल तँ केवल उद्गम देखिकऽ नहि निकालू; अर्थसटीकता प्राथमिक।

नियम १७४ — रोमन नामक प्रथम उल्लेख

मूल नियमक प्रतिपादन — वैज्ञानिक वा ऐतिहासिक पहचान लेल मूल रोमन रूप पहिल बेर कोष्ठकमे राखल जा सकैत अछि; बाकी सामान्य गद्य मैथिली लिपिमे।

नियम १७५ — मिश्रभाषी वाक्य

मूल नियमक प्रतिपादन — कथाक पात्र वा सन्दर्भमे अर्थपूर्ण भाषामिश्रण सम्भव; नव मानक सम्पादकीय गद्यमे आवश्यकता बिना भाषा-बदलाव नहि।

नियम १७६ — हिन्दीक चारि प्रकारक प्रभाव

मूल नियमक प्रतिपादन — असंगत शब्द, हिन्दी कारक/वाक्य-क्रम, हिन्दी क्रियारचना आ हिन्दी मुहावराक नकल अलग-अलग पहचानू; केवल शब्द बदलल पर्याप्त नहि।

नियम १७७ — अंग्रेजीक चारि प्रकारक प्रभाव

मूल नियमक प्रतिपादन — अनावश्यक उधार शब्द, शब्दशः मुहावरा, निष्क्रिय क्रियाक ढेर आ लम्ब सम्बन्धवाचक ढाँचा देखू; प्राकृतिक मैथिली वाक्य फेर बनाउ।

नियम १७८ — अतिसंस्कृतीकरण

मूल नियमक प्रतिपादन — सामान्य अनुभव व्यक्त करबाक लेल दुरूह तत्सम पदक प्रयोग भाषा-शुद्धि नहि; सुबोध मैथिली प्रधान।

नियम १७९ — साझा तत्सम शब्द

मूल नियमक प्रतिपादन — जँ संस्कृतसँ आयल पद मैथिलीमे स्थापित अछि आ अर्थसटीक अछि तँ निषिद्ध नहि; समस्या उपयोगक बनावटमे अछि।

नियम १८० — मिथिलाक सांस्कृतिक शब्द

मूल नियमक प्रतिपादन — पावनि, भोजन, पहनावा, लोककला, जल-भूमि आ जातीय व्यवसायसँ जुड़ल विशिष्ट शब्दक अलग अर्थ बचाउ।

नियम १८१ — क्षेत्रीय रूपक मान्यता

मूल नियमक प्रतिपादन — दरभंगा, मधुबनी, जनकपुर, अङ्ग-सीमा वा बज्जिका-समीपक बोलीक रूप स्रोत-निष्ठा सहित दर्ज करू; बिना प्रसंग सामान्य मानक नहि बनाउ।

नियम १८२ — पुरान शब्द

मूल नियमक प्रतिपादन — इतिहास, लोकगीत आ प्राचीन कृतिमे पुरान शब्द मूल रूपमे रहय; आजुक शोधगद्यमे आवश्यक भेलासँ अर्थ-टिप्पणी दियौ।

नियम १८३ — औपचारिक आ बोलचालक दूरी

मूल नियमक प्रतिपादन — 'नहि' आ 'नै', सम्मानसूचक आ स्थानीय वाक्यलय पात्र-सन्दर्भ अनुसार; स्वर-बदलाव सचेत हो।

नियम १८४ — हिन्दी-प्रभाव जाँचबाक शब्दसूची

मूल नियमक प्रतिपादन — सामान्य नव गद्यमे 'पानि', 'केवाड़ी', 'ओसारा', 'अएना', 'चाह', 'कोठली', 'आइ', 'एखन', 'मुदा', 'कोना', 'सोझाँ', 'घुरब' आदि अर्थानुकूल जाँचू। शीर्षक, उद्धरण आ पात्रक बोलीमे पुरान मूल रूप सुरक्षित रखू।

नियम १८५ — अन्ध प्रतिस्थापनसँ बचाव

मूल नियमक प्रतिपादन — 'काम'क सभ प्रयोग 'काज' नहि; 'डाँट' वनस्पतिक डाँट हो सकैत अछि, फटकारक अर्थमे 'झार' उचित। अर्थ देखिकऽ बदलू।

नियम १८६ — अनिवार्य शब्दसुधारक मूल समूह

मूल नियमक प्रतिपादन — नव सामान्य विदेह गद्यमे 'पानि', 'इनार', 'हेरायल', 'औँठा', 'तरहड़ि', 'बिलायल', 'बिसरल', 'केवाड़ी', 'ओसारा', 'अएना', 'पित्तरि', 'चाह', 'कोठली', 'बेराबेरी' स्वीकृत रूप अछि। सम्बन्धित अर्थ नहि हो तँ अन्ध-प्रतिस्थापन नहि।

नियम १८७ — 'काज'

मूल नियमक प्रतिपादन — सामान्य मानक लेखनमे कार्यक अर्थ लेल 'काज' प्राथमिक; पेशा, वैज्ञानिक पारिभाषा वा स्रोत-रूपमे 'काम'को अलग प्रसंग सम्भव।

नियम १८८ — 'माथ'

मूल नियमक प्रतिपादन — शरीरक सिर आ किछु स्थापित मुहावराक सन्दर्भमे 'माथ' प्राथमिक; अन्य अर्थक 'शीर्ष' जकाँ शास्त्रीय पदक आवश्यकतापर राखू।

नियम १८९ — 'सोझाँ'

मूल नियमक प्रतिपादन — 'ओ हमर सोझाँ ठाढ़ अछि' स्वाभाविक; 'सामने' सामान्य नव गद्यमे बदलू, मुदा उद्धरण नहि फेरू।

नियम १९० — ‘छूलनि’

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘छूलनि’ सम्मानित व्यक्तिक क्रियाक प्रसंगमे स्वीकृत प्रयोग अछि; तथापि क्रियारूप कर्ता, कर्म, आदर आ स्थानीय व्याकरणक संगहि चुनू। एकटा रूपकें सभ पुरुषपर समान रूपसँ लागू नहि करू।

नियम १९१ — ‘डॉट’ आ ‘झार’

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘डॉट’क एक अर्थ वनस्पतिक डॉट/डंठल अछि; डॉटब वा झिड़की देबक अर्थमे ‘झार’ मानक शब्द। ध्वन्यात्मक ‘ड’ आ नुक्तायुक्त ‘ड़’कें केवल देखावटी बदलावक कारण नहि मिलाउ।

नियम १९२ — अन्हारक खसबाक रचना

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘साँझक समय अन्हार खसय लागल’ आरम्भवाचक; ‘अन्हार खसबाक कारण’ संज्ञार्थक। ‘अन्हार खसबाक लगल’ नहि।

नियम १९३ — ‘टूटल भीतक’

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘टूटल भीतक...’ जकाँ सम्बन्ध-प्रयोगमे ‘भीत’क अर्थ देवाल/भीत। बिनु प्रमाण ओकरा ‘दीवार’क हिन्दी रूपसँ नहि बदलू।

नियम १९४ — ‘बेराबेरी’

मूल नियमक प्रतिपादन — पालापाली वा एक-एक बेर क्रमसँ होएबक अर्थमे ‘बेराबेरी’ प्राथमिक; हिन्दी ‘बारी-बारी’ नहि।

नियम १९५ — ‘आइ’, ‘एखन’, ‘आब’

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘आइ’ दिनविशेष; ‘एखन’ एहि घड़ी; ‘आब’ बदलल वर्तमान स्थिति वा आगाँक अवस्था। तीनूकें एक ‘अब’ नहि बनाउ।

नियम १९६ — ‘कोना’, ‘किएक’, ‘कतेक’

मूल नियमक प्रतिपादन — क्रमशः रीति, कारण आ परिमाणक प्रश्न अछि। ‘कैसे’, ‘क्यों’, ‘कितना’कें यथावत् नहि रखू।

नियम १९७ — ‘मुदा’क सही अर्थ

मूल नियमक प्रतिपादन — वास्तविक विरोध वा दिशा-बदलाव हो तखन ‘मुदा’;
जँ कारणक सम्बन्ध अछि तँ ‘एहि कारणेँ’ जकाँ पद नीक।

नियम १९८ — ‘फेर’

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘फेर’ पुनरावृत्ति, अगिला क्रम वा स्मृतिक प्रतिगमन
देखाबि सकैत अछि। प्रसंगक कालक्रम नष्ट नहि करैत प्रयोग करू।

नियम १९९ — ‘गप’

मूल नियमक प्रतिपादन — बातचीत, कथन आ किछु समाचार-सन्दर्भमे ‘गप’
स्वाभाविक; प्रत्येक ‘बात’केँ एके अर्थमे नहि बदलू।

नियम २०० — ‘पोथी’

मूल नियमक प्रतिपादन — पुस्तकक साधारण जियन्त मैथिली रूप ‘पोथी’
अछि। आधिकारिक ग्रन्थ-शीर्षक आ पारिभाषिक अर्थमे मूल रूपक सम्मान
राखू। सातम भाग

नियम २०१-३१७ : साहित्य-विधा आ सम्पादन

नियम २०१ — विधा अनुसार नियमक प्रयोग

मूल नियमक प्रतिपादन — कथा, कविता, शोध, बालसाहित्य, समाचार, शब्दकोश
आ अनुवादक आवश्यकता अलग अछि। साधारण प्राथमिकता विधाक मूल
उद्देश्यकेँ नष्ट नहि करय।

नियम २०२ — उपन्यास आ कथात्मक गद्य

मूल नियमक प्रतिपादन — दृश्य, पात्र, समय, प्रसंग आ कथनस्वर जतेक
आवश्यक ततेक दियौ; पाठकक अनुभव निबन्धक सारमे नहि बदलू।

नियम २०३ — कथाक घटनाक्रिया

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘गेल’, ‘बैसल’, ‘खोललक’, ‘देखलक’, ‘कहलक’ जकाँ
क्रियासँ घटनाक गति स्पष्ट हो; दफ्तरिया भावसंज्ञा कम राखू।

नियम २०४ — दृश्यक आधार

मूल नियमक प्रतिपादन — ककरा, कतय, कहिया, ककर दृष्टिसँ दृश्य देखाओल जा रहल अछि—मुख्य सूचना पर्याप्त रूपेँ राखू; अनावश्यक भूगोल नहि।

नियम २०५ — वर्णन

मूल नियमक प्रतिपादन — इन्द्रिय, वस्तु, क्रिया आ अनुभवक ठोस सूक्ष्मता सामान्य विशेषणसँ अधिक उपयोगी अछि। मनगढ़न्त भौगोलिक तथ्य नहि जोड़।

नियम २०६ — दृष्टिकोण

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रथम पुरुष, तृतीय पुरुष, स्मृति आ सर्वज्ञ कथनक ज्ञान-सीमा स्पष्ट; पात्र जे नहि जनैत अछि ओकर निश्चित जानकारी ओकर मुँहमे नहि दियौ।

नियम २०७ — कथाक समय

मूल नियमक प्रतिपादन — वर्तमान, स्मृति, पूर्वकथा आ आशंकित भविष्यक भेद वाक्यक कालसँ स्पष्ट कराउ।

नियम २०८ — भाषासँ चरित्रचित्रण

मूल नियमक प्रतिपादन — पात्रक सामाजिक अनुभव, पेशा, पीढ़ी आ सम्बन्ध संवादमे झलकि सकैत अछि; पात्रक बोलीकें कथावाचकक सम्पादकीय रूपमे चुपचाप नहि बदलू।

नियम २०९ — संवाद

मूल नियमक प्रतिपादन — व्यक्ति-उपयुक्त सम्बोधन, विराम, उत्तरक लय आ वास्तविक सामाजिक सम्बन्ध बचाउ; संवादमे अनावश्यक व्याख्यान नहि।

नियम २१० — संवादक विराम

मूल नियमक प्रतिपादन — बोलनिहार बदललापर नव अनुच्छेद; कथन, क्रिया आ उद्धरणक सीमा स्पष्ट। एक पद्धति पूरे पोथीमे।

नियम २११ — बोलचालक शब्द

मूल नियमक प्रतिपादन — 'नै', 'छै', स्थानीय क्रिया आ ध्वनि चरित्रक वाणीमे प्रमाणसहित सम्भव; नव शोधगद्यक मानक ओकर आधारपर अपने-आप नहि बदलैत।

नियम २१२ — कथामे भाषामिश्रण

मूल नियमक प्रतिपादन — पात्र जखन सचमुच अन्य भाषा बजैत अछि तखन ओकर सामाजिक प्रयोजन देखू। केवल आधुनिकता देखेबाक लेल अंग्रेजी पदक भरमार नहि।

नियम २१३ — बालसाहित्य

मूल नियमक प्रतिपादन — सान वाक्य, पहिचानयोग्य वस्तु, सहज क्रिया, स्पष्ट सर्वनाम आ प्रेमपूर्ण कथन; अर्थक जटिलता उमिर अनुकूल हो।

नियम २१४ — आरम्भिक पाठ

मूल नियमक प्रतिपादन — प्राथमिक पाठक लेल एक चरणपर एक जानकारी, परिचित ध्वनि आ देवनागरीक साफ बनावट। कठिन पारिभाषिक शब्दक पहिने स्पष्टीकरण।

नियम २१५ — किशोर पाठक लेल

मूल नियमक प्रतिपादन — विषय जटिल हो सकैत अछि, मुदा वाक्य स्वाभाविक आ उदाहरण जीवनसापेक्ष हो; उपदेशक अतिरेक नहि।

नियम २१६ — निबन्ध

मूल नियमक प्रतिपादन — एक प्रधान विषय, क्रमबद्ध तर्क, स्पष्ट अनुच्छेद आ उपयुक्त उदाहरण; वक्तव्यक बल प्रमाणसँ बनय।

नियम २१७ — वैयक्तिक निबन्ध

मूल नियमक प्रतिपादन — व्यक्तिगत अनुभवक स्वर स्वाभाविक रखू; स्मृति आ सत्यापित बाह्य घटना भिन्न चिन्हू।

नियम २१८ — वर्णनात्मक निबन्ध

मूल नियमक प्रतिपादन — वस्तु/स्थानक सम्बन्ध, रचना आ परिवर्तन देखाउ; केवल विशेषणक सूची नहि बनाउ।

नियम २१९ — तर्कप्रधान निबन्ध

मूल नियमक प्रतिपादन — दावा, पक्ष, प्रतिपक्ष, साक्ष्य आ निष्कर्ष अलग हो; विरोधी मतकेँ विकृत रूपमे नहि रखू।

नियम २२० — शोधगद्य

मूल नियमक प्रतिपादन — परिभाषा, स्रोत, प्रमाण, उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ तर्कक सीमा स्पष्ट। अनिश्चयकेँ निश्चित तथ्यक रूपमे नहि लिखू।

नियम २२१ — दर्शनक लेखन

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन अथवा सम्बन्धित शास्त्रीय अवयव ठीक अर्थमे; पूर्वपक्ष आ सिद्धान्त मिलाउ नहि।

नियम २२२ — साहित्यिक समीक्षा

मूल नियमक प्रतिपादन — रचनाक मूल पाठ, दृश्य, पात्र, शिल्प, भाषा आ विचारक साक्ष्यसहित आलोचना करू। सार-कथनकेँ समीक्षा समझि नहि लिअ।

नियम २२३ — भाषावैज्ञानिक लेखन

मूल नियमक प्रतिपादन — ध्वनि, लिपि, रूप, वाक्यरचना, अर्थ आ प्रयोग-विज्ञान अलग परिभाषित करू; उदाहरण प्रमाणसहित।

नियम २२४ — पत्रकारिता

मूल नियमक प्रतिपादन — कोन घटना कहिया, कतय, ककर संग, कोन स्रोतसँ— साफ लिखू; टिप्पणी आ समाचार अलग राखू।

नियम २२५ — प्रतिवेदन

मूल नियमक प्रतिपादन — वस्तुगत क्रम, प्रयुक्त स्रोत, परिणाम, सीमा आ आवश्यक अनुशंसा अलग खण्डमे । दृश्य-अनुमानकेँ प्रत्यक्ष प्रमाण नहि कहल जाए ।

नियम २२६ — पत्र आ ई-पत्र

मूल नियमक प्रतिपादन — सम्बोधन, विषय, प्रसंग, अनुरोध आ समापन स्पष्ट । सामाजिक सम्मानसँ मेल खाइत क्रिया ।

नियम २२७ — आवेदन आ प्रशासनिक लेखन

मूल नियमक प्रतिपादन — सरल औपचारिक मैथिली, आवश्यक तथ्य, तारीख आ स्पष्ट अपेक्षित कार्यवाई । दफ्तरिया हिन्दी अनुवादक अतिरेक नहि ।

नियम २२८ — कार्यविधि-निर्देश

मूल नियमक प्रतिपादन — क्रम स्पष्ट, प्रत्येक चरण क्रियारूपमे, सुरक्षा वा पूर्वशर्त आवश्यक ठाम पहिने । एक चरणमे अनावश्यक अनेक काम नहि ।

नियम २२९ — वेब आ ई-पत्रिकाक गद्य

मूल नियमक प्रतिपादन — साफ उपशीर्षक, छोट अनुच्छेद, सुबोध लिंक-पाठ आ खोज-सुलभ युनिकोड । मोबाइल-पठन, गन्तव्य-लिंक आ लिपिक जाँच आवश्यक ।

नियम २३० — चित्रशीर्षक

मूल नियमक प्रतिपादन — चित्रमे जे देखाइत अछि से स्पष्ट आ संक्षेपमे लिखू; अज्ञात व्यक्ति, स्थान वा तारीख कल्पित नहि करू ।

नियम २३१ — सुलभता-विवरण

मूल नियमक प्रतिपादन — चित्र अथवा आकृतिक मर्म दृश्य नहि देखि सकनिहार पाठक लेल दियौ; ‘सुन्दर फोटो’ जकाँ निरर्थक वर्णन नहि ।

नियम २३२ — कविता

मूल नियमक प्रतिपादन — लय, बिम्ब, ध्वनि आ काव्यवाचकक स्वभाव मूल मानक; पद-विभाजन नष्ट करैत गद्यवत् शुद्धि नहि।

नियम २३३ — गजल-परम्पराक रचना

मूल नियमक प्रतिपादन — रदीफ, काफिया, बहर आ शेरक अन्तर्सम्बन्ध बचाउ।
वर्तनी-नियमक कारण छन्द टूटैत हो तँ सम्पादकीय टिप्पणीसहित विशेष निर्णय करू। शीर्षकमे नुक्तायुक्त 'ग' नहि लिखू।

नियम २३४ — कविताक शीर्षक

मूल नियमक प्रतिपादन — रचनाकारक प्रमाणित शीर्षक जकाँ अछि, तहिना; बिना अनुमति शैली बदलि रचनाक पहचान नहि फेरू।

नियम २३५ — नाटक

मूल नियमक प्रतिपादन — संवाद, पात्रनाम, रङ्गनिर्देश, दृश्य-विभाजन आ मंचक्रिया अलग रूपेँ स्पष्ट; पात्रक वाणीकेँ मानक शोधभाषामे नहि मिलाउ।

नियम २३६ — अनुवादक विधागत ईमानदारी

मूल नियमक प्रतिपादन — मूलक कथ्य, भाव, समय, सामाजिक सम्बन्ध, लय आ तथ्य बचाउ; मैथिली व्याकरणमे फेर रचू, नहि तँ शब्दशः अनुवाद बनत।

सम्पादकीय परीक्षण — शब्द-प्रतिशब्द समानता अनुवादक पर्याप्त कसौटी नहि; अर्थ, विधा, लक्षित पाठक आ सांस्कृतिक संकेत साथ रहैत अछि। स्रोत आ लक्ष्यपाठक समानान्तर खण्डसँ अर्थ-हानि, अनावश्यक विस्तार आ शैली-विचलन चिन्ह जरूरी अछि। एकर प्रयोगमे उद्धृत मूल पाठ आ नव लेखकीय गद्यक अधिकार-सीमा पृथक राखल जाए।

नियम २३७ — शब्दकोश-निर्माण

मूल नियमक प्रतिपादन — मुख्य शब्द, उच्चारण, शब्दभेद, अर्थ, उदाहरण, क्षेत्र/विधा आ स्रोत अलग-अलग। अनिश्चित अर्थकेँ अनिवार्य मानक नहि घोषित करू।

नियम २३८ — पर्याय-संग्रह

मूल नियमक प्रतिपादन — पर्यायक अर्थसूक्ष्मता, मानवीय उपयोग, विधा आ सहप्रयोग बताउ; एक सूचीमे सभकें परस्पर बदलनीय नहि कहू।

नियम २३९ — अर्थ-संजाल

मूल नियमक प्रतिपादन — ऊपरक वर्ग, नीचाँक जाति, अवयव-समष्टि, पर्याय आ विलोमक सम्बन्ध अलग रखू; ज्ञान-संजालक प्रत्येक सम्बन्ध जाँचयोग्य हो।
आठम भाग

नियम २४० — अनुवादक प्राथमिक सिद्धान्त

मूल नियमक प्रतिपादन — अनुवादक पहिल कसौटी आशय अछि, दोसर मूल कथनक भाव आ प्रमाण-सीमा, तेसर प्राकृतिक मैथिली वाक्यरचना। हिन्दी वा अंग्रेजीक प्रत्येक शब्दक अलग-अलग मैथिली पर्याय खोजब पर्याप्त नहि।

नियम २४१ — अनुवादक सोलह चरण

मूल नियमक प्रतिपादन — पूरा मूल पाठ पढ़ू; विधा-पाठक बुझू; घटना आ सहभागी चिन्हू; कारक जाँचू; काल-पक्ष-भाव देखू; सम्मान चुनू; मैथिली उपवाक्य बनाउ; सर्वनाम आ क्रिया ठीक करू; मुहावरा अर्थानुसार राखू; तकनीकी पद जाँचू; नाम-आँकड़ा सुरक्षित राखू; जोरसँ पढ़ू; मूलसँ मिलान करू; वर्तनी जाँचू; उद्धरण सुधारू; अनावश्यक जोड़-घटाव हटाउ।

नियम २४२ — अनुवादक सम्पूर्णता

मूल नियमक प्रतिपादन — मूलक प्रत्येक अनुच्छेद, संख्या, शर्त, नकार, नाम आ भिन्न विचार अन्तिम पाठमे आयल अछि कि नहि, पाँति-दर-पाँति जाँचू।

नियम २४३ — मनगढ़न्त सामग्री निषिद्ध

मूल नियमक प्रतिपादन — मूलसँ अनुपस्थित दृश्य, अर्थ, तारीख, पात्र, कारण वा उद्धरण जोड़ू नहि। स्पष्ट व्याख्याक जरूरत हो तँ मूल अनुवादसँ अलग सम्पादकीय टिप्पणी।

नियम २४४ — मुहावराक अनुवाद

मूल नियमक प्रतिपादन — मूल मुहावराक कार्य आ भाव खोजू; मैथिलीमे समान कार्य करऽवला स्वाभाविक मुहावरा चुनू। शब्दानुवाद अटपटा भेलासँ सरल व्याख्या।

नियम २४५ — सांस्कृतिक पद

मूल नियमक प्रतिपादन — मखान, पाग, अरिपन, समा-चकेबा जकाँ शब्दक सांस्कृतिक अर्थकेँ एक सामान्य अनुवादमे नहि समेटू; आवश्यक परिचय दियौ।

नियम २४६ — तकनीकी शब्द

मूल नियमक प्रतिपादन — शास्त्र, विज्ञान आ पेशाक स्थापित मैथिली पद पहिले देखू। समान पद समूचा अनुवादमे एक रूपमे राखू।

नियम २४७ — व्यक्तिनाम आ स्थलनाम

मूल नियमक प्रतिपादन — आधिकारिक वर्तनी, पहिचान आ ऐतिहासिक नाम सुरक्षित; ध्वन्यात्मक रूपान्तरणसँ दोसर व्यक्ति वा स्थानक भ्रान्ति नहि।

नियम २४८ — संख्या आ परिमाण

मूल नियमक प्रतिपादन — गणना, दर, माप, कालावधि आ मुद्रा ठीक मिलाउ। अङ्क-लिपि बदलैत मूल संख्याक मान नहि बदलय।

नियम २४९ — मूल उद्धरण आ सन्दर्भ

मूल नियमक प्रतिपादन — मूल स्रोत, उद्धरणक सीमा, पृष्ठ वा अनुच्छेद-संकेत सुरक्षित; अपन गद्य आ उद्धृत पाठ अलग।

नियम २५० — पादटिप्पणी

मूल नियमक प्रतिपादन — अर्थ, पाठभेद वा इतिहासक आवश्यक स्पष्टीकरण पादटिप्पणीमे; मुख्य लेखनमे अतिभार नहि।

नियम २५१ — व्याकरण-संवेदनशील अनुवाद

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘कियो/ककरो/कोनो’, ‘देत/दैत’, ‘ओही/वएह’, ‘घुर-/आपस’ आ ‘छ्थि/अछि’क भेद मूल अर्थसँ मिलाउ।

नियम २५२ — उलटा-अनुवाद परीक्षण

मूल नियमक प्रतिपादन — कठिन वाक्यक आशय फेर मूल भाषामे सोचिकऽ देखू — नकार, कारक, मात्रा वा सम्मान बदलल तँ सुधारू। ई सहायक जाँच अछि, अन्तिम प्रमाण मूल पाठ।

नियम २५३ — शब्दकोशीय प्रविष्टिक अङ्ग

मूल नियमक प्रतिपादन — मुख्य शब्द, अर्थ-क्रम, उच्चारण, शब्दभेद, व्याकरणिक रूप, प्रयोग-क्षेत्र, उदाहरण, स्रोत, सम्बन्धित शब्द आ सन्देह-स्थिति क्रमशः दियौ।

नियम २५४ — अर्थ-क्रमाङ्कन

मूल नियमक प्रतिपादन — भिन्न प्रामाणिक अर्थ अलग क्रमांकमे; एक अर्थक केवल रूपभेद नव अर्थ नहि।

नियम २५५ — परिभाषाक शैली

मूल नियमक प्रतिपादन — परिभाषा गोल-गोल नहि घुमय; शब्दकेँ उहे शब्दसँ नहि बुझाउ; वर्ग आ विशिष्ट लक्षण स्पष्ट।

नियम २५६ — शब्दभेदक संकेत

मूल नियमक प्रतिपादन — संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, अव्यय आदिक सुसंगत नाम/चिह्न राखू।

नियम २५७ — परस्पर सन्दर्भ

मूल नियमक प्रतिपादन — समानार्थी, निकटार्थी आ रूपान्तरित प्रविष्टि आपसमे सही जुड़य; अन्तहीन वृत्ताकार सन्दर्भ नहि।

नियम २५८ — नामक प्रविष्टि

मूल नियमक प्रतिपादन — व्यक्तिनाम, स्थलनाम वा कृतिक नाम सामान्य शब्दक अर्थसँ अलग श्रेणीमे प्रमाणसहित राखू।

नियम २५९ — प्रयोग-स्तरक चिह्न

मूल नियमक प्रतिपादन — मानक, बोलचाल, पुरान, लोक, क्षेत्रीय, शास्त्रीय, अशिष्ट, सम्मानसूचक आदि चिह्न बिना पक्षपात सही प्रसंगमे।

नियम २६० — पर्यायक नियन्त्रण

मूल नियमक प्रतिपादन — दू शब्दक सभ अर्थ मिलैत अछि कि केवल एक अर्थ? उदाहरणसहित बताउ।

नियम २६१ — विलोमक नियन्त्रण

मूल नियमक प्रतिपादन — विलोम वस्तुतः अर्थक कोन बिन्दुपर विरोधी अछि, स्पष्ट करू; 'नहि' लगाइ देब विलोम-संबन्धक प्रमाण नहि।

नियम २६२ — व्यापक आ विशिष्ट अर्थ

मूल नियमक प्रतिपादन — 'धान' आ धानक विशिष्ट जाति जकाँ वर्ग-उपवर्ग सम्बन्ध स्पष्ट; जातिक नामकें सर्वसाधारण पर्याय नहि बनाउ।

नियम २६३ — अवयव आ समष्टि

मूल नियमक प्रतिपादन — 'पन्ना' पोथीक अवयव, मुदा पोथीक पर्याय नहि। एहन सम्बन्ध अलग चिह्नित करू।

नियम २६४ — व्युत्पन्न रूप

मूल नियमक प्रतिपादन — धातु, प्रत्यय आ बनल शब्दक सम्बन्ध स्रोतसहित दियौ; अनुमानित व्युत्पत्ति प्रमाणित इतिहास नहि।

नियम २६५ — विषय-क्षेत्र

मूल नियमक प्रतिपादन — खेती, हस्तशिल्प, भोजन, दर्शन, नाटक आदि क्षेत्रक शब्दक अर्थ ताहि विशिष्ट प्रयोगमे स्थापित करू।

नियम २६६ — सन्दिग्ध प्रविष्टि

मूल नियमक प्रतिपादन — पठन, उच्चारण वा अर्थ अनिश्चित हो तँ 'पुनजाँच' लिखू। मनगढन्त निश्चित अर्थ देब वर्जित।

नियम २६७ — शब्दकोशक साक्ष्य बनाम मानक

मूल नियमक प्रतिपादन — शब्दकोशमे रूप भेटब ओहि रूपक ऐतिहासिक उपलब्धि अछि; विदेहक नव गद्यक स्वीकृति अलग सम्पादकीय निर्णय।

नियम २६८ — पर्याय-कोशक पद्धति

मूल नियमक प्रतिपादन — मुख्य अर्थक अन्तर्गत निकटार्थी शब्द राखू; प्रत्येकक व्यवहारिक सीमा दर्शाउ।

नियम २६९ — शब्दार्थ-संजालक पद्धति

मूल नियमक प्रतिपादन — पर्याय, विपरीत, अवयव, जाति, व्युत्पत्ति आ विषय-क्षेत्रक सम्बन्ध फराक राखू; संजालक कडी सत्यापित हो।

नियम २७० — पारिभाषिक पद बनबितय आठ चरण

मूल नियमक प्रतिपादन — पुरान कोश देखू; विषयगत प्रचलन जाँचू; संकल्पनाक सीमा निर्धारित करू; पारदर्शी रूप चुनू; उच्चारण परखू; अर्थ-टकराव टारू; प्रथम प्रयोगमे परिभाषा दियौ; परियोजनाक शब्द-सूचीमे रूप दर्ज करू।

नियम २७१ — उधार तकनीकी पद

मूल नियमक प्रतिपादन — जँ सटीक स्वदेशी पद नहि उपलब्ध तँ प्रचलित तकनीकी पदक अर्थ-परिभाषा सहित प्रयोग उचित; अकारण शब्दसृजन नहि।

नियम २७२ — लिप्यन्तरण

मूल नियमक प्रतिपादन — नाम आ ध्वनिक लिप्यन्तरण स्वीकृत तालिका अनुसार; लिप्यन्तरणकें अर्थानुवाद नहि बुझू।

नियम २७३ — देवनागरी आ तिरहुताक रूपान्तरण

मूल नियमक प्रतिपादन — दूनू लिपिक मूल अक्षर-ध्वनि सम्बन्धक जाँच करू; केवल फॉन्ट बदलि देनाइ लिप्यन्तरण नहि। मात्रा, संयुक्ताक्षर आ अङ्कक साक्ष्य राखू।

नियम २७४ — पाठ-संग्रहक साक्ष्य

मूल नियमक प्रतिपादन — विभिन्न विधा, काल आ क्षेत्रक संतुलन देखिकऽ संग्रहक निष्कर्ष निकालू; अत्यधिक एकले लेखकक आवृत्तिक आधारपर सार्वत्रिक नियम नहि।

नियम २७५ — कच्चा आ सामान्यीकृत पाठ

मूल नियमक प्रतिपादन — मूल पाण्डुलिपि आ संशोधित शोध-पाठ अलग सुरक्षित राखू। प्रत्येक सामान्यीकरणक हिसाब मिलबाक चाही। नवम भाग

नियम २७६ — विशेषज्ञ शब्दक सामान्य नियम

मूल नियमक प्रतिपादन — जे क्षेत्रक शब्द, ओहि क्षेत्रक प्रमाणसँ परिभाषित; सामान्य हिन्दी पर्यायसँ ओकर तकनीकी अर्थ मेटू नहि।

नियम २७७ — व्यवसाय आ शिल्प

मूल नियमक प्रतिपादन — जाल, ताना, भरनी, खट्वा, औजार, बुनाइ, कुम्हारि-काज आदि पद स्थानीय काजक क्रिया देखिकऽ बुझू; अनुमानसँ विवरण नहि।

नियम २७८ — पेशागत समुदायप्रति सम्मान

मूल नियमक प्रतिपादन — समुदाय-नाम आ पेशाक विवरण सटीक, गैर-अपमानजनक आ ऐतिहासिक प्रसंगसहित। पुरान स्रोतक पूर्वाग्रह सम्पादकीय सत्य नहि।

नियम २७९ — लोकजीवनक शब्द

मूल नियमक प्रतिपादन — पर्व, विधि, लोकविश्वास, गीत, गामक संस्थान आ सम्बन्धक शब्द अपन सामाजिक अर्थ सहित राखू।

नियम २८० — लोकवाणी आ सम्पादकीय वाणी

मूल नियमक प्रतिपादन — लोकगीत वा पात्रक विशिष्ट बोलचाल मूल रूपमे; सम्पादकक गद्य स्थिर मानकमे।

नियम २८१ — लोकोक्ति आ अनुष्ठानिक पाठ

मूल नियमक प्रतिपादन — मूल पाँति, आवृत्ति, तुक आ प्रसंग सुरक्षित; भिन्न संस्करणक पाठभेद दर्ज करू।

नियम २८२ — परिधान आ आभूषण

मूल नियमक प्रतिपादन — वस्त्रक बनावट, पहिरबाक रीति, पदार्थ, उपकरण आ अवसर अलग अर्थ; एक सामान्य 'कपड़ा' शब्दसँ विशिष्टता नहि मेटू।

नियम २८३ — ऐतिहासिक वेशभूषा

मूल नियमक प्रतिपादन — पुरान परिधानक नामकेँ आजुक फैशनक नामसँ अनायास नहि बदलू; कालपरक साक्ष्य जरूरी।

नियम २८४ — भोजनक शब्दावली

मूल नियमक प्रतिपादन — मखान, चूड़ा, दालि, तेल, मछरी, मसाला, बर्तन आ पाकविधिक प्रामाणिक स्थानीय नाम राखू; समान वस्तु मानि अलग खाद्यपद नहि मिलाउ।

नियम २८५ — पाकविधि लिखबाक क्रम

मूल नियमक प्रतिपादन — सामग्री, मात्रासभ, तैयारी, अग्नि/समय, पाकक चरण आ परोसबाक अवस्था साफ क्रममे। अनुमानित माप तथ्य बनाकऽ नहि लिखू।

नियम २८६ — लोकचिकित्सा आ चिकित्सकीय तथ्य

मूल नियमक प्रतिपादन — लोकविश्वासक वर्णन आ चिकित्सकीय प्रभावक वैज्ञानिक दावा अलग राखू; स्वास्थ्य सम्बन्धी अप्रमाणित नुस्खाकेँ सत्यापित इलाज नहि कहू।

नियम २८७ — नातेदारीक पद

मूल नियमक प्रतिपादन — माय, बाबू, मामा, मामी, काका, भौजी आदि शब्द सटीक सम्बन्ध, सामाजिक सन्दर्भ आ सम्मानक अनुसार।

नियम २८८ — खेती आ भू-दृश्य

मूल नियमक प्रतिपादन — खेत, बान्ह, धार, मोइन, निकास, बीज, फसिल आ ऋतुक भेद बुझू; अलग भौगोलिक वस्तुकेँ एक सामान्य पदमे नहि समेटू।

नियम २८९ — धर्म आ अनुष्ठान

मूल नियमक प्रतिपादन — मूल स्रोतक मन्त्र, पर्व, कथा आ लोकाचारक आदरपूर्वक विवरण; श्रद्धाक कथनकेँ इतिहासक सत्यापित प्रमाण नहि लिखू।

नियम २९० — दर्शन आ शास्त्र

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रमाण, प्रमेय, पक्ष, हेतु, व्याप्ति, संशय आदि तकनीकी शब्द शास्त्रीय अर्थमे; कथन आ प्रमाणक स्तर अलग।

नियम २९१ — विज्ञान आ प्रौद्योगिकी

मूल नियमक प्रतिपादन — स्थापित परिभाषा, माप, चिन्ह, संख्या आ नाम सुरक्षित; आवश्यक तकनीकी पदक मैथिली व्याख्या स्पष्ट। दसम भाग

नियम २९२ — सम्पादनक विभिन्न स्तर

मूल नियमक प्रतिपादन — विषय-प्रमाण, आशय, संरचना, व्याकरण, शब्द, वर्तनी, मुद्रण आ डिजिटल जाँच पृथक् चरण अछि। एक अक्षर सुधारि तथ्यगत त्रुटि नहि मेटैत।

नियम २९३ — दस-चरणीय सम्पादकीय विधि

मूल नियमक प्रतिपादन — स्रोत-मिलान; उद्देश्य-विधा; तथ्य-जाँच; संरचना; कारक-सम्मान; काल-क्रिया; शब्द-मुहावरा; विराम-वर्तनी; मुद्रण-अभिगम्यता; अन्तिम स्वतन्त्र पाठ-परीक्षण। प्रत्येक चरणक पश्चात् संस्करण सुरक्षित।

नियम २९४ — त्रुटिक वर्गीकरण

मूल नियमक प्रतिपादन — तथ्य, उद्धरण, अर्थ, कारक, काल, आदर, नकार, शब्द, वर्तनी, विराम, डिजाइन आ लिंक—प्रत्येक त्रुटि अलग चिह्नित करब सुधारक हिसाब सहज बनबैत अछि।

नियम २९५ — सम्पादकीय प्रश्न

मूल नियमक प्रतिपादन — अस्पष्ट पाठमे चुपचाप अनुमान नहि; लेखक/प्रमाण-स्रोत लग स्पष्ट प्रश्न राखू। उपलब्ध सत्यापनक बाद समाधान तय करू।

नियम २९६ — अतिसंशोधनसँ बचू

मूल नियमक प्रतिपादन — पात्रक बोली, मूल रचना, लोकछन्द, शीर्षक आ साक्ष्यक रूप बिना कारण 'सुधार' करब विकृति अछि। अर्थरक्षा प्रथम।

नियम २९७ — परियोजना-विशिष्ट शैलीपत्र

मूल नियमक प्रतिपादन — तारीख, अङ्क, पदनाम, सम्बोधन, शब्दरूप, उद्धरण, शीर्षक, परसर्ग, चित्रशीर्षक आ स्रोत-पद्धतिक निर्णय एक छोट मानक-पत्रमे दर्ज करू।

नियम २९८ — तथ्यक दावाक जाँच

मूल नियमक प्रतिपादन — जे कथन वास्तविक संसारक तथ्य अछि, तकर स्वतन्त्र साक्ष्य देखू; लेखकक काल्पनिक कथा तथ्यक प्रमाण नहि।

नियम २९९ — उद्धरणक अनुशासन

मूल नियमक प्रतिपादन — उद्धृत शब्द, पाँति, विराम आ सन्दर्भ मूलसँ मिलाउ; काटल अंशक स्पष्ट चिह्न दियौ।

नियम ३०० — सन्दर्भ-उद्धरणक एकरूपता

मूल नियमक प्रतिपादन — लेखक, कृति, संस्करण, पृष्ठ वा अध्याय-संकेत एक निश्चित पद्धतिमे; अनुपलब्ध पृष्ठसंख्या गढ़ू नहि।

नियम ३०१ — ग्रन्थसूची

मूल नियमक प्रतिपादन — सम्पादक मूल पाण्डुलिपि, पृष्ठ-साक्ष्य आ संशोधनक अलग रिकार्ड राखू। स्वीकृत रूप आ स्रोतगत विकल्पकें स्पष्ट चिह्नित करू; बादक संशोधन पहिनुक मूल पाठकें नष्ट नहि करय।

नियम ३०२ — पादटिप्पणी आ अन्तटिप्पणी

मूल नियमक प्रतिपादन — मुख्य तर्कक आवश्यक प्रमाण/स्पष्टीकरण लेल; निरर्थक पुनरावृत्ति नहि। टिप्पणी अङ्क आ सन्दर्भ मिलाउ।

नियम ३०३ — सारणी आ आकृति

मूल नियमक प्रतिपादन — शीर्षक, स्रोत, एकाइ, क्रम आ वर्णन स्पष्ट; सारणीक आँकड़ा मूलसँ मिलाउ।

नियम ३०४ — चित्रक वैकल्पिक विवरण

मूल नियमक प्रतिपादन — चित्रमे अर्थवाचक वस्तु, सम्बन्ध वा परिवर्तनकें शब्दमे लिखू; रङ्ग/सुन्दरता मात्र वर्णन पर्याप्त नहि।

नियम ३०५ — सभकें सुलभ पाठ

मूल नियमक प्रतिपादन — युनिकोड, शीर्षक-स्तर, पाठनीय वर्ण, स्पष्ट लिंकनाम आ चित्र-विवरण पर ध्यान। तस्वीर-आधारित अक्षरक खोज अशक्य भऽ सकैत अछि।

नियम ३०६ — डिजिटल प्रकाशनक गुणवत्ता

मूल नियमक प्रतिपादन — कड़ी कार्यरत अछि कि, पृष्ठदिशा, ई-पोथीक विषयसूची, अङ्क, छवि आ पाठक चयन-सुविधा ठीक अछि कि नहि, जाँचू।

नियम ३०७ — यान्त्रिक सहायता

मूल नियमक प्रतिपादन — यन्त्रक सुझाव मसौदा वा जाँच-संकेत अछि; व्याकरण, अर्थ, उद्धरण आ तथ्यक अन्तिम दायित्व सम्पादकक।

नियम ३०८ — कार्यप्रक्रियाक भाषा हटाउ

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रकाशनीय पुस्तकमे ‘एखन लिखू’, ‘आगाँ जारी’, ‘मसौदा’, ‘सहायकक निर्देश’ जकाँ प्रक्रिया-सूचना, जँ पुस्तकक वास्तविक विषय नहि हो, नहि रहय।

नियम ३०९ — संस्करण-इतिहास

मूल नियमक प्रतिपादन — नियम संशोधनक तारीख, परिवर्तन, कारण आ प्रभावित विभाग दर्ज करू; पुरान दस्तावेज नष्ट नहि।

सम्पादकीय परीक्षण — ऐतिहासिक पुनर्निर्माणकेँ केवल समान ध्वनिक आधारपर वंशानुक्रमक दावा नहि बनाओल जा सकैत अछि। काल-साक्ष्य, पाठ-तिथि, वैकल्पिक सम्पर्क-व्याख्या आ स्रोतगत अनिश्चितता स्पष्ट राखू। एकर प्रयोगमे उद्धृत मूल पाठ आ नव लेखकीय गद्यक अधिकार-सीमा पृथक राखल जाए।

नियम ३१० — मुद्रण-दृश्य जाँच

मूल नियमक प्रतिपादन — अक्षर, संयुक्ताक्षर, पंक्ति टुटन, तालिका, पृष्ठक्रम, शीर्षलेख, अन्तर्लेख, हाशिया आ फॉन्ट प्रत्यक्ष देखू।

नियम ३११ — खोज-आधारित अन्तिम जाँच

मूल नियमक प्रतिपादन — निषिद्ध शब्दरूप, विदेशी अवांछित नुक्ता, दोहरायल शीर्षक, अधूरल कोष्ठक आ सन्दिग्ध अङ्क खोजू; परिणामक अर्थानुसार निर्णय करू।

नियम ३१२ — जोरसँ पढ़बाक परीक्षा

मूल नियमक प्रतिपादन — कठिन वाक्य सुनिकऽ देखू—क्रिया, सम्मान, ठहराव आ ध्वनि स्वाभाविक अछि कि नहि।

नियम ३१३ — पाठ-संग्रहसँ मिलान

मूल नियमक प्रतिपादन — कठिन सहप्रयोगकेँ प्रामाणिक मैथिली गद्यसँ जाँचू, मुदा संख्यात्मक बहुमतकेँ नव मानक नहि बनाउ।

नियम ३१४ — कोशक मिलान

मूल नियमक प्रतिपादन — अप्रचलित शब्दक अर्थ, रूप, व्युत्पत्ति आ क्षेत्र स्रोतसहित; अनिश्चित रूपकें 'पुनर्जाँच'मे राखू।

नियम ३१५ — विशेषज्ञ स्रोतसँ मिलान

मूल नियमक प्रतिपादन — औजार, भोजन, परिधान, नदी, दर्शन, विज्ञान आदिक पद ताहि क्षेत्रक स्रोतसँ सत्यापित करू।

नियम ३१६ — मूल पृष्ठक प्रत्यक्ष मिलान

मूल नियमक प्रतिपादन — पुरान स्कैन वा खराब अक्षर-रूपान्तरणमे संशय हो तँ मूल पृष्ठक छवि देखू; अनुमानसँ उद्धरण नहि बदलू।

नियम ३१७ — अन्तिम प्रकाशन-स्वीकृति

मूल नियमक प्रतिपादन — सामग्री, प्रमाण, भाषा, नुक्ता, वर्तनी, दृश्य, पृष्ठक्रम, लिंक, शीर्षक, अनुक्रमा आ सम्पूर्णताक स्वतन्त्र जाँचक बादे प्रकाशन करू।
एगारहम भाग

नियम ३१८-४६६ : प्रयोग-कोश आ उदाहरण

नियम ३१८ — अछि

मूल नियमक प्रतिपादन — अमानवीय कर्ता, वस्तु, नियम वा सामान्य अस्तित्व-वर्णनक मानक रूप—'ई पोथी नीक अछि।' मानवीय सम्मानसूचक 'छथि'सँ अलग।

नियम ३१९ — छथि

मूल नियमक प्रतिपादन — सम्मानित मानवीय कर्ताक संग—'लेखक उपस्थित छथि।' निर्जीव 'पोथी छथि' नहि; मानवीकरणक स्रोत-उद्धरण अपवादक रूपमे सुरक्षित।

नियम ३२० — आ

मूल नियमक प्रतिपादन — सामान्य जोड़—‘कथा आ कविता’; ‘आरो’क अतिरिक्त/अधिकता अर्थ नहि।

नियम ३२१ — आरो

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘आरो स्पष्ट करू’ जकाँ अधिकता/जोड़क विशेष अर्थ; साधारण ‘आ’क स्थानपर नहि।

नियम ३२२ — आइ

मूल नियमक प्रतिपादन — आजुक दिनक स्वीकृत रूप—‘आइ सभा अछि’; नव सामान्य गद्यमे ‘आज’ नहि।

नियम ३२३ — आब

मूल नियमक प्रतिपादन — स्थितिक नव वर्तमान वा आगूक अर्थ—‘आब काज शुरू होएत’; ‘एखन’सँ अर्थभेद।

नियम ३२४ — एखन

मूल नियमक प्रतिपादन — ठीक एहि समय—‘एखन पानि खसि रहल अछि’; काल-सीमा स्पष्ट।

नियम ३२५ — आगाँ

मूल नियमक प्रतिपादन — समय, स्थान वा प्रगतिक अगिला भाग—‘आगाँ बढ़ू’; ‘सोझाँ’क सीधा दृष्टि-सम्बन्धसँ अलग।

नियम ३२६ — आपस

मूल नियमक प्रतिपादन — पारस्परिक वा किछु प्रचलित पुनरागमन-सन्दर्भकेँ प्रसंगसँ जाँचू; ‘वापस’क सभ ठाम नहि लगाउ।

नियम ३२७ — आयल

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘आएल’ आ ‘आयल’ दुनू आवऽ क्रियाक भूत घटना व्यक्त करैत अछि—‘ओ गाम आएल’ अथवा ‘ओ गाम आयल’ । सम्पूर्ण नव लेखनमे एकहि रूप स्थिर राखू; स्रोत-वाणी यथावत् ।

नियम ३२८ — अन्हार

मूल नियमक प्रतिपादन — अन्धकार लेल स्वाभाविक रूप—‘साँझमे अन्हार खसय लागल’; ‘उतरबाक लगल’ जकाँ अनुवादित रचना टारू ।

नियम ३२९ — काज

मूल नियमक प्रतिपादन — सामान्य कार्यक प्राथमिक शब्द—‘काज पूरा भेल’; अलग पेशागत/स्रोतगत ‘काम’क प्रसंग रहि सकैत अछि ।

नियम ३३० — काम

मूल नियमक प्रतिपादन — किछु स्थापित अर्थ, मुहावरा वा विशिष्ट पेशाक क्षेत्रमे सम्भव; नव मानक सामान्य कार्यक अर्थमे ‘काज’ प्रायः प्राथमिक ।

नियम ३३१ — ककरो

मूल नियमक प्रतिपादन — अनिश्चित व्यक्तिक सम्बन्ध/तिर्यक रूप—‘ककरो बात’; कर्ता-सन्दर्भमे ‘कियो’क जाँच ।

नियम ३३२ — कियो

मूल नियमक प्रतिपादन — अनिश्चित मानवीय कर्ता—‘कियो आयल’; ‘ककरो आयल’ एहि आशयमे नहि ।

नियम ३३३ — कोनो

मूल नियमक प्रतिपादन — संज्ञाक अनिश्चित विशेषक—‘कोनो उपाय’; स्वतन्त्र मानवीय कर्ताक स्थानमे नहि ।

नियम ३३४ — किछु

मूल नियमक प्रतिपादन — वस्तु, परिमाण अथवा अनिश्चित अंश—‘किछु नहि भेल’; संज्ञाक आगाँ प्रयोग प्रसंगसापेक्ष।

नियम ३३५ — के

मूल नियमक प्रतिपादन — व्यक्तिसूचक प्रश्न—‘के आयल?’; कारक बदललापर ककरा/केकर आदि जाँचू।

नियम ३३६ — केँ

मूल नियमक प्रतिपादन — कर्म, प्राप्तकर्ता वा सम्बोधनक उपयुक्त सम्बन्ध—‘ओकराकेँ’ जकाँ अस्वाभाविक दुहराव नहि रचू; मैथिली वाक्यरचना जाँचू।

नियम ३३७ — कऽ

मूल नियमक प्रतिपादन — पूर्वघटना वा क्रियाक जोड़—‘देखि कऽ कहलक’; युनिकोड अवग्रह ‘ऽ’ रह्य।

नियम ३३८ — करैत

मूल नियमक प्रतिपादन — चलैत/आवृत्तिपरक काजक रूप—‘ओ लिखैत अछि’; निश्चित भविष्यवाचक ‘करत’सँ भेद।

नियम ३३९ — कतेक

मूल नियमक प्रतिपादन — मात्रा/संख्याक प्रश्न—‘कतेक पोथी अछि?’

नियम ३४० — कतय

मूल नियमक प्रतिपादन — स्थानक प्रश्न—‘अहाँ कतय जाइत छी?’

नियम ३४१ — किएक

मूल नियमक प्रतिपादन — कारणक प्रश्न—‘ई किएक भेल?’

नियम ३४२ — कोना

मूल नियमक प्रतिपादन — रीतिक प्रश्न—‘ई कोना लिखव?’

नियम ३४३ — कहिया

मूल नियमक प्रतिपादन — समयक प्रश्न—‘ओ कहिया आयत?’

नियम ३४४ — गप

मूल नियमक प्रतिपादन — कथन वा बातचीत—‘हमरासँ गप करू’; स्रोतगत ‘बात’क किछु अर्थ अलग रहि सकैत अछि।

नियम ३४५ — गेल

मूल नियमक प्रतिपादन — जएबाक भूत घटना—‘ओ घर गेल’; सम्मानित पात्रक रूपक संगति देखू।

नियम ३४६ — घुर-

मूल नियमक प्रतिपादन — पुनरागमन/वापसी—‘ओ घुरि आयल’, ‘ओ घुरऽ लागल’; ‘आपस’क प्रासंगिक भेद जाँचू।

नियम ३४७ — घुरऽ लागल

मूल नियमक प्रतिपादन — गति आरम्भ भेल—‘ओ घुरऽ लागल’; ‘घुरबऽ लगल’ नहि अपनाउ।

नियम ३४८ — घुरि

मूल नियमक प्रतिपादन — असमापिका/पूर्वक्रियावाची—‘ओ घुरि आयल’; तकरा ‘घुरऽ’क समान नहि कहू।

नियम ३४९ — छूलनि

मूल नियमक प्रतिपादन — छूनाइक आदरसूचक क्रियारूप—‘ओ छूलनि’ जकाँ उपयुक्त कर्ता-सन्दर्भ सुनिश्चित करू।

नियम ३५० — जँ...तँ

मूल नियमक प्रतिपादन — शर्त-फल—‘जँ ओ आयत, तँ कहब’; काल आ सम्भावना सुरक्षित।

नियम ३५१ — जखन...तखन

मूल नियमक प्रतिपादन — समय-सहसमय—‘जखन वर्षा भेल, तखन धार बढल’; घटनाक क्रम स्पष्ट।

नियम ३५२ — झार

मूल नियमक प्रतिपादन — झिड़की/फटकारक अर्थ—‘गुरुजी झार देलनि’; वनस्पतिक ‘डाँट’ नहि।

नियम ३५३ — डाँट

मूल नियमक प्रतिपादन — वनस्पतिक डाँट वा डंठल—‘पातक डाँट’; फटकार लेल ‘झार’।

नियम ३५४ — टूटल भीतक

मूल नियमक प्रतिपादन — टूटि गेल भीतक सम्बन्धसूचक रूप; भीत अर्थात् देवाल। प्रसंगबिना रूप नहि बदलू।

नियम ३५५ — दैत

मूल नियमक प्रतिपादन — वर्तमान आवृत्तिपरक/अपूर्ण क्रिया—‘ओ दैत अछि’; भविष्य ‘देत’ नहि।

नियम ३५६ — देत

मूल नियमक प्रतिपादन — भविष्य—‘ओ काल्हि देत’; चालू क्रियाक ‘दैत’सँ भिन्न।

नियम ३५७ — धरि

मूल नियमक प्रतिपादन — अन्तिम सीमा—‘जनकपुर धरि’, ‘साँझ धरि’; काल वा स्थानक सटीक सीमा।

नियम ३५८ — दिस

मूल नियमक प्रतिपादन — दिशा/ओर—‘गाम दिस गेल’; ‘धरि’क सीमा अर्थसँ अलग।

नियम ३५९ — नहि

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘नहि’ आ ‘नै’ दुनू मान्य नकारक रूप—‘ओ नहि आयल’ अथवा ‘ओ नै आयल’। लेखकक चयन लेखकीय गद्य-स्वरमे एकरूप रहय; संवादक रूप अलग भऽ सकैत अछि।

नियम ३६० — ने

मूल नियमक प्रतिपादन — बलाघात, पुष्टि अपेक्षित प्रश्न वा मुहावराक चिह्न; सामान्य नकारक ‘नहि’क विकल्प नहि।

नियम ३६१ — पाछाँ

मूल नियमक प्रतिपादन — स्थान, समय वा घटनाक बादक अर्थ—‘घरक पाछाँ’, ‘तकर पाछाँ’।

नियम ३६२ — फेर

मूल नियमक प्रतिपादन — पुनः वा अगिला क्रम—‘फेर ओ आयल’; स्मृति-क्रममे समय-संकेत जाँचू।

नियम ३६३ — बेराबेरी

मूल नियमक प्रतिपादन — पालापाली काज—‘सभ बेराबेरी पढ़ू’; ‘बारी-बारी’ नहि।

नियम ३६४ — भऽ

मूल नियमक प्रतिपादन — अवस्थापरिवर्तन/पूर्वावस्था—‘ओ ठाढ़ भऽ गेल’ जकाँ सन्दर्भ जाँचू; अनावश्यक जोड़ नहि।

नियम ३६५ — भेल

मूल नियमक प्रतिपादन — होएबाक भूत रूप—‘एहन घटना भेल’; वर्तमान ‘अछि’सँ अलग।

नियम ३६६ — भीत

मूल नियमक प्रतिपादन — घरक देवाल/भीत; ‘भीतर’क अव्ययसँ अर्थभेद।

नियम ३६७ — माथ

मूल नियमक प्रतिपादन — सिर अथवा स्थापित मुहावरामे; ‘सिर’क मानक गद्य विकल्प रूपेँ ‘माथ’ प्राथमिक।

नियम ३६८ — मे

मूल नियमक प्रतिपादन — भीतर, क्षेत्र वा प्रसंगक स्थान—‘गाममे’, ‘पोथीमे’; ‘पर’सँ कार्यभेद।

नियम ३६९ — मुदा

मूल नियमक प्रतिपादन — विरोधक स्वीकृत जोड़—‘ओ आयल, मुदा नहि बैसल।’

नियम ३७० — ओ

मूल नियमक प्रतिपादन — दूर/पहिने उल्लिखित कर्ता—‘ओ कहलक’; क्रिया आ आदर मिलाउ।

नियम ३७१ — ओकर

मूल नियमक प्रतिपादन — सम्बन्धसूचक—‘ओकर पोथी’; कर्मवाचक ‘ओकरा’सँ अलग।

नियम ३७२ — ओकरा

मूल नियमक प्रतिपादन — तिर्यक/कर्म सम्बन्ध—‘ओकरा कहल गेल’; ‘ओकर’सँ भेद।

नियम ३७३ — ओहि

मूल नियमक प्रतिपादन — दूर निर्देशित वा तिर्यक विशेषणरूप—‘ओहि समय’;
उचित कारक निश्चित।

नियम ३७४ — ओही

मूल नियमक प्रतिपादन — एके निर्दिष्ट वस्तु/समय—‘ओही दिन’; पहचानपर
विशेष जोरक ‘वएह’ नहि।

नियम ३७५ — वएह

मूल नियमक प्रतिपादन — जोरदार पहचान—‘ई वएह कृति अछि’; ‘ओही’क
सामान्य विशेषक काम नहि।

नियम ३७६ — ई

मूल नियमक प्रतिपादन — निकट निर्देशित वस्तु/व्यक्ति—‘ई पोथी अछि’;
‘ओ’क दूर सन्दर्भसँ भेद।

नियम ३७७ — एकर

मूल नियमक प्रतिपादन — निकटक सम्बन्धसूचक—‘एकर शीर्षक’; ‘एकरा’क
कर्म अर्थ नहि।

नियम ३७८ — एकरा

मूल नियमक प्रतिपादन — निकटक तिर्यक/कर्म रूप—‘एकरा पढ़ू’; ‘एकर’क
अधिकार अर्थसँ भेद।

नियम ३७९ — लेल

मूल नियमक प्रतिपादन — हित/उद्देश्य—‘कथा लिखबाक लेल’; अनावश्यक ‘के
लिए’ ढाँचा नहि।

नियम ३८० — लग

मूल नियमक प्रतिपादन — निकटता/ककरो लग उपलब्धता—‘हमरा लग पोथी
अछि’; स्थान आ स्वामित्वक सन्दर्भ अलग जाँचू।

नियम ३८१ — लागल

मूल नियमक प्रतिपादन — स्पर्श, जुड़नाइ वा घटनाक आरम्भक क्रिया; पूरक क्रिया उचित रूपमे चुनू।

नियम ३८२ — लगैत

मूल नियमक प्रतिपादन — वर्तमान/आवृत्तिपरक 'लगब'; 'लागल' भूत आरम्भसँ अलग।

नियम ३८३ — रहल आ रहैत

मूल नियमक प्रतिपादन — 'रहल' निरन्तर अवस्था, 'रहैत' आवृत्ति/सन्दर्भानुसार; काल-पक्षक निर्णय आवश्यक।

नियम ३८४ — साँझक

मूल नियमक प्रतिपादन — साँझसँ सम्बन्धित—'साँझक इजोत'; 'साँझिक' सामान्य मानक नहि।

नियम ३८५ — संग

मूल नियमक प्रतिपादन — साथ/समवाय—'मायक संग'; सम्बन्धक सटीक अर्थ देखू।

नियम ३८६ — सभ

मूल नियमक प्रतिपादन — बहुवचन/समूह/वितरण—'कथासभ', 'सभ लोक'; अनावश्यक सर्वत्र प्रयोग नहि।

नियम ३८७ — सभ काल

मूल नियमक प्रतिपादन — सम्पूर्ण काल वा सभ समयक अर्थ; प्रसंग अनुसार 'हरदम' अधिक स्वाभाविक भऽ सकैत अछि।

नियम ३८८ — सभ पीढ़ी

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रत्येक पीढ़ीक सामूहिक/वितरणात्मक अर्थ; हिन्दी 'हर पीढ़ी'क स्थानपर प्रसंगानुसार।

नियम ३८९ — हरदम

मूल नियमक प्रतिपादन — स्थापित अखण्ड क्रियाविशेषण—‘ओ हरदम पढ़ैत अछि’; ‘हर’क सामान्य निषेध एहि शब्दपर लागू नहि।

नियम ३९० — सोझाँ

मूल नियमक प्रतिपादन — ठीक आगाँ वा दृष्टिक क्षेत्रमे—‘ओ हमर सोझाँ आयल’; ‘आगाँ’क भविष्य/दिशा अर्थसँ भिन्न।

नियम ३९१ — सँ

मूल नियमक प्रतिपादन — स्रोत, साधन, तुलना आ किछु आन सम्बन्धक परसर्ग; प्रत्येक प्रयोगक आशय जाँचू।

नियम ३९२ — खसबाक

मूल नियमक प्रतिपादन — संज्ञार्थक असमापिका—‘अन्हार खसबाक कारण’; आरम्भवाचक ‘खसय लागल’ नहि।

नियम ३९३ — खसय

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘लागल’सँ जुड़ि घटना शुरू होएब—‘अन्हार खसय लागल’; ‘खसबाक लगल’ गलत निर्माण।

नियम ३९४ — कात

मूल नियमक प्रतिपादन — किनार/पार्श्व—‘घरक कात’; ‘लग’क सामान्य समीपता अर्थसँ अलग।

नियम ३९५ — आगाँ आ सोझाँ

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘आगाँ’ दिशा, प्रगति वा अगिला काल; ‘सोझाँ’ प्रत्यक्ष दृश्य/सामने। दूनोंक एक अंग्रेजी ‘फ्रन्ट’क पर्याय नहि।

नियम ३९६ — कियो आ कोनो

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘कियो आयल’—अज्ञात व्यक्ति कर्ता; ‘कोनो लोक आयल’—संज्ञाक विशेषक।

नियम ३९७ — कियो आ ककरो

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘कियो कहलकि’—कर्ता; ‘ककरो कहल’—तिर्यक/कर्म प्रसंग।

नियम ३९८ — ओही आ वएह

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘ओही पोथी’—एके निर्दिष्ट पोथी; ‘ई वएह पोथी अछि’—पहिचानपर बल।

नियम ३९९ — देत आ दैत

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘देत’ भविष्यमे देबाक घटना; ‘दैत’ वर्तमान/आवृत्तिपरक देबाक प्रक्रिया।

नियम ४०० — डाँट आ झार

मूल नियमक प्रतिपादन — डाँट वनस्पतिक डंठल; झार फटकार। अर्थ बदलबासँ सम्पूर्ण कथ्य उलटि सकैत अछि।

नियम ४०१ — खसबाक आ खसय

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘खसबाक’ क्रियासँ बनल संज्ञार्थक रूप; ‘खसय लागल’ आरम्भक पूरक क्रिया।

नियम ४०२ — घुर-आ आपस

मूल नियमक प्रतिपादन — पुनरागमनक क्रिया आ पारस्परिक सम्बन्धक पद अलग; हिन्दी ‘वापस’क हर प्रयोगमे एके प्रतिस्थापन नहि।

नियम ४०३ — छथि आ अछि

मूल नियमक प्रतिपादन — मानवीय सम्मानसूचक/अमानवीय कर्ताक भेद; ‘कवि छथि’, ‘कविता अछि’। बारहम भाग

नियम ४०४ — शब्दसँ आगाँ उपवाक्य

मूल नियमक प्रतिपादन — हिन्दीक शब्द हटाउ, मुदा हिन्दी कारक-क्रिया-शब्दक्रम छोड़ल नहि तँ वाक्य मैथिली नहि बनत।

नियम ४०५ — फेर घुरबाक आरम्भ

मूल नियमक प्रतिपादन — असंगत 'वापस जाने लगा'क अनुवाद 'ओ घुरऽ लागल'। कर्ताक सन्दर्भ अनुसार क्रिया बदलू।

नियम ४०६ — अनिश्चित मानवीय कर्ता

मूल नियमक प्रतिपादन — 'किसी ने'क अर्थ कर्ता हो तँ 'कियो'—'कियो ओकरा किछु नहि कहलक।'

नियम ४०७ — वितरणात्मक प्रयोग

मूल नियमक प्रतिपादन — 'हर पीढ़ी'क प्रसंगमे 'सभ पीढ़ी' वा तर्कसम्मत 'प्रत्येक पीढ़ी'; 'हरदम' अखण्ड रूपमे।

नियम ४०८ — भविष्यक उदाहरण

मूल नियमक प्रतिपादन — 'ओ काल्हि देत' लिखू; एहि ठाम 'दैत' नहि।

नियम ४०९ — आवृत्तिक उदाहरण

मूल नियमक प्रतिपादन — 'ओ प्रतिदिन पोथी दैत अछि'; 'देत' एहि अर्थमे नहि।

नियम ४१० — पहिचानक उदाहरण

मूल नियमक प्रतिपादन — 'ई वएह व्यक्ति छथि'—ओही व्यक्ति होनेक बल; सम्मानसूचक क्रिया सेहो उचित।

नियम ४११ — दिन-विशेषक उदाहरण

मूल नियमक प्रतिपादन — 'ओही दिन ओ आयल'—दिनक विशेषण; 'वएह दिन' एहि रचनामे साधारण प्राथमिकता नहि।

नियम ४१२ — अन्हारक आरम्भ

मूल नियमक प्रतिपादन — 'साँझक समय अन्हार खसय लागल'—सही क्रिया-पूरक।

नियम ४१३ — अन्हारक संज्ञार्थक रूप

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘अन्हार खसबाक डर’—नामवत् क्रिया; ‘खसय’ नहि।

नियम ४१४ — भीतक वर्णन

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘टूटल भीतक ईट’—भीतक सम्बन्धसूचक; सरल ‘टूटी दीवार का’ ढाँचा नहि।

नियम ४१५ — फटकारक उदाहरण

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘ओ झार देलक’; बोटक डंटल ‘डाँट’सँ भिन्न।

नियम ४१६ — वनस्पतिक डाँट

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘डाँट सुखि गेल’—वनस्पति-सम्बन्ध; फटकार अर्थ नहि।

नियम ४१७ — समयक प्रश्न

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘अहाँ कहिया आयब?’—समय पूछल गेल अछि।

नियम ४१८ — समय-सहसम्बन्ध

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘जखन वर्षा थमल, तखन ओ गेल’—दू घटनाक सम्बन्ध।

नियम ४१९ — प्रकारक प्रश्न

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘ई कोना सम्भव भेल?’—रीतिक प्रश्न, कारण ‘किएक’सँ अलग।

नियम ४२० — वर्तमान समय

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘एखन हम लिखि रहल छी’—एहि समय; ‘आब’क व्यापक स्थितिसँ भिन्न।

नियम ४२१ — अनिश्चित विशेषक

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘कोनो उपाय भेटत’—उपायक अनिश्चितता; ‘कियो उपाय’ नहि।

नियम ४२२ — अनिश्चित मानवीय कर्ता

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘कियो आबि सकैत अछि’; व्यक्ति स्वयं कर्ता।

नियम ४२३ — अनिश्चित सम्बन्ध

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘ककरो पोथी’—अनिश्चित व्यक्तिक अधिकार; ‘कियो पोथी’ नहि।

नियम ४२४ — बाहरी अपूर्णकालक सावधानी

मूल नियमक प्रतिपादन — अंग्रेजीक चलैत क्रियाक सभ उदाहरणमे ‘रहल’ नहि जोड़; मैथिलीक साधारण वर्तमान अथवा आवृत्तिरूप सेहो उपयुक्त भऽ सकैत अछि।

नियम ४२५ — भावसूचक सहायकक सावधानी

मूल नियमक प्रतिपादन — संभावना, अनुमति, बाध्यता, अनुमान आ इच्छा अलग देखू; सभ लेल एक ‘चाही’ नहि।

नियम ४२६ — उद्देश्यक सावधानी

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘पढ़बाक लेल’ उद्देश्य अछि; अनिवार्य परिणाम नहि। कारण आ उद्देश्यक भेद बचाउ।

नियम ४२७ — क्रिया-जोड़क सावधानी

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘कऽ’, ‘भऽ’, ‘आबि’ आदि जोड़ैत क्रम आ कर्ता स्पष्ट; अकारण लम्ब शृङ्खला नहि।

नियम ४२८ — सर्वनामक द्व्यर्थता

मूल नियमक प्रतिपादन — एक अनुच्छेदमे दू ‘ओ’ सम्भव व्यक्ति लेल हो तँ नाम वा सम्बोधन दोहरा कऽ सन्दर्भ स्पष्ट।

नियम ४२९ — अमानवीय सम्मानक त्रुटि

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘ई पोथी छथि’ नहि; ‘ई पोथी अछि’। पात्रक मानवीकरण उद्धरणमे अलग।

नियम ४३० — मानवीय सम्मान

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘आचार्य उपस्थित छथि’; ‘आचार्य उपस्थित अछि’ नहि, जँ सम्मानित व्यक्ति अछि।

नियम ४३१ — सम्मानक मिश्रण

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘अहाँ’ संग अशिष्ट साधारण क्रिया नहि जोड़; पूरा वाक्यक सम्मानरूप मिलाउ।

नियम ४३२ — हिन्दी जोड़शब्दक सावधानी

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘लेकिन’क सामान्य विकल्प ‘मुदा’; ‘अगर...तो’क स्थानपर ‘जँ...तँ’; शब्दसँ अधिक पूरा ढाँचा देखू।

नियम ४३३ — शोधगद्यक नामकरण-भार

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘विवेचनक निष्पादनक सम्पादन’ जकाँ बोझिल संज्ञाशृङ्खला हटाउ; कर्ता आ क्रिया दिखाउ।

नियम ४३४ — अंग्रेजी कर्मवाच्यक सावधानी

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘एक निर्णय कएल गेल’ जँ कर्ता ज्ञात अछि तँ ‘समितिने निर्णय कएलक’ नीक; कर्ता अज्ञात हो तँ कल्पित नहि।

नियम ४३५ — बाहरी सम्बन्धवाचक वाक्य

मूल नियमक प्रतिपादन — अंग्रेजी शैलीक लम्ब उपवाक्यकें ‘जे...से’ वा दू सहज मैथिली वाक्यमे पुनर्रचित करू।

नियम ४३६ — ‘हर’क हिन्दी प्रयोग

मूल नियमक प्रतिपादन — हिन्दी ‘हर’क स्वतन्त्र विशेषक-प्रयोग टारू; ‘हरदम’ अखण्ड मान्य शब्द अछि।

नियम ४३७ — ‘वापस’क हिन्दी प्रयोग

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘वापस लौटना’क स्थानपर ‘घुरि आयब’ आदि;
सन्दर्भक क्रिया निश्चित करू।

नियम ४३८ — ‘वही’क हिन्दी प्रयोग

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘ओही’ विशेषक बनाम ‘वएह’ पहिचानक बल; अर्थ देखिकऽ चुनू।

नियम ४३९ — ‘किसी’क हिन्दी प्रयोग

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘किसी ने’ प्रायः ‘कियो’; ‘किसी की’ प्रायः ‘ककरो’;
मात्र एक प्रतिशब्द नहि।

नियम ४४० — ‘डाँट’क हिन्दी प्रयोग

मूल नियमक प्रतिपादन — फटकार लेल ‘झार’, वनस्पतिक डंठल लेल ‘डाँट’;
हिन्दी एकरूपक आधारपर अर्थ नहि मिलाउ। तेरहम भाग

नियम ४४१ — सन्दिग्ध शब्दक निर्णय-क्रम

मूल नियमक प्रतिपादन — पहिने देखू—उद्धरण वा शीर्षक अछि कि? अर्थ,
कारक, काल, सम्मान, स्वीकृत सुधार, व्याकरण, कोश, पेशागत स्रोत, पाठ-
सहप्रयोग आ विधा जाँचू; अन्तमे वाक्य पुनः पढ़ू।

नियम ४४२ — व्याकरणिक निर्णय-वृक्ष

मूल नियमक प्रतिपादन — कर्ताक पहिचानसँ शुरू करू; क्रियाक सकर्मकता,
कारक, काल, पक्ष, भाव, नकार आ सम्मानक मिलान करि अन्तिम वाक्य बनाउ।

नियम ४४३ — विधा-अनुसार कार्यतालिका

मूल नियमक प्रतिपादन — कथामे स्वर-दृश्य; कवितामे लय-बिम्ब; शोधमे
प्रमाण; समाचारमे तथ्य; बालपाठमे सरलता; शब्दकोशमे अर्थभेद; वेबमे सुलभता
—सभक प्राथमिकता अलग।

नियम ४४४ — परियोजनाक शैलीपत्रक ढाँचा

मूल नियमक प्रतिपादन — कृतिक नाम, लक्षित पाठक, लिपि, अङ्क, स्वीकृत शब्दरूप, नामावली, उद्धरण-नीति, सन्दर्भ-रूप, छवि, पृष्ठ-विन्यास आ अन्तिम जाँचक निश्चय लिखू।

नियम ४४५ — अनुवाद-जाँचपत्र

मूल नियमक प्रतिपादन — मूल पाँति, आशय, कर्ता, कर्म, काल, पक्ष, सम्मान, मूल मुहावरा, मैथिली रूप आ मिलान-टिप्पणी अलग राखू।

नियम ४४६ — शब्दकोश-प्रविष्टि ढाँचा

मूल नियमक प्रतिपादन — मुख्य शब्द—शब्दभेद—अर्थ-क्रम—उदाहरण—रजिस्टर—क्षेत्र—स्रोत—समानार्थी/विलोम—सन्देह-स्थिति। खाली जानकारी गढ़ि नहि भरू।

नियम ४४७ — उपन्यास-अध्यायक परीक्षा

मूल नियमक प्रतिपादन — घटना-क्रम, पात्र-सम्बोधन, काल, कथकक ज्ञान-सीमा, संवाद आ स्थानीय वस्तु/बोलीक अखण्डता जाँचू।

नियम ४४८ — शोध-अध्यायक परीक्षा

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रतिज्ञा, स्रोत-पाठ, उद्धरण, प्रतिपक्ष, तर्क, निष्कर्ष, फुटनोट आ ग्रन्थसूची मिलाउ।

नियम ४४९ — बालपाठक परीक्षा

मूल नियमक प्रतिपादन — शब्दक सरलता, वाक्यक लम्बाइ, दृश्य-अर्थ, उच्चारण, चित्रक सहायकता आ उम्र-अनुरूपता जाँचू।

नियम ४५० — वेबपृष्ठक परीक्षा

मूल नियमक प्रतिपादन — युनिकोड, लिंक, शीर्षक-अनुक्रम, मोबाइल-पठन, वैकल्पिक चित्रविवरण, खोज आ टुटल लिंक जाँचू।

नियम ४५१ — उद्धरण-सन्दर्भक परीक्षा

मूल नियमक प्रतिपादन — शब्द, पाँति, संस्करण, लेखक, पृष्ठ, तारीख आ पाठभेद सटीक; शून्य-आधारित अनुच्छेदकें पृष्ठ नहि कहू।

नियम ४५२ — पारिभाषिक शब्दक परीक्षा

मूल नियमक प्रतिपादन — एक अर्थ लेल एक स्थिर पद, पहली बेर परिभाषा, विषयगत प्रमाण आ अर्थक टकरावक जाँच।

नियम ४५३ — मनगढ़न्त दावाक निषेध

मूल नियमक प्रतिपादन — अनुपलब्ध स्रोत, दृश्य, चरित्रक मंशा, उद्धरण, संख्या, प्रकाशन-वर्ष वा इतिहास कल्पना कऽ नहि लिखू।

नियम ४५४ — विरोधी स्रोतक व्यवहार

मूल नियमक प्रतिपादन — भिन्न संस्करण वा कोशमे भेद हो तँ स्रोतनाम, वर्ष, पृष्ठ आ भिन्न पाठ दर्ज करू; एककें चुपचाप नष्ट नहि।

नियम ४५५ — नव स्वीकृत सुधारक अधिकार

मूल नियमक प्रतिपादन — सम्पादकक पछिला स्पष्ट स्वीकृत सुधार पहिनुक विरोधी सामान्य नियमसँ ऊपर; मुदा उद्धरण, शीर्षक आ प्रामाणिक मूल पाठक निष्ठा अलग।

नियम ४५६ — नव सुधार दर्ज करबाक विधि

मूल नियमक प्रतिपादन — पुरान रूप, स्वीकृत रूप, पूरा प्रसंग, परिवर्तनक कारण, लागू-सीमा, विरोधी उदाहरण आ सुरक्षित खोज-जाँच—सात बात लिखू।

नियम ४५७ — पाठ-संग्रहक परीक्षण

मूल नियमक प्रतिपादन — समान विधा आ कालक पर्याप्त उदाहरण खोजू; स्रोत-सूची आ पठन-भ्रम जाँचू; आवृत्तिक आधारपर मूल्य-निर्णय नहि।

नियम ४५८ — शब्दकोशक परीक्षण

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रविष्टि, अर्थ, उदाहरण, प्रकाशन-संस्करण, क्षेत्र, उद्धरण आ अपवाद जाँचू; गलत पाठ-चिन्हनसँ सावधान।

नियम ४५९ — प्रारम्भिक पाठ्यपुस्तकक परीक्षण

मूल नियमक प्रतिपादन — स्वर, मात्रा आ मूल शब्दक शिक्षण-अवधारणा देखू; धुंधल स्कैनसँ अक्षरक गलत निर्णय नहि।

नियम ४६० — व्याकरण-पोथीक परीक्षण

मूल नियमक प्रतिपादन — धातु, पुरुष, सम्मान, कारक, पक्ष आ निषेधक नियमक वास्तविक उदाहरणसँ मिलान करू; सूत्रकेँ प्रसंगबिना लागू नहि।

नियम ४६१ — शिक्षण-पाठ्यक्रमक परीक्षण

मूल नियमक प्रतिपादन — मूल पाठ, शब्दार्थ, अभ्यास आ वाक्यरचनाक स्तर देखू; अध्यापनक सरल रूपकेँ सम्पूर्ण साहित्यिक नियम नहि बुझू। चौदहम भाग

नियम ४६२ — अनिवार्य शब्दरूपक पुनरावलोकन

मूल नियमक प्रतिपादन — पानि, इनार, औंठा, हेरायल, बिलायल, बिसरल, तरहड़ि, केवाड़ी, ओसारा, कोठली, अएना, पित्तरि, चाह, बेराबेरी, सोझाँ, आइ, एखन, आब, कोना, किएक, कतेक, मुदा—सन्दर्भानुसार अनिवार्य प्राथमिकता।

नियम ४६३ — अनिवार्य अर्थ-व्याकरण भेद

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘देत/दैत’, ‘छथि/अछि’, ‘कियो/ककरो/कोनो’, ‘ओही/वएह’, ‘डॉट/झार’, ‘घुरऽ/घुरबाक’, ‘खसय/खसबाक’क अर्थानुसार निर्णय।

नियम ४६४ — हिन्दी-ढाँचाक अन्तिम जाँच

मूल नियमक प्रतिपादन — अतिरिक्त ‘हर’, ‘लेकिन’, ‘अगर...तो’, ‘वापस’, ‘आज’, ‘अभी’, गलत सर्वनाम, हिन्दी कारक आ लम्ब भावसंज्ञाक शृङ्खला चिन्हू।

नियम ४६५ — प्रकाशनसँ पहिनुक अनिवार्य जाँच

मूल नियमक प्रतिपादन — पूरा पाठ, क्रम, उद्धरण, तथ्य, वर्तनी, नुक्ता, संयुक्ताक्षर, क्रिया, सम्मान, तालिका, अनुक्रमा, लिंक, पृष्ठविन्यास आ गोपनीय टिप्पणीक अनुपस्थिति सुनिश्चित करू।

नियम ४६६ — जे कखनो नहि करबाक अछि

मूल नियमक प्रतिपादन — स्रोत पढ़ने बिना समीक्षा; मनगढ़न्त तथ्य; अनुवादमे जोड़-घटाव; चुपचाप मूल उद्धरण-परिवर्तन; बाहरी व्याकरणक नकल; निर्विवाद रूपक आडम्बरी बदलाव; पहिनुक संचयी सामग्री नष्ट करब; आ अपरीक्षित फाइल प्रकाशित करब—सभ निषिद्ध। पन्द्रहम भाग

नियम ४६७-५९२ : स्रोत-परीक्षण आ विशिष्ट निर्णय

नियम ४६७ — नव स्रोतक स्थान

मूल नियमक प्रतिपादन — एहि भागमे भाषापाक आ इग्नूकै नियमक स्वतन्त्र स्वामी नहि, भाषा-प्रमाणक स्रोत मानल गेल अछि। नवतम स्पष्ट विदेह-सुधार सर्वोपरि रहत; तकर बाद मानक निर्देशिका, मूल साहित्यिक पाठ आ क्षेत्रीय प्रमाण जाँचल जाएत।

नियम ४६८ — भारत आ नेपालक साझा भाषा, भिन्न प्रचलन

मूल नियमक प्रतिपादन — सीमाक दूनू दिस प्रचलित उच्चारण वा वर्तनीमे भिन्नता भेटब स्वाभाविक अछि। एकरा अशुद्धता कहबाक पहिने स्रोतक क्षेत्र, समय, विधा आ पाठक-वर्ग दर्ज करू। विदेहक सामान्य नव गद्यमे एकरूपता कायम राखू।

नियम ४६९ — भाषाशास्त्रीय सुझाव आ औपचारिक स्वीकृतिक अन्तर

मूल नियमक प्रतिपादन — भाषापाकक आरम्भिक खण्डमे भाषाविज्ञानीक प्रस्ताव, मैथिली अकादमीक मानक वर्तनी आ सम्पादन-पाठ्यक्रमक प्रयोग एकसंग अछि। प्रस्तावित नियम, ऐतिहासिक विकल्प आ वर्तमान सम्पादकीय अनिवार्यता अलग श्रेणीमे राखल जाए।

नियम ४७० — शिक्षण-पाठक सीमा

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘भाषापाक’मे मानक उच्चारण/लेखनपर परस्पर भिन्न मत मिलैत अछि। ओहि मतसभकेँ विदेहक बाध्यकारी निर्णयक समान स्थान नहि। उदाहरणक मूल शब्द, मुद्रित पृष्ठ आ स्पष्ट पक्ष पुनः जाँचिकऽ निष्कर्ष दिअ।

नियम ४७१ — स्रोतक लिपि-बिगाड़सँ सावधानी

मूल नियमक प्रतिपादन — भाषापाकक उपलब्ध प्रतिमे पुरान अक्षर-संकेतनक कारण किछु संयुक्ताक्षर, मात्रा आ नुक्ताक पाठ अस्पष्ट बनैत अछि। पाठक अक्षर-साक्ष्यसँ प्रमाणित शब्दकेँ मात्र स्वीकारू; बिगाड़ल निष्कर्षपर वर्तनीक निर्णय नहि टिकाउ।

नियम ४७२ — छवि-आधारित पाठक स्थिति

मूल नियमक प्रतिपादन — इग्नूक संलग्न पाठ मुख्यतः छवि-पृष्ठक रूपमे अछि। उद्धरण लेल सम्बन्धित पृष्ठकेँ सोझाँ देखि सही पाठ उतारू; अनुमानित पाठक आधारपर शब्द-निर्णय नहि दिअ।

नियम ४७३ — पाठ-आधारित प्रमाणक तीन स्तर

मूल नियमक प्रतिपादन — पहिल स्तर—प्रत्यक्ष स्पष्ट पाँति अथवा सारणी; दोसर—स्रोतक नियमक विश्वसनीय अर्थ; तेसर—विदेहक स्वतन्त्र सम्पादकीय अनुशंसा। लेखनमे एहि तीनूक बीच अपन-आप सीमा सुरक्षित रहय।

नियम ४७४ — प्रयोग आ आदेशक भिन्नता

मूल नियमक प्रतिपादन — स्रोतमे ‘चलैत अछि’ प्रयोगक विवरण अछि, ‘लिखबाक चाही’ प्रस्ताव अछि, ‘वैकल्पिक’ विकल्प अछि। एहि तीनूकेँ समान बाध्यता नहि दिअ; स्रोतक कथन-प्रकार पहिने ठहराउ।

नियम ४७५ — पुरान आ नव वर्तनीक सहअस्तित्व

मूल नियमक प्रतिपादन — कएल/कयल, जाए/जाय जकाँ जोड़ी पुरान आ नव प्रचलनक उदाहरण बनि सकैत अछि। नव विदेह गद्यमे एकरूप रूप चुनल जाए; उद्धृत मूलमे जे रूप अछि से सुरक्षित रहत।

नियम ४७६ — भाषिक विविधता संकलन

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रदेश, जातीय बोली, पेशा, पीढ़ी, गीत अथवा लोकनाटकक शब्दकँ ‘गलत रूप’ कहि हटाउ नहि। ओकरा समुचित रजिस्टरक सन्दर्भमे अङ्कित करू, मुदा सम्पादकीय टिप्पणीमे कृत्रिम स्थानीयता नहि भरू।

नियम ४७७ — मूल शीर्षक आ व्यक्तिनामक मर्यादा

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रकाशित कृतिक नाम, लेखकक नाम आ स्थाननाम स्रोत-अभिलेख अछि। मूल रूप नहि बदलि, आवश्यक पड़ला पर विवेचनात्मक टिप्पणीमे विदेहक रूप अलग दियौ।

नियम ४७८ — स्रोतसँ निकलल नव नियमक अभिलेख

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रत्येक अतिरिक्त नियमसँ जुड़ल स्रोत, पीडीएफ पृष्ठ, विकल्प, विदेहक निर्णय आ दायरा लिखू। सन्दिग्ध वर्तनी, व्यक्तिनाम वा ऐतिहासिक उच्चारण ‘पुनर्जाँच’ श्रेणीमे रहत। सोलहम भाग

नियम ४७९ — नुक्ताक अनुमत अक्षर

मूल नियमक प्रतिपादन — अनिवार्य विदेह नियम : मैथिली लेखनमे नुक्तायुक्त वर्ण केवल ‘ड’ आ ‘ढ’ रहत। आन कोनो वर्णमे नुक्ता नहि देल जाएत। ई नियम नव सम्पादकीय गद्य आ अपन प्रकाशन-पाठक लेल लागू अछि।

नियम ४८० — शब्दक आरम्भमे ढ

मूल नियमक प्रतिपादन — शब्दक आरम्भक ‘ढ’ नुक्तारहित रहत—‘ढाक’, ‘ढोल’, ‘ढेकी’। शब्दमध्य वा शब्दान्तमे मुड़ल ध्वनिक ‘ढ’ लिखू—‘बढल’, ‘चढल’, ‘पढल’, ‘पीढी’, ‘तरहड़ि’। मुदा प्रत्येक मध्यस्थ ‘ढ’ स्वतः ‘ढ’ नहि; मानक शब्दक उच्चारण आ रूप जाँचू।

नियम ४८१ — बीचक आ अन्तक ढ

मूल नियमक प्रतिपादन — बढल, चढल, पढल, गढल, बाढ़ि, पीढ़ी, तरहड़ि जकाँ प्रासंगिक रूपमे शब्दक भीतर वा अन्तमे 'ढ' नुक्तासहित राखू। शब्दांश आ मूल रूप पहिचानि सत्यापन करू; कीबोर्डक आदतकें मानक नहि बनाउ।

नियम ४८२ — ड आ ङक अर्थगत भेद

मूल नियमक प्रतिपादन — 'ड' आ 'ङ'क भेद स्वतन्त्र अछि। 'डर', 'डाँट'मे ड; 'पङल', 'भोङ', 'झाङि'मे ङ। कोनो शब्दक आरम्भक 'ड'कें नुक्ता लगा कऽ लिखब निषिद्ध। सम्पूर्ण दस्तावेजमे पाठ-खोजसँ सन्दिग्ध रूप देखू।

नियम ४८३ — नुक्तारहित अपन भाषा

मूल नियमक प्रतिपादन — विदेहक सामान्य मैथिली लेखनमे ड आ ङ छोड़ि अन्य नुक्तायुक्त देवनागरी अक्षर निषिद्ध अछि। अन्य भाषाक नाम वा उद्धरणक मूल रूप जँ ऐतिहासिक कारणेँ जरूरी हो, तकरा उद्धरण वा यथावत् मूल पाठक रूपमे अलग स्पष्ट करू; मैथिली सम्पादकीय गद्यमे तकर सामान्यीकरण नहि।

नियम ४८४ — पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार

मूल नियमक प्रतिपादन — ङ, ञ, ण, न, म पञ्चमाक्षर अछि; अनुस्वार भिन्न वर्तनी-चिह्न। भाषापाकमे वर्गक आधारपर दूनू पद्धतिक चर्चा अछि। मानक शब्दक स्थापित रूप अनुसार निर्णय करू; सभ नासिक्य ध्वनिक एकरूप प्रतिस्थापन नहि।

नियम ४८५ — अनुस्वार आ चन्द्रबिन्दु

मूल नियमक प्रतिपादन — अं आ अँक लेखन-कार्य एक नहि। अनुनासिक स्वर आ अनुस्वारक भेद शब्दक उच्चारण आ स्वीकृत वर्तनी देखिकऽ राखू; नुक्ता आ अनुस्वारकें एक-दोसरासँ नहि मिलाउ।

नियम ४८६ — संयुक्ताक्षर आ उच्चारणक भिन्नता

मूल नियमक प्रतिपादन — यक उच्चारण ज जकाँ, वक उच्चारण ब जकाँ वा षक उच्चारण ख जकाँ सुनाइ सकैत अछि। एहन श्रवण मात्रसँ तत्सम शब्दक लिखित वर्ण बदलल नहि जाए; शब्दक रूप, इतिहास आ विधा जाँचू।

नियम ४८७ — व आ बक प्रसंग

मूल नियमक प्रतिपादन — विद्या, देवता, वंश जकाँ स्थापित तत्सम वर्तनी केवल स्थानीय उच्चारणक कारण 'ब'मे नहि बदलू। ओहि संग जीवित तद्भव/लोक शब्दमे जे ब मान्य अछि, तकरा संस्कृतसंगति लेल 'व' नहि बनाउ।

नियम ४८८ — य आ जक प्रसंग

मूल नियमक प्रतिपादन — योग, यमुना, युग जकाँ पदक शब्दकोशीय वर्तनी उच्चारणक स्थानीय ज-रूपसँ नहि बिगाड़ू। पात्रक संवादमे स्वर-लक्षण बचबाक स्थान अलग अछि।

नियम ४८९ — ए आ यक विकल्प

मूल नियमक प्रतिपादन — 'आएल/आयल', 'कएल/कयल', 'होयत/होएत/हएत'—एहि सभ रूपकेँ विदेह लेखनमे मान्य लेखकीय विकल्प मानल जाएत। कोनो एकटा रूपकेँ सार्वभौम शुद्ध आ शेषकेँ अशुद्ध नहि घोषित करू। लेखक अथवा परियोजना अपन शैलीपत्रमे रूप चुनि मूल गद्यक एकरूपता राखथि; मूल उद्धरण, पात्र-वाणी आ स्थानीय/ऐतिहासिक रूप जसक तस सुरक्षित। ई वर्तनी-विकल्प अछि; 'देत/दैत' सन काल-पक्षभेदवला रूप एक श्रेणी नहि।

नियम ४९० — शब्दक आरम्भमे ए

मूल नियमक प्रतिपादन — एहि, एना, एकर, एहन जकाँ रूपक आरम्भिक ए सुरक्षित राखू। लोक उच्चारणक आधारपर आरम्भमे य लगेनाइ नव सामान्य गद्यक मानक नहि।

नियम ४९१ — ध्वनि-लोप आ क्रियाक लय

मूल नियमक प्रतिपादन — कए → कऽ जकाँ लोप-चिह्नक उदाहरण भाषापाकमे अछि। मुदा सभ ठाम 'ऽ' जोड़ि देब नहि; पूर्ण रूप, संक्षिप्त रूप आ क्रियाक प्रसंग अलग-अलग सत्यापित करू।

सम्पादकीय परीक्षण — ध्वन्यात्मक मान्यता आ लिप्यन्तरणक साक्ष्यकें एक-दोसरासँ अलग देखबाक आवश्यकता अछि। वक्ता, क्षेत्र, उच्चारण-सन्दर्भ आ न्यूनतम युग्मक आधारपर एहि प्रतिपादनक पुनर्परीक्षण होयबाक चाही। एकर प्रयोगमे उद्धृत मूल पाठ आ नव लेखकीय गद्यक अधिकार-सीमा पृथक राखल जाए।

नियम ४९२ — हलन्तक विवेक

मूल नियमक प्रतिपादन — साधारण नव मैथिली शब्दमे अनावश्यक अन्तिम हलन्त नहि जोड़ू। स्थापित तत्सम, पारिभाषिक रूप आ ध्वनिविज्ञानक उदाहरणमे आवश्यक हलन्त बनल रहि सकैत अछि।

नियम ४९३ — स्वर-स्थानान्तरण आ लिखित रूप

मूल नियमक प्रतिपादन — भाषापाकमे पानि, दालि, माटि जकाँ रूपक उच्चारणगत परिवर्तनक चर्चा अछि। उच्चारणक एहि व्याख्यासँ नव कृत्रिम वर्तनी स्वीकृत नहि मानू; विदेहक अपन पानि, दालि आदि स्थिर रूप प्रयोग करू।

नियम ४९४ — लिपि आ ध्वनिक समुचित शिक्षण

मूल नियमक प्रतिपादन — इग्नूक देवनागरी-तिरहुता परिचयमे वर्ण, मात्रा, संयुक्ताक्षर, संख्या आ लिखित अभ्यास क्रमबद्ध अछि। भाषा-शिक्षणक उदाहरण बनबैत ध्वनि, वर्ण आ अक्षरक अलग इकाइ पहिने चिन्हित करू।

सम्पादकीय परीक्षण — ध्वन्यात्मक मान्यता आ लिप्यन्तरणक साक्ष्यकें एक-दोसरासँ अलग देखबाक आवश्यकता अछि। वक्ता, क्षेत्र, उच्चारण-सन्दर्भ आ न्यूनतम युग्मक आधारपर एहि प्रतिपादनक पुनर्परीक्षण होयबाक चाही। एकर प्रयोगमे उद्धृत मूल पाठ आ नव लेखकीय गद्यक अधिकार-सीमा पृथक राखल जाए।

नियम ४९५ — मिथिलाक्षर आ देवनागरीक स्वतन्त्रता

मूल नियमक प्रतिपादन — मिथिलाक्षरक लेखन-संरचना देवनागरीक केवल सजावटी रूप नहि अछि। एक लिपिसँ दोसरमे जखन पाठ रूपान्तर हो, मूल वर्णरूप, ध्वनि आ संहिताक अलग सत्यापन करू। सतरहम भाग

नियम ४९६ — एकल कारकचिह्नक लेखन

मूल नियमक प्रतिपादन — कारक-विभक्ति लिखैत मूल संज्ञा वा सर्वनामक साथ सम्बन्ध अनुसार 'क', 'कै', 'सँ', 'मे', 'पर', 'लग' लगाउ। 'कै'क कर्म/सम्प्रदान भूमिका आ 'क'क सम्बन्ध भूमिका भिन्न अछि; हिन्दी 'को'सँ यान्त्रिक रूपान्तर निषिद्ध।

नियम ४९७ — दू सम्बन्धचिह्न एकसंग

मूल नियमक प्रतिपादन — 'एहिमेसँ' जकाँ पदबन्धमे पहिल सम्बन्ध रूप आ दोसर स्वतन्त्र पद बनि सकैत अछि। दूटा चिह्न देखितहि सभकैँ एक संग जोड़ि देब वा सभकैँ अलग करब उचित नहि।

नियम ४९८ — मे बनाम में

मूल नियमक प्रतिपादन — स्थानीय सम्बन्धसूचक 'मे'कैँ हिन्दी 'में'क रूपमे नहि लिखू। नव गद्यक उदाहरण : 'गाममे', 'पोथीमे'; मूल उद्धरणमे प्रमाणित पाठ अलग रहत।

नियम ४९९ — कै आ कक भेद

मूल नियमक प्रतिपादन — 'ओकराकैँ' कर्म/सम्प्रदानक पद अछि, 'ओकर पोथी' सम्बन्धवाचक। हिन्दी 'को/का'क एक-एक शब्द बदलि मैथिली कारक नष्ट नहि करू।

नियम ५०० — कऽ आ कक भेद

मूल नियमक प्रतिपादन — 'कऽ' पूर्वक्रियाक सङ्क्षिप्त अव्यय वा प्रसङ्गानुसार प्रयोग अछि; 'क' सम्बन्धवाचक विभक्ति। 'जा कऽ' आ 'गामक'क विभेद अक्षर-स्तरपर सेहो निर्णायक अछि।

नियम ५०१ — सँ आ सऽ

मूल नियमक प्रतिपादन — विदेहक नव लेखनमे स्वीकृत 'सँ' राखू। स्रोतमे भेटल 'सऽ' अथवा उच्चारण-सङ्क्षेप साहित्यिक पाठक विशिष्ट प्रमाण भऽ सकैत अछि; तकर यान्त्रिक विस्तार नहि।

नियम ५०२ — तँ आ तऽ

मूल नियमक प्रतिपादन — शर्तक 'जँ...तँ' आ कथनक बलाघात-चिह्नक प्रयोग अलग राखू। एकर स्थान बदललापर वाक्यक आशय बदलिए सकैत अछि।

नियम ५०३ — केर आ क

मूल नियमक प्रतिपादन — पुरान पद्य वा स्रोतगत प्रयोगमे 'केर' भेटि सकैत अछि। नव सामान्य गद्यमे स्वाभाविक 'क' प्राथमिक राखू—'गामक लोक'; पद्यक छन्द आ स्रोतक पाठभेद आन्तरिक प्रमाणसँ परखू।

नियम ५०४ — संख्यावाची टा

मूल नियमक प्रतिपादन — 'एकटा', 'दूटा', 'छहटा' जकाँ गणनामे टा सटा सकैत अछि; आन प्रयोगमे ओकर सम्बन्ध बुझिकऽ निर्णय करू। एकटा अङ्क आ व्यक्तिवाचक बहुवचनक ढाँचाकेँ समान नहि मानू।

नियम ५०५ — क्रियाक चालू रूप

मूल नियमक प्रतिपादन — 'दैत अछि', 'करैत अछि' कार्यक आवृत्ति वा चलन दर्शा सकैत अछि; 'देत' भविष्यक रूप अछि। शब्दक एक वर्ण बदलला मात्रसँ समयक अर्थ बदलि जाएत, तँ सम्पूर्ण उपवाक्य परखू।

नियम ५०६ — पूर्वकालिक रूप

मूल नियमक प्रतिपादन — 'देखि कऽ', 'कऽ लेल', 'खा गेल' जकाँ रूपमे क्रियाक क्रम, क्रियाविशेषणीयता आ स्थानीय बोलचालक अंतर अछि। मूल आशय बुझने बिना सभकेँ समान अर्थक रूप नहि ठहराउ।

नियम ५०७ — लगल-लागल संरचना

मूल नियमक प्रतिपादन — आरम्भबोधक क्रियामे ‘ओ घुरऽ लागल’ आ ‘अन्हार खसय लागल’ जकाँ स्वीकृत रूप राखू; ‘घुरबाक लगल’क बनावटी रूप वर्जित।

नियम ५०८ — इकार-लोप आ वाचिकता

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘रहए’, ‘रहै’, ‘छलए’, ‘छलै’क रूप आ अर्थ सन्दर्भानुसार जाँचू। कोनो स्थानीय उच्चारणकेँ बिना प्रमाण सार्वदेशिक साहित्यिक रूप नहि मानू।

नियम ५०९ — नकारक स्वर

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘नहि’ आ ‘नै’ दुनू लेखकीय गद्य आ साहित्यिक वाणीमे मान्य। कोन संस्करण प्रयुक्त होएत से लेखक अपन शैलीपत्रमे निश्चित करथि आ एकरूपता राखथि। ‘नै’ बलाघात, प्रश्न वा विशिष्ट व्याकरणिक प्रयोगमे स्वतंत्र अर्थ रखैत अछि; ओकरा एहि दू नकारक रूपक अन्ध विकल्प नहि बनाउ।

नियम ५१० — आदरक संग क्रियाक एकरूपता

मूल नियमक प्रतिपादन — अहाँ, हुनका, लेखक, छात्रसभ जकाँ सन्दर्भमे उपयुक्त पुरुष, संख्या आ आदर सूचक रूप मिलाउ। ‘पोथी छथि’ जकाँ निर्जीवपर अनुपयुक्त सम्मानसूचक प्रयोग नहि। अठारहम भाग

नियम ५११ — शब्दार्थक क्षेत्र

मूल नियमक प्रतिपादन — कोनो शब्दक एक मात्र शब्दकोशीय समतुल्य नहि होइत अछि। पदार्थ, क्रिया, सम्बन्ध, लोक-सन्दर्भ आ लाक्षणिक अर्थ अलग देखिकऽ नव वाक्यमे रूप चुनू।

नियम ५१२ — पर्यायवाचीक सीमा

मूल नियमक प्रतिपादन — दू शब्द अर्थमे निकट भेला पर सेहो सामाजिक मर्यादा, भाव, मात्रा, प्रसंग आ ध्वनिक लयमे भिन्न भऽ सकैत अछि।

समानार्थकता = सभ ठाम अदलाबदल नहि।

नियम ५१३ — विलोमार्थ आ अर्थक धुरी

मूल नियमक प्रतिपादन — विलोम चुनैत देखू जे विरोध वस्तु, अवस्था, दृष्टिकोण वा मूल्यांकनमे अछि। 'उजास/अन्हार'क विरोध आ 'स्वीकृति/अस्वीकृति'क तर्क एक ढंगक नहि।

नियम ५१४ — अनेकार्थी शब्द

मूल नियमक प्रतिपादन — एक रूपक अनेक अर्थ स्रोत-सन्दर्भमे चिन्हित करू। पाँति वा वाक्य काटि देने ओकर वास्तविक अर्थ बदलि सकैत अछि; उदाहरणमे सन्दिग्ध अर्थक अगल-बगल वाक्य सेहो राखू।

नियम ५१५ — समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द

मूल नियमक प्रतिपादन — सुनबामे मिलैत शब्दकेँ एक रूप बना कऽ अर्थ नष्ट नहि करू। कोश बनबैत प्रत्येक अर्थ लेल स्वतन्त्र संकेत, उदाहरण आ आवश्यकता अनुसार उच्चारण-सूचना दिअ।

नियम ५१६ — मुहावरा आ शाब्दिक अर्थ

मूल नियमक प्रतिपादन — मुहावराक वास्तविक अर्थ ओकर शब्दसभक जोड़ मात्र नहि। लोक-परिस्थिति, कथनक प्रयोजन, व्यंग्य, प्रशंसा, आक्षेप वा विनोद चिन्हित करू; नव बनावटी मुहावरा नहि गढ़ू।

नियम ५१७ — लोकोक्ति आ तर्क

मूल नियमक प्रतिपादन — लोकोक्ति लोकक प्रचलित कथन अछि, स्वतः सर्वकालिक वैज्ञानिक सत्य नहि। शोध-समीक्षामे लोकोक्तिक प्रयोगक सामाजिक प्रयोजन देखू; ऐतिहासिक अथवा सांख्यिक प्रमाण अलग माँगू।

नियम ५१८ — सांस्कृतिक सन्दर्भ

मूल नियमक प्रतिपादन — पाबनि, व्रत, पाँजि, भोजन, वस्त्र, गीत, कृषिकर्म आ पेशागत औजारक नाम सामान्य पर्यायसँ बदलि देला पर सांस्कृतिक सूचना गुमि सकैत अछि। विषयगत शब्दावली आ प्रामाणिक स्थानीय स्रोत देखू।

नियम ५१९ — कोशक शब्द, लेखकक वाक्य

मूल नियमक प्रतिपादन — शब्दकोश अर्थक सम्भावना देखबैत अछि;
साहित्यिक कथन सन्दर्भमे चुनेल अर्थ। कोशमे रूप भेटलासँ रचनाक पाँतिमे ओ
अर्थ लागू होएत, से प्रमाणित नहि।

नियम ५२० — शब्दक सामाजिक स्तर

मूल नियमक प्रतिपादन — आदर, स्नेह, परिहास, अपमान, जाति अथवा पेशा
चिन्हित करबामे शब्दक उच्चारण, सम्बोधन आ व्याकरण सहभागी अछि।
पात्रक सामाजिक वाणीकेँ सम्पादकीय कथ्यक रूपमे नहि थोपि दिअ।

नियम ५२१ — लोकक पेशागत शब्द

मूल नियमक प्रतिपादन — जाल, करघा, माटिक पात्र, धानक जाति, औषधीय
जड़ी जकाँ नामक अर्थ अनुमानसँ नहि बनाउ। स्रोतक दृश्य आ प्रामाणिक
विशेषज्ञक शब्द-साक्ष्यसँ सत्यापन करू।

नियम ५२२ — हिन्दी प्रभावक सूक्ष्म क्षेत्र

मूल नियमक प्रतिपादन — लेकिन/मुदा, कैसे/कोना जकाँ दृश्य शब्दक संग
परसर्ग, क्रिया, सम्भाव्य अर्थ आ मुहावराक छिपल ढाँचा सेहो परखू। शब्द
बदलि देने भरिसँ मैथिली वाक्य नहि बनैत।

नियम ५२३ — अभिधान आ भावार्थक अलग लेखन

मूल नियमक प्रतिपादन — कोशमे पहिने प्रत्यक्ष अर्थ, तकर बाद प्रसंगगत आ
रूपक अर्थ स्पष्ट करू। साहित्यिक समीक्षामे पाठक शब्दक भाव-मूल्य देखू;
ओकरा इतिहास वा व्युत्पत्ति कहि नहि बेचू।

नियम ५२४ — प्रमाण-पञ्जीवाली प्रविष्टि

मूल नियमक प्रतिपादन — महत्त्वपूर्ण शब्दक संग मूल उद्धरण, संस्करण, पृष्ठ,
पदभेद, अर्थ, प्रयोग-वर्ग आ विदेहक प्राथमिक रूप जोड़ू। जे प्रविष्टि अनिश्चित
हो, ओकरा अस्थायी चिह्न दिअ। उन्नीसम भाग

नियम ५२५ — लेखनक उद्देश्य पहिने

मूल नियमक प्रतिपादन — साहित्यिक कथा, शोधपत्र, विद्यालयी निबन्ध, अनुवाद, पत्र आ संवादक उद्देश्य एक नहि। लेखक पहिने पाठक-वर्ग, अपेक्षित जानकारी, प्रमाणक स्तर आ स्वर तय करू।

नियम ५२६ — निबन्धक तीन स्तर

मूल नियमक प्रतिपादन — निबन्धमे विषय-प्रस्तावना, तर्क/विवेचन आ निष्कर्षक स्वाभाविक सम्बन्ध राखू। कोनो निबन्धकेँ सूची-अनुच्छेदक ढेर वा प्रचारात्मक घोषणा नहि बनाउ।

नियम ५२७ — विषय-वाक्य आ अनुच्छेद

मूल नियमक प्रतिपादन — अनुच्छेदमे मुख्य विचार पर्याप्त स्पष्ट रहय, तकर समर्थनमे उदाहरण, तुलना, विवरण अथवा पाठ-साक्ष्य दिअ। नव तर्क शुरू भेलासँ नव अनुच्छेद दियौ।

नियम ५२८ — रचनाक आरम्भ

मूल नियमक प्रतिपादन — कथा वा निबन्धक पहिल वाक्य पाठककेँ स्थान, परिस्थिति, समस्या वा प्रमुख बोधमे प्रवेश करबाउ। बनावटी सार्वभौम घोषणा अथवा अनावश्यक तात्त्विक प्रस्तावना टारू।

नियम ५२९ — संवादक सम्बन्ध-चिह्न

मूल नियमक प्रतिपादन — संवादमे के ककरा बजैत अछि, आदरक दूरी केहन अछि आ उत्तरक वास्तविक प्रतिक्रिया की अछि, से क्रियारूप आ सम्बोधनमे स्पष्ट हो। सभ पात्र एकहि विद्वत् भाषा नहि बजत।

नियम ५३० — संवादमे कथावाचकक हस्तक्षेप

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रत्येक संवाद-पाँतिक बाद पात्रक भावक व्याख्या नहि दोहराउ। केतहु मौन, आचरण, विराम आ अपूर्ण उत्तर अर्थकेँ आगाँ बढ़ाबैत अछि।

नियम ५३१ — पत्रक संरचना

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रेषक, प्राप्तकर्ता, सम्बोधन, विषय, मुख्य बात, अपेक्षित प्रतिक्रिया आ समापनक सम्बन्ध विधा अनुसार रहय। आधिकारिक पत्र आ निकट सम्बन्धक चिट्ठीक भाषा अलग होइत अछि।

नियम ५३२ — अनुवादक अर्थानुशासन

मूल नियमक प्रतिपादन — पहिने मूल पाठक कथ्य, वाच्य, शर्त, नकार, समय आ सांस्कृतिक संकेत समझू; फेर सहज मैथिली वाक्य रचू। मूल लेखकक अनिश्चयकै पक्क तथ्य, वा रूपककै साधारण विवरण नहि बनाउ।

नियम ५३३ — भाषा-शिक्षणमे क्रम

मूल नियमक प्रतिपादन — वर्ण-परिचयसँ शब्द; शब्दसँ वाक्य; वाक्यसँ अनुच्छेद; अनुच्छेदसँ विधा—एहन क्रम आरम्भिक शिक्षणमे उपयोगी अछि। मुदा उन्नत साहित्यिक लेखनमे ई क्रम कौशलक मानचित्र अछि, कठोर बाध्यता नहि।

नियम ५३४ — उदाहरण आ अभ्यासक भेद

मूल नियमक प्रतिपादन — पाठ्यक्रमक अभ्यास-पाँति भाषिक पहिचान सिखेबाक लेल होइत अछि। ओकरा प्रकाशित साहित्यिक प्रामाणिक उद्धरण वा सार्वभौम रूपक निर्णयक समान दर्जा नहि दिअ।

सम्पादकीय परीक्षण — अभ्यास-आधारित अध्याय नियम-स्मरणसँ आगू उपयोगी कौशल-परीक्षणक अवसर दैत अछि। प्रश्न, अपेक्षित उत्तर, सम्भव विकल्प आ मूल्याङ्कनक कसौटी अलग प्रमाणसहित राखू। एकर प्रयोगमे उद्धृत मूल पाठ आ नव लेखकीय गद्यक अधिकार-सीमा पृथक राखल जाए।

नियम ५३५ — कथा बनाम विवरण

मूल नियमक प्रतिपादन — कथामे घटना, पात्रक क्रिया, दृष्टिकोण, समय आ अनकहल अर्थक परत आवश्यक भऽ सकैत अछि; विवरणमे क्रमबद्ध तथ्य पर्याप्त होइत अछि। समीक्षा करैत कृति जे करैत अछि, ताहिपर बात करू।

नियम ५३६ — शोधपत्रमे स्रोत आ विश्लेषण

मूल नियमक प्रतिपादन — कथांशक पाठ-साक्ष्य, तकर विश्लेषण आ आलोचनात्मक निर्णय तीनू अलग देखबाक चाही। मात्र उपन्यासक कथावस्तु घुमा-फिरा कऽ लिखल गेल तहन शोध नहि।

नियम ५३७ — समाजविज्ञानक विषयभाषा

मूल नियमक प्रतिपादन — समाज, संस्कार, परिवार, श्रम, लिंग, वर्ग आ संस्थागत सम्बन्धक प्रसंगमे वर्णन, प्रमाण आ मूल्यांकन अलग राखू। पाठ्यमे उदाहरण मात्र भेटलासँ बाह्य समाजक तथ्य प्रमाणित नहि।

सम्पादकीय परीक्षण — भाषिक रूप सामाजिक पदानुक्रम, उमेर, लिङ्ग, क्षेत्र आ परिस्थितिक बोधसँ बदलि सकैत अछि। अध्ययनमे वक्ताक सहमति, प्रतिनिवेदन आ क्षेत्रीय विकल्पक सम्मान अनिवार्य अछि। एकर प्रयोगमे उद्धृत मूल पाठ आ नव लेखकीय गद्यक अधिकार-सीमा पृथक राखल जाए।

नियम ५३८ — जटिल विषयक साधारणीकरण

मूल नियमक प्रतिपादन — शिक्षण-पाठ सरल भऽ सकैत अछि, मुदा सरलताक अर्थ तथ्य छोड़ब नहि। अपरिचित पारिभाषिक पदक पहिल प्रयोगपर मैथिलीमे परिभाषा दिअ।

नियम ५३९ — विरामचिह्नक पाठ-सुलभता

मूल नियमक प्रतिपादन — सिधा प्रश्नक चिह्न, भाषणक उद्धरण, गीतक पाँति, अनुच्छेदक विभाजन आ दण्डक प्रयोग एकरूप राखू। विचारक गति बदललासँ पंक्तिक गति बदलि सकैत अछि। बीसम भाग

नियम ५४० — नव गद्य बनाम मूल पाठ

मूल नियमक प्रतिपादन — सभसँ पहिने निर्णय करू: ई नव लेखन अछि कि मूल उद्धरणक सम्पादन? नव लेखनमे विदेहक स्वीकृत रूप; स्रोतपाठमे मूल भाषा सुरक्षित। जँ संशोधन अर्थ बदलैत अछि, ओकर स्पष्ट सम्पादकीय औचित्य रह्य।

नियम ५४१ — केवल वर्तनी-सुधार

मूल नियमक प्रतिपादन — वर्तनी सही करबाक चरणमे लेखकक अर्थ, काल, क्रियाक पुरुष, कविताक छन्द अथवा काव्यात्मक पुनरुक्ति चुपचाप नहि बदलू। अर्थ बदललासँ ओकरा अलग सम्पादकीय निर्णय मानू।

नियम ५४२ — रूपांतरक परीक्षण

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘कएल’ आ ‘कयल’ दुनू मान्य लेखकीय रूप अछि; एकहि लेखकीय आवाजमे एकरूपता अपेक्षित। मुदा ‘देत’ आ ‘दैत’ समय/पक्षक भिन्नता देखबैत अछि, तँ ओ दू रूप वर्तनी-विकल्प नहि। रूपसुधार आ अर्थबदलाव अलग चिन्हित करू।

नियम ५४३ — सम्बन्ध-चिह्नक परीक्षण

मूल नियमक प्रतिपादन — रामक/रामकँ, ओकर/ओकरा, मे/पर, सँ/संग—ई युग्म अर्थक आधारपर चुनल जाए। गलतीक जड़ हिन्दी वा अंग्रेजी वाक्यक कागजी अनुसरण होइ सकैत अछि।

नियम ५४४ — लोक-पदक संरक्षण

मूल नियमक प्रतिपादन — गीत, दन्तकथा, ग्रामीण श्रमक विवरण आ जातीय पेशाक शब्दक सूचीमे स्थानीय नाम काटि संक्षेप नहि बनाउ। अर्थ निश्चय नहि हो तँ टिप्पणीमे संशय दर्ज करू।

नियम ५४५ — शब्दबदलावक अनुमत सीमा

मूल नियमक प्रतिपादन — पानि, इनार, केवाड़ी, ओसारा, अएना, औंठा, बिलायल, बिसरल, चाह, कोठली जकाँ स्वीकृत रूप सामान्य नव सम्पादकीय मैथिलीमे लागू। पुस्तक-शीर्षक आ स्रोत-उद्धरण पर स्वतः नहि।

नियम ५४६ — इकार आ दीर्घता

मूल नियमक प्रतिपादन — केवल अनुनाद वा बोलचालक कारण दीर्घ/ह्रस्व मात्रा नहि बदलू; शब्दभेद, क्रियाक रूप आ स्थापित विदेह-मानक देखू।

नियम ५४७ — एकहि शब्दक एकरूपता

मूल नियमक प्रतिपादन — एक ग्रन्थक भीतर चयनित वर्तनी-सूची बनाउ।
अलग पात्रक संवादमे योजनाबद्ध भिन्नता सम्भव; सम्पादकीय कथावाचकमे
अनचिन्हार अदलबदल दोष अछि।

नियम ५४८ — विभक्तिक अनावश्यक दोहराव

मूल नियमक प्रतिपादन — बाहरी भाषाक अनुकरणमे सम्बन्धचिह्नक दोहराव वा
लम्ब जंजीर बने तँ अर्थ अनुकूल छोट उपवाक्यमे फेर लिखू। कारक हटेबाक
कारण मूल सम्बन्ध नहि गुमय।

नियम ५४९ — त्रुटि खोजबाक क्रम

मूल नियमक प्रतिपादन — पहिने आशय; तकर बाद वाक्य, क्रिया, आदर, कारक;
तकर बाद शब्दरूप, वर्तनी, मात्रा; अन्तमे विराम, टंकण आ पृष्ठविन्यास। उलटा
क्रम राखलासँ अर्थ-दोष बचि सकैत अछि।

नियम ५५० — पाठ-शुद्धिक तीन पास

मूल नियमक प्रतिपादन — पहिल पाठ : अर्थ आ स्रोत; दोसर : व्याकरण आ
शब्द-स्वर; तेसर : टंकण, शीर्षक, क्रमाङ्क, तिथि आ अङ्क। एके बेरमे सभ सुधार
करैत अप्रमाणित फेरबदल नहि करू।

नियम ५५१ — प्रमाणित-अप्रमाणित चिन्ह

मूल नियमक प्रतिपादन — सम्पादकीय समीक्षा-अभिलेखमे प्रत्येक कठिन शब्दक
संग 'सिद्ध', 'स्वीकार्य विकल्प', 'स्थानीय' अथवा 'पुनर्जाँच' लिखू। प्रकाशनमे
अनावश्यक आन्तरिक टिप्पणीक प्रवेश नहि हो।

नियम ५५२ — लिप्यन्तरण आ तकनीकी खोज

मूल नियमक प्रतिपादन — ड/ड, ढ/ढ, अनुस्वार, चन्द्रबिन्दु, अवग्रह आ 'कै'क
अक्षरक्रमक युनिकोड-जाँच करू। एकर दृश्य समानता पर्याप्त नहि; खोज,
प्रतिलिपि, पाठ-निकासी आ छपाइ सभ माध्यममे स्थिरता चाही।

नियम ५५३ — मूल दस्तावेजक स्थायित्व

मूल नियमक प्रतिपादन — पुरान स्वीकृत निर्देशिका स्वतन्त्र प्रति रूपमे सुरक्षित राखू। नव स्रोत जोड़ैत पहिने स्वीकृत नियमक क्रमाङ्क, पाठ-साक्ष्य आ स्रोत-सारणी हटाउ नहि। एकैसम भाग

नियम ५५४ — पहिल परीक्षा—अक्षर

मूल नियमक प्रतिपादन — वर्तनी-परीक्षणमे 'ड' आ 'ढ' छोड़ि आन नुक्तायुक्त अक्षर हटाउ; आरम्भक ड/ढ नुक्तारहित राखू; भीतरक ड/ड आ ढ/ढ ध्वनि आ शब्दरूप देखिकऽ जाँचू। मूल गैर-मैथिली उद्धरणक विशेष स्थितिक अभिलेख राखू।

नियम ५५५ — दोसर परीक्षा—नासिक्य

मूल नियमक प्रतिपादन — अँ आ अं आ नासिक्य व्यञ्जनक अर्थगत भेद जाँचू। सभ अनुस्वारकँ चन्द्रबिन्दु अथवा सभ चन्द्रबिन्दुकँ अनुस्वार नहि बनाउ।

नियम ५५६ — तेसर परीक्षा—रूपरचना

मूल नियमक प्रतिपादन — सर्वनाम, कारक, सम्बन्धसूचक, बहुवचन, गणना आ क्रियाक पुरुष सही अछि कि नहि, से वाक्य-दर-वाक्य देखू।

नियम ५५७ — चारिम परीक्षा—क्रियाक समय

मूल नियमक प्रतिपादन — भविष्य/वर्तमान, पूर्ण/अपूर्ण, शर्त/निश्चय, देत/दैत, आरम्भबोधक 'लागल' आ पूर्वकालिक 'कऽ' परखू।

नियम ५५८ — पाँचम परीक्षा—रजिस्टर

मूल नियमक प्रतिपादन — लेखकीय कथावाचक, पात्रक संवाद, लोकगीत, शोध-समीक्षा आ शैक्षिक गद्यक भाषा अनावश्यक रूपसँ एक-दोसरामे नहि मिलय।

नियम ५५९ — छठम परीक्षा—शब्दार्थ

मूल नियमक प्रतिपादन — समानार्थी देखबाक छलमे अर्थ घटल/बढ़ल अछि कि नहि; मुहावरा, लोकपद, तकनीकी नाम आ पाँजि-सम्बन्धी पद सुरक्षित अछि कि नहि।

नियम ५६० — सातम परीक्षा—स्रोत

मूल नियमक प्रतिपादन — मूल पृष्ठ, पुस्तक-शीर्षक, इकाइ, कल्लोल आ अनुच्छेद-संकेत सत्यापित; पीडीएफ पृष्ठ आ मुद्रित पृष्ठक भिन्नता स्पष्ट।

नियम ५६१ — आठम परीक्षा—प्रकाशन

मूल नियमक प्रतिपादन — अनुक्रमक प्रत्येक प्रविष्टिक पृष्ठ मेल खाय; शीर्षक, पादटिप्पणी, सारणी, पृष्ठ-संख्या, भीतरक हाशिया, रङ्ग-अन्तर आ छपाइक अक्षर पठनीय रह्य। वेब-पता आ क्यूआर कूट सत्यापित करू।

नियम ५६२ — अन्तिम निर्णयक लिपि

मूल नियमक प्रतिपादन — जतय स्रोतभेद समाधान नहि भेल, ओतय निर्णय-दर्ज कएल जाए : स्रोतगत रूप, विदेहक प्राथमिक रूप, दायरा, कारण, जाँचक स्थिति। केवल अनुमानक आधारपर निर्णय 'अनिवार्य' नहि। बाइसम भाग

नियम ५६३ — कम्पोज्ड आ विखण्डित वर्णक समान दृश्य

मूल नियमक प्रतिपादन — युनिकोडमे 'ड/ढ' पूर्वनिर्मित अथवा मूल वर्ण+नुक्ता—दू प्रकारँ रहि सकैत अछि। पाठ-प्रक्रियामे मानक युनिकोड सामान्यीकरण अपनाउ, मुदा दृष्टिपरीक्षणँ छपाक सठिक रूप सुनिश्चित करू। नुक्ता मूल 'ड/ढ'सँ अलग पड़ि नहि जाए।

नियम ५६४ — आदिक ड/ढक स्थायी जाँच

मूल नियमक प्रतिपादन — नव मैथिली शब्दक आरम्भमे ड/ढ नहि लिखू; आरम्भमे साधारण ड वा ढ प्रयोग करू। विशिष्ट व्यक्तिनाम अथवा मूल भाषाक उद्धरणकें स्वकीय लिप्यन्तरणक समस्या मानि अलग साक्ष्य-जाँच करू।

नियम ५६५ — प्रत्येक मध्यस्थ ढ नुक्तायुक्त नहि

मूल नियमक प्रतिपादन — 'ढ' शब्दमध्य कतहु साधारण उच्चारणक अङ्ग हो सकैत अछि। केवल शब्दक स्थिति देखिकऽ नुक्ता नहि लगाउ; ध्वनि, अर्थ, कोश आ लेखक-प्रयोगक मिलानक बादे 'ढ' ठहराउ।

नियम ५६६ — शब्दरूप बनाम शब्दार्थ

मूल नियमक प्रतिपादन — एके लिखित शब्दक दोसर अर्थ होय तँ शैली-सूचीमे अलग प्रविष्टि दियौ। समानार्थी जकाँ देखाइत शब्दकें वर्ग, पेशा, समय, भाव अथवा सांस्कृतिक संकेत नष्ट करैत नहि बदलू।

नियम ५६७ — उद्धरणक तीन श्रेणी

मूल नियमक प्रतिपादन — शब्दशः उद्धरण, अर्थानुवाद आ आलोचकक सार-विवरण अलग प्रकार अछि। शब्दशः उद्धरण लेल पुस्तक/संस्करण/पृष्ठ वा मूल अनुच्छेद देब आवश्यक; अपठनीय अंशकें अनुमानसँ भरि कऽ उद्धरण नहि बनाउ।

नियम ५६८ — स्रोत-विश्वसनीयताक श्रेणी

मूल नियमक प्रतिपादन — प्राथमिक मूल पाठ, प्रमाणित छापाक संस्करण, लेखकक स्वीकृत संशोधन, पाठान्तर, पाठ्यपुस्तक, शब्दकोश आ लोकवाणी अलग साक्ष्य-श्रेणी अछि। विपरीत कथन भेटलापर पहिले स्रोतक प्रकृति आ प्रयोजन जाँचू।

नियम ५६९ — प्रमाण-अभावक सार्वजनिक संकेत

मूल नियमक प्रतिपादन — जतय संस्करण अथवा मूल पाठ उपलब्ध नहि, ओतय निश्चित उद्धरण वा पृष्ठ-संख्या नहि गढ़ू। अध्ययन-टिप्पणीमे अप्रमाणित स्थिति रखू; प्रकाशनमे केवल जाँचल विवरण लिखू।

नियम ५७० — व्यक्तिसम्बन्धी सम्मानक स्थिरता

मूल नियमक प्रतिपादन — अहाँ, हुनका, हुनक, छथि, करैत छथि जकाँ सम्बद्ध रूप एके वाक्यमे सम्मान-स्तर अनुसार मिलय। पात्रक सामाजिक दूरी बदललापर साहित्यिक प्रसंगमे रूप-बदलाव सम्भव, मुदा सम्पादकीय कथनमे अनपेक्षित उतार-चढ़ाव नहि।

नियम ५७१ — निर्जीवक क्रियासंगति

मूल नियमक प्रतिपादन — पोथी, नदी, शहर, योजना, कविता, विचार, दस्तावेज जकाँ निर्जीव कर्तासँ संबद्ध सामान्य सहायक क्रिया अर्थानुकूल 'अच्छि/छै' अच्छि। जँ ओ देवी, पात्र अथवा मानवीकृत सम्बोधनक रूपमे अच्छि तँ स्रोतक प्रसंग अलग जाँचू।

नियम ५७२ — कर्ता-कर्मक पुनर्परीक्षा

मूल नियमक प्रतिपादन — अनिर्दिष्ट 'कियो'कँ हिन्दी 'किसी ने'क प्रतिरूप 'ककरो' नहि बनाउ। कर्म, सम्प्रदान, सम्बन्ध, साधन आ तुलना—पाँचू भूमिकाक कारक अलग दृष्टिसँ परखू।

नियम ५७३ — वर्तमान आ भविष्यक भेद

मूल नियमक प्रतिपादन — दैत/देत, होइत/होएत आ समान ध्वनिबला रूपसभक रूप-परीक्षणमे पूरा वाक्य पढ़ू। काल-रूपक केवल वर्तनी बदललासँ आशय बदलि सकैत अच्छि; तँ अर्थ-सत्यापन पहिने।

नियम ५७४ — अनिश्चितता आ शर्तक रक्षा

मूल नियमक प्रतिपादन — जँ-तँ, सम्भव, आकि, कदाचित्, अनुमान आ पात्रक आशा आ शङ्काकँ तथ्यक रूपमे नहि लिखू। समीक्षामे कथावाचकक दावा, पात्रक विश्वास आ बाह्य प्रमाण अलग राखू।

नियम ५७५ — लोकवाणी आ मानक गद्यक सीमा

मूल नियमक प्रतिपादन — लोकगीत, व्रतकथा, कहबी, पेशागत पद आ क्षेत्रीय संवादमे स्रोत-निष्ठ रूप सुरक्षित। मानक सम्पादकीय गद्यमे एहन रूप राखला पर प्रसंग-चिन्ह स्पष्ट हो; केवल क्षेत्रीयता समाप्त करबाक लेल अर्थ नहि नष्ट करू।

नियम ५७६ — अनुवादमे सांस्कृतिक अनुवर्ती अर्थ

मूल नियमक प्रतिपादन — चाह, कोठली, ओसारा, पानि, तरहड़ि, पाँजि, लोकपर्व जकाँ शब्दक संस्कृतिक सन्दर्भ बुझि अनुवाद करू। मात्र समीपवर्ती हिन्दी/अंग्रेजी शब्द अनेक बेर पूरा अर्थ नहि पहुँचावैत अच्छि।

नियम ५७७ — शोध-लेखनमे पाठ-साक्ष्य

मूल नियमक प्रतिपादन — शोधक निष्कर्षक सोझाँ मूल पाठक सन्दर्भ, विश्लेषणक विधि, वैकल्पिक अर्थ आ निर्णयक सीमा प्रस्तुत करू। सारांश मात्रकें समीक्षा नहि कहल जाए; साहित्यिक कल्पना आ बाह्य ऐतिहासिक तथ्य अलग राखू।

नियम ५७८ — साहित्यिक आलोचनाक आधुनिक शब्द

मूल नियमक प्रतिपादन — आख्यान-विज्ञान, कथन-दृष्टि, कालक्रम, स्मृतिमूलक पुनरागमन, अविश्वसनीय कथावाचक आ अन्तरपाठीयता आदि पद जखन उपयोगी, तखन मैथिली व्याख्या संग उपयोग करू; मूल रचनामे अनुपस्थित प्रविधिक दावा नहि करू।

नियम ५७९ — नव्य न्याय आधारित साक्ष्य-परीक्षा

मूल नियमक प्रतिपादन — प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्दप्रमाण, उपमान, अभाव आ हेत्वाभासक चर्चा प्रसंग-संगत रह्य। साहित्यिक भीतर पात्रक कथनकें स्वतः प्रमाणित इतिहास नहि मानू; तर्कक आश्रय आ निष्कर्षक व्याप्ति स्पष्ट करू।

नियम ५८० — समानान्तर इतिहासक पद्धति

मूल नियमक प्रतिपादन — मिथिला, वज्जि, अङ्ग, नेपाल-मधेश आ लोक-परम्पराक आख्यानसभक तुलना करैत स्थल, काल, बोली, स्रोतक उत्पत्ति आ विकल्पक स्वतन्त्रता सुरक्षित राखू। एक स्रोतक मौनकें दोसर स्रोतक निषेध नहि बनाउ।

सम्पादकीय परीक्षण — ऐतिहासिक पुनर्निर्माणकें केवल समान ध्वनिक आधारपर वंशानुक्रमक दावा नहि बनाओल जा सकैत अछि। काल-साक्ष्य, पाठ-तिथि, वैकल्पिक सम्पर्क-व्याख्या आ स्रोतगत अनिश्चितता स्पष्ट राखू। एकर प्रयोगमे उद्धृत मूल पाठ आ नव लेखकीय गद्यक अधिकार-सीमा पृथक राखल जाए।

नियम ५८१ — लिङ्ग आ सामाजिक सम्बोधन

मूल नियमक प्रतिपादन — मानवीय गरिमा, पदनाम आ सामाजिक पृष्ठभूमिक लेखनमे पात्रक स्वयंप्रयोग आ साहित्यिक युगक शब्दरूप देखू। अपमानसूचक

संवाद जँ आलोचनाक विषय अछि तँ ओकरा लेखकक मतक रूपमे सामान्यीकृत नहि करू।

नियम ५८२ — अनुच्छेदक शिल्प

मूल नियमक प्रतिपादन — एक अनुच्छेदमे एक प्रधान विचार, तकर समर्थन आ अगले विचारसँ प्रासंगिक सम्बन्ध रहय। लम्ब वाक्य केवल विद्वत्ताक कारण नहि; विश्लेषणक विवेक आ भाषाक गति अनुसार विभाजन करू।

नियम ५८३ — प्रश्नोत्तर आ संवाद

मूल नियमक प्रतिपादन — सीधा प्रश्नमे उचित प्रश्नचिह्न, कथन-संकेत आ वक्ता-भेद रहय। संवादक मौखिकता अनावश्यक रूपसँ शोधक औपचारिक गद्यक संग नहि मिलय।

नियम ५८४ — शीर्षक आ उपशीर्षकक श्रेणी

मूल नियमक प्रतिपादन — भाग, अध्याय, उपाध्याय आ नियमक शीर्षक साङ्गोपाङ्ग पाठक सहायक क्रम अछि। एके स्तरक समान फॉन्ट-भार, विराम, पृष्ठ-विन्यास आ अङ्क-पद्धति उपयोग करू।

नियम ५८५ — अनुक्रमक पृष्ठ-जाँच

मूल नियमक प्रतिपादन — अन्तिम पीडीएफ तैयार भेलापर प्रत्येक शीर्षकक वास्तविक पृष्ठ-संख्या संग अनुक्रम मिलाउ। संशोधनसँ पृष्ठ बदलि जाए तँ अनुक्रम फेर तैयार करू; अनुमानित संख्या प्रकाशित नहि करू।

नियम ५८६ — मुद्रणक भीतरी हाशिया

मूल नियमक प्रतिपादन — ६×९ इंच पोथी लेल बाइंडिंग/गटर पृष्ठ-संख्याक अनुसार राखू। देवनागरी मात्रा आ पृष्ठ-संख्याक बाहर कटबाक, तालिकाक तंग होएबाक, शीर्षकक टुटबाक आ खाली पृष्ठक अनावश्यक निर्माणक जाँच करू।

नियम ५८७ — क्यूआर कूटक तकनीकी परीक्षण

मूल नियमक प्रतिपादन — छपाइ लेल श्वेत शान्त-सीमा सहित वास्तविक क्यूआर कूट बनाउ; सजावटी चित्रकें क्यूआर नहि मानू। दूनु जाल-पता अलग-

अलग स्वचालित/मोबाइल स्कैनसँ मिलाऊ आ दोसर जाल-पता पहिलपर नहि पहुँचय।

नियम ५८८ — अक्षर-स्तरीय अन्तिम निरीक्षण

मूल नियमक प्रतिपादन — नुक्ता, अवग्रह, दीर्घ-मात्रा, िकार, अनुस्वार-चन्द्रबिन्दु, दृश्य-अक्षरभङ्ग, संयुक्ताक्षर आ ओसीआरसँ बिगड़ल अक्षर—ई सभकेँ मात्र स्वचालित बदलीसँ नहि, मानव-पाठ-साक्ष्यसँ परखू।

नियम ५८९ — शब्दरूप-सूचीक ध्वन्यात्मकता

मूल नियमक प्रतिपादन — ‘पानि’, ‘इनार’, ‘औंठा’, ‘तरहड़ि’, ‘केवाडी’, ‘अएना’, ‘पित्तरि’, ‘ओसारा’, ‘बिलायल’ आदि रूपकेँ नव सम्पादकीय गद्यमे स्थिर राखू; मूल लोकवाणी उद्धरणमे ताहि परंपराक भेद सहित।

नियम ५९० — स्रोत-पञ्जीक सत्यता

मूल नियमक प्रतिपादन — पोथी, लेखक, संस्करण, प्रकाशक आ वर्ष जतेक मूल दस्तावेजसँ प्रमाणित ततेके लिखू। अनुमानित प्रकाशन-विवरण, असत्य आईएसबीएन अथवा मनगढ़न्त पृष्ठ-संख्या प्रकाशित नहि करू।

नियम ५९१ — पुनरावर्तन-समीक्षा पद्धति

मूल नियमक प्रतिपादन — नव संस्करण बनेबाक क्रममे पहिल पाठसँ शब्द जाँचू, दोसर पाठसँ क्रिया/कारक/प्रमाण, तेसर पाठसँ मुद्रण/अनुक्रम/कूट। पछिल स्पष्ट सम्पादकीय सुधार सदैव पूर्वनिर्धारित सामान्य प्राथमिकतासँ ऊपर अछि।

नियम ५९२ — पुस्तकात्मक अन्तिम स्वीकार्यता

मूल नियमक प्रतिपादन — पाठमे कोनो सम्पादकीय आदेश, यन्त्रनिर्माणक चिह्न, छद्म सन्दर्भ अथवा अपठित पुस्तकक निराधार उद्धरण नहि रहय। स्वीकृत पाठ, देवनागरी अक्षर, मुद्रण आ पाठकक अर्थग्रहण—चारूकेँ अन्तिम कसौटी मानू। तेईसम भाग

तेसर भाग — ४९४ सम्पादकीय कोश-प्रविष्टि : पूर्ण क्रम

ई ४९४ प्रविष्टि मानक अर्थ-जाँचक रजिस्टर अछि, स्वचालित प्रतिशब्द-परिवर्तक नहि। “wrong_form” डिजिटल डेटा-क्षेत्रक नाम अछि; मूल साहित्यिक पाठमे उक्त रूपक स्वतः अशुद्धता सिद्ध नहि होइत अछि।

प्रयोग-वर्ग — जोड़शब्द/अव्यय

VID-2026-0001 · और → आ | निर्णय: नियम ८२। अधिकता वा अतिरिक्त अर्थमे ‘आरो’ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0002 · तथा, एवं → आ | निर्णय: औपचारिक सूचीमे ‘तथा’ सेहो मान्य | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0003 · या → वा | निर्णय: ‘अथवा’ औपचारिक | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0004 · अथवा → अथवा / वा | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0005 · लेकिन → मुदा | निर्णय: नियम ८३ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0006 · परन्तु, परंतु, किन्तु → मुदा | निर्णय: औपचारिक गद्यमे ‘परन्तु’ मान्य | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0007 · मगर → मुदा | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0008 · बल्कि → वरन् / प्रत्युत | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0009 · क्योंकि → किएक तँ / कारण जे | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0010 · इसलिए → तँ / ताहि लेल | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0011 · अतः → तँ / अतः | निर्णयः केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0012 · फिर भी, तब भी → तैयो | निर्णयः केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0013 · अगर, यदि → जाँ | निर्णयः नियम ७४ | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0014 · तो (परिणामसूचक) → तँ | निर्णयः नियम ७४ | यन्त्रवत्
परिवर्तनः नहि

VID-2026-0015 · जब → जखन | निर्णयः नियम ७३ | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0016 · तब → तखन | निर्णयः नियम ७३ | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0017 · जब तक → जखन धरि | निर्णयः केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0018 · तब तक → तखन धरि | निर्णयः केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0019 · जबकि → जखन कि | निर्णयः प्रसंग-सापेक्ष | यन्त्रवत् परिवर्तनः
नहि

VID-2026-0020 · कि (कथन-जोड़क) → जे | निर्णयः 'कहलक कि' → 'कहलक जे'
| यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0021 · ताकि → जाहिसँ | निर्णयः केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0022 · जैसे, जैसे कि → जेना | निर्णयः केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0023 · वैसे → तेना | निर्णयः केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0024 · जैसा → जेहन | निर्णयः केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0025 · वैसा → तेहन | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0026 · ऐसा → एहन | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0027 · कैसा → केहन | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0028 · ऐसे → एना | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0029 · कैसे → कोना | निर्णय: नियम ३४२ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0030 · इतना → एतेक | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0031 · उतना → ओतेक | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0032 · जितना → जतेक | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0033 · कितना → कतेक | निर्णय: नियम ३३९ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0034 · भी → सेहो | निर्णय: प्रसंग-सापेक्ष | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0035 · सिर्फ → मात्र / टा | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0036 · केवल → केवल / मात्र | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0037 · बिल्कुल → एकदम / पूर्णतः | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय
गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0038 · यानी → माने | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0039 · मतलब (अर्थ) → अर्थ / माने | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0040 · वगैरह → आदि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0041 · अर्थात् → अर्थात् | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0042 · वास्तव में → वस्तुतः | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0043 · अलावा → बाहेक / अतिरिक्त | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0044 · सबसे → सभसँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0045 · ज्यादातर → अधिकांश / बेसी | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

प्रयोग-वर्ग — कारक/परसर्ग

VID-2026-0046 · ने (कर्ता-चिह्न) → कोनो परसर्ग नहि | निर्णय: वाक्य-पुनर्रचना: 'राम ने कहा' → 'राम कहलक'; नकार: नहि / नै—सभ मान्य; सम्पूर्ण लेखकीय पाठमे एकरूपता; मूल उद्धरण सुरक्षित । | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0047 · को → कै | निर्णय: 'ओकरा' 'हुनका' सन तिर्यक रूपक संग । यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0048 · से (स्रोत, साधन, तुलना) → सँ | निर्णय: नियम ४९-५० । यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0049 · का, की, के → क / केर | निर्णय: 'गामक बाट'; लिङ्ग-ढाँचा नहि (नियम ५३) । यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0050 · में → मे | निर्णय: 'में' नहि । यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0051 · पर → पर / मे | निर्णय: नियम ५१ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0052 · तक → धरि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0053 · द्वारा → द्वारा / सँ | निर्णय: कर्ताक अर्थमे प्रसंग देखू | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0054 · के लिए → लेल | निर्णय: नियम ५२ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0055 · के साथ → संग | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0056 · के बिना → बिना | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0057 · के बाद → बाद / पाछाँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0058 · के पहले → पहिने | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0059 · के ऊपर → ऊपर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0060 · के नीचे → नीचाँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0061 · के अन्दर, के भीतर → भीतर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0062 · के बाहर → बाहर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0063 · के पास → लग / लगमे | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0064 · के सामने → सोझाँ | निर्णय: नियम १८९ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0065 · के कारण → कारणैँ / कारणसँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0066 · के बारे में → बारेमे / विषयमे | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0067 · के अनुसार → अनुसार | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0068 · की तरह, के समान → जकाँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0069 · के रूप में → रूपमे | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0070 · के बीच → बीचमे | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0071 · के दौरान → क क्रममे | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0072 · के बजाय → क बदला / क स्थानपर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0073 · के बावजूद → तैयो / क बादो | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0074 · की ओर → दिस | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0075 · में से → मे सँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0076 · से पहले → सँ पहिने | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0077 · एक दूसरे → एक-दोसर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0078 · आपस में → आपसमे / एक-दोसरामे | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0079 · अपने आप → अपने-आप | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

प्रयोग-वर्ग — सर्वनाम

VID-2026-0080 · मैं → हम | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0081 · मुझे → हमरा | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0082 · मुझसे → हमरासँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0083 · मेरा, मेरी, मेरे → हमर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0084 · हम (बहुवचन) → हम सभ / हमरालोकनि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0085 · हमें → हमरा सभकेँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0086 · हमारा → हमर / हमरा लोकनिक | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0087 · तुम → अहाँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0088 · तुम्हें → अहाँकें | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0089 · तुम्हारा → अहाँक | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0090 · आप → अहाँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0091 · आपको → अहाँकें | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0092 · आपका → अहाँक | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0093 · आप लोग → अहाँ सभ / अहाँ लोकनि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0094 · यह → ई | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0095 · ये → ई / ई सभ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0096 · इसे → एकरा | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0097 · इसका → एकर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0098 · इसमें → एहिमे | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0099 · इससे → एकरासँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0100 · इनका → हिनकर | निर्णय: आदरार्थ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0101 · वह → ओ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम
आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0102 · वे → ओ सभ / ओ लोकनि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय
गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0103 · उसे → ओकरा | निर्णय: आदरार्थ 'हुनका' | यन्त्रवत् परिवर्तन:
नहि

VID-2026-0104 · उसका → ओकर | निर्णय: आदरार्थ 'हुनकर' | यन्त्रवत्
परिवर्तन: नहि

VID-2026-0105 · उससे → ओकरासँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0106 · उनका → हुनकर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0107 · उन्हें → हुनका | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0108 · जो → जे | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम
आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0109 · जिसे → जकरा | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0110 · जिसका → जकर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0111 · कौन → के / कोन | निर्णय: 'के' व्यक्ति, 'कोन' चयन | यन्त्रवत्
परिवर्तन: नहि

VID-2026-0112 · किसे → ककरा | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0113 · किसका → ककर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0114 · किससे → ककरासँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0115 · क्या → की / कोन | निर्णय: प्रश्नसूचक 'की' | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0116 · अपना → अपन | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0117 · खुद → स्वयं / अपने | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0118 · दोनों → दुनू | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0119 · तीनों → तीनू | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

प्रयोग-वर्ग — अनिश्चित/वितरण

VID-2026-0120 · कोई → कियो | निर्णय: नियम ६८ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0121 · कोई भी → कियो | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0122 · किसी (कर्ता) → कियो | निर्णय: 'किसी ने' → 'कियो' (नियम ४३९) | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0123 · किसी (सम्बन्ध) → ककरो | निर्णय: 'किसी की' → 'ककरो' | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0124 · किसी (विशेषक) → कोनो | निर्णय: 'किसी काम' → 'कोनो काज'
| यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0125 · कुछ → किछु | निर्णय: नियम ३३४ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0126 · कुछ भी → किछुओ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0127 · कुछ नहीं → किछु नहि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित; नकार: नहि / नै—सभ मान्य; |
यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0128 · कुछ लोग → किछु लोक | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय
गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0129 · सब → सभ | निर्णय: नियम ४५ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0130 · सभी → सभ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0131 · सब कुछ → सभ किछु | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0132 · सब लोग, सभी लोग → सभ लोक | निर्णय: केवल नव
सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत्
परिवर्तन: नहि

VID-2026-0133 · सबको → सभकेँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0134 · सबका → सभक | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0135 · सारे → सभ / समस्त | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0136 · हर → प्रत्येक / सभ | निर्णय: नियम ४६, ४३६; 'हरदम' अखण्ड
मान्य | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0137 · हरेक → प्रत्येक / हरेक | निर्णय: प्रसंग-सापेक्ष | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0138 · कई → कएक | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0139 · कहीं → कतहु | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0140 · कहीं नहीं → कतहु नहि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित; नकार: नहि / नै—सभ मान्य; | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0141 · कभी → कखनो | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0142 · कभी नहीं → कहियो नहि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित; नकार: नहि / नै—सभ मान्य; | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0143 · कभी-कभी → कखनो-कखनो | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0144 · हर कोई → सभ कियो / प्रत्येक लोक | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

प्रयोग-वर्ग — प्रश्न/समय/स्थान

VID-2026-0145 · क्यों → किएक | निर्णय: नियम ३४१ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0146 · कहाँ → कतय | निर्णय: नियम ३४० | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0147 · कब → कहिया | निर्णय: नियम ३४३ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0148 · कितने, कितनी → कतेक | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0149 · आज → आइ | निर्णय: नियम ३२२ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0150 · कल (अगिला वा बीतल दिन) → काल्हि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0151 · परसों → परसू | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0152 · अब → आब | निर्णय: नियम ३२३ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0153 · अभी → एखन | निर्णय: नियम ३२४ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0154 · अब तक → एखन धरि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0155 · फिर → फेर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0156 · फिर से → फेरसँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0157 · पहले → पहिने | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0158 · बाद में → बादमे / पाछाँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0159 · हमेशा → सदिखन / सदा | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0160 · अक्सर → प्राय: / बेर-बेर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0161 · तुरंत, फौरन → तुरत | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0162 · अचानक → अकस्मात् / एकाएक | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0163 · यहाँ → एतय | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0164 · वहाँ → ओतय | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0165 · जहाँ → जतय | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0166 · यहीं → एतहि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0167 · वहीं → ओतहि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0168 · इधर → एम्हर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0169 · उधर → ओम्हर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0170 · जिधर → जेम्हर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0171 · किधर → केम्हर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0172 · सामने → सोझाँ | निर्णय: नियम १८९ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0173 · पीछे → पाछाँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0174 · आगे → आगाँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0175 · नीचे → नीचाँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0176 · अंदर → भीतर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0177 · पास (निकट) → लग | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0178 · साथ → संग | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0179 · अकेला → असगर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0180 · इसी तरह → एहिना | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0181 · उसी तरह → तहिना | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0182 · हर बार → प्रत्येक बेर / सभ बेर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0183 · इस बार → एहि बेर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0184 · पहली बार → पहिल बेर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0185 · एक बार → एक बेर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0186 · बार-बार → बेर-बेर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0187 · कई बार → कएक बेर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0188 · दुबारा → फेर / दोबारा | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0189 · सुबह → भोर / भिनसर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0190 · दोपहर → दुपहर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0191 · शाम → साँझ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0192 · रात → राति | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0193 · हफ्ता → सप्ताह | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0194 · साल → बरख / वर्ष | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0195 · थोडा → थोड़ / कनेक | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0196 · ज्यादा → बेसी | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

प्रयोग-वर्ग — सहायक क्रिया/काल

VID-2026-0197 · है → अछि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0198 · हैं → छथि / छी / अछि | निर्णय: कर्ता अनुसार | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0199 · हूँ → छी | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0200 · था, थी → छल | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0201 · थे → छल / छलाह | निर्णय: आदरक प्रसंगमे 'छलाह' | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0202 · होगी, होगी → होएत | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित; होएब क्रियाक भविष्य: होयत / होएत / हएत—सभ मान्य; | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0203 · होंगे → होएताह / होएत | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित; होएब क्रियाक भविष्य: होयत / होएत / हएत—सभ मान्य; | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0204 · होता है → होइत अछि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0205 · होता था → होइत छल | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0206 · हुआ, हुई, हुए → भेल | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0207 · हो गया → भऽ गेल | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0208 · हो रहा है → भऽ रहल अछि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0209 · हो चुका है → भऽ चुकल अछि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0210 · हो सकता है → भऽ सकैत अछि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0211 · करता है → करैत अछि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0212 · करते हैं → करैत छथि / करैत छी | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0213 · करूँगा → करब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0214 · करेगा → करत | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0215 · करेंगे → करताह / करब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0216 · किया → कएल / केलक / केलहुँ | निर्णय: कर्ता अनुसार; करबाक भूत: कएल / कयल—सभ मान्य; सम्पूर्ण लेखकीय पाठमे एकरूपता; मूल उद्धरण सुरक्षित | | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0217 · किया गया → कएल गेल | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित; करबाक भूत: कएल / कयल—सभ मान्य; | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0218 · कर रहा है → कऽ रहल अछि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0219 · कर चुका है → कऽ चुकल अछि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0220 · करके → कऽ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0221 · करना चाहिए → करबाक चाही | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0222 · करने के लिए → करबाक लेल | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0223 · करने से → करबासँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0224 · करने का → करबाक | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0225 · सकता है → सकैत अछि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0226 · सकते हैं → सकैत छथि / सकैत छी | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0227 · चाहिए → चाही | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0228 · चाहता है → चाहैत अछि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0229 · रहा है, रही है → रहल अछि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0230 · रहते हैं → रहैत छथि / रहैत छी | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0231 · जाता है → जाइत अछि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0232 · जाएगा → जाएत | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0233 · जाओ → जाउ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0234 · आओ → आउ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0235 · करो → करू | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0236 · देखो → देखू | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0237 · सुनो → सुनू | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0238 · कहो → कहू | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0239 · चलो → चलू | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0240 · बोलो → बाजू | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0241 · बैठो → बैसू | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0242 · लो → लिअ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0243 · दो → दिअ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0244 · मत करो → नहि करू | निर्णय: नियम १०८; नकार: नहि / नै— सभ मान्य; सम्पूर्ण लेखकीय पाठमे एकरूपता; मूल उद्धरण सुरक्षित । | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0245 · मत जाओ → नहि जाउ | निर्णय: नियम १०८; नकार: नहि / नै— सभ मान्य; सम्पूर्ण लेखकीय पाठमे एकरूपता; मूल उद्धरण सुरक्षित । | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0246 · मुझे जाना है → हमरा जएबाक अछि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0247 · जाना पड़ा → जाए पड़ल | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0248 · वापस जाने लगा → घुरऽ लागल | निर्णय: नियम ४०५ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0249 · उसने कहा → ओ कहलक / कहलन्हि | निर्णय: आदरक प्रसंगमे 'कहलन्हि' | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0250 · उन्होंने कहा → ओ कहलन्हि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0251 · मैंने कहा → हम कहलहुँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0252 · हमने कहा → हम सभ कहलहुँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0253 · तुमने कहा, आपने कहा → अहाँ कहलहुँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0254 · देखकर → देखि कऽ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0255 · सुनकर → सुनि कऽ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0256 · आकर → आवि कऽ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0257 · जाकर → जा कऽ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0258 · कहकर → कहि कऽ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0259 · होकर → भऽ कऽ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0260 · वाला (कर्तृवाचक) → वला / निहार | निर्णय: 'फाँकवला'; 'करनिहार' | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

प्रयोग-वर्ग — मूल क्रिया

VID-2026-0261 · करना → करब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0262 · होना → होएब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0263 · जाना → जाएब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0264 · आना → आएब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0265 · देना → देब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0266 · लेना → लेब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0267 · कहना → कहब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0268 · देखना → देखब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0269 · खाना → खाएब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0270 · पीना → पिएब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0271 · सोना → सुतब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0272 · रोना → कानब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0273 · हँसना → हँसब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0274 · उठना → उठब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0275 · बैठना → बैसब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0276 · खड़ा होना → ठाढ़ होएब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0277 · गिरना → खसब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0278 · डरना → डेराएब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0279 · भूलना → बिसरब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0280 · याद करना → मोन पाड़ब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0281 · याद आना → मोन पड़ब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0282 · ढूँढना, खोजना → ताकब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0283 · समझना → बुझब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0284 · पहचानना → चिन्हब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0285 · रखना → राखब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0286 · लाना → आनब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0287 · ले जाना → लऽ जाएब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0288 · भेजना → पठाएब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0289 · बुलाना → बजाएब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0290 · मिलना (भेंट होना) → भेटब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय
गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0291 · पहनना → पहिरब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0292 · बोलना → बाजब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0293 · पूछना → पुछब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0294 · सुनना → सुनब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0295 · पढ़ना → पढ़ब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0296 · लिखना → लिखब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0297 · चलना → चलब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0298 · रहना → रहब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0299 · बनाना → बनाएब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0300 · दिखाना → देखाएब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

प्रयोग-वर्ग — संज्ञा

VID-2026-0301 · पानी → पानि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0302 · कुआँ → इनार | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0303 · चावल → चाउर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0304 · आग → आगि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0305 · धूप → रौद | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0306 · बारिश → बरखा | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0307 · पेड़ → गाछ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0308 · पत्ता → पात | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0309 · लकड़ी → काठ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0310 · पत्थर → पाथर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0311 · मिट्टी → माटि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0312 · रास्ता → बाट | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0313 · आँख → आँखि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0314 · पैर → पाएर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0315 · सिर → माथ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0316 · उँगली → आङ्गुर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0317 · नाखून → नह | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0318 · माँ → माय | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0319 · भाई → भाय | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0320 · बहन → बहिन | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0321 · दादा → बाबा | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0322 · पत्नी → कनियाँ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0323 · दूल्हा → वर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0324 · शादी → विवाह / बियाह | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0325 · बारात → बरियाति | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0326 · सास → सासु | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0327 · दोस्त → मित्र / संगी | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0328 · मेहमान → पाहुन | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0329 · लड़का → छौड़ा / बालक | निर्णय: 'छौड़ा' बोलचाल | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0330 · लड़की → छौड़ी / बालिका | निर्णय: 'छौड़ी' बोलचाल | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0331 · औरत → स्त्री / जनानी | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0332 · लोग → लोक | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0333 · बच्चे → बच्चा सभ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0334 · बुखार → जर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0335 · जगह → ठाम / स्थान | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0336 · मौका → अवसर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0337 · तरीका → विधि / ढंग | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0338 · सवाल → प्रश्न | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0339 · जवाब → उत्तर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0340 · कोशिश → प्रयास | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0341 · मदद → सहायता / मदति | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0342 · ज़िन्दगी → जीवन | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0343 · वक्त → काल / समय | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0344 · कीमत → दाम / मूल्य | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0345 · सबूत → प्रमाण | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0346 · फ़ैसला → निर्णय | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0347 · हालत → स्थिति | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0348 · वजह → कारण | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0349 · फ़र्क → अन्तर / भेद | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0350 · इस्तेमाल → प्रयोग / उपयोग | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय
गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0351 · इंतज़ार → प्रतीक्षा | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0352 · ज़रूरत → आवश्यकता | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0353 · खबर → खबरि / समाचार | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय
गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0354 · जिम्मेदारी → दायित्व | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0355 · कागज़, कागज़ → कागच | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय
गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0356 · आवाज़ → अबाज / ध्वनि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय
गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

प्रयोग-वर्ग — विशेषण

VID-2026-0357 · अच्छा → नीक | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0358 · बुरा → अधला / खराब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0359 · बड़ा → पैघ | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0360 · छोटा → छोट | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0361 · लंबा → लाम | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0362 · ऊँचा → ऊँच | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0363 · पतला → पातर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0364 · हल्का → हलुक | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0365 · गीला → भिजल | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0366 · नया → नव | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम
आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0367 · पुराना → पुरान | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0368 · महँगा → महग | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0369 · आसान → सहज | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0370 · मुश्किल → कठिन | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0371 · खास → विशेष | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0372 · आम → सामान्य | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0373 · पहला → पहिल | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0374 · दूसरा → दोसर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0375 · तीसरा → तेसर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0376 · चौथा → चारिम | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0377 · पाँचवाँ → पाँचम | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0378 · सच्चा → सत्य | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

प्रयोग-वर्ग — नुक्ता

VID-2026-0379 · ज़रूर → जरूर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0380 · ज़िन्दगी → जिन्दगी / जीवन | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय
गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0381 · ज़मीन → जमीन | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0382 · ज़रा → जरा | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण,
नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0383 · ज़माना → जमाना | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे;
उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0384 · फ़र्क → फर्क | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0385 · फ़ैसला → फैसला | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0386 · सफ़र → सफर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0387 · क़ानून → कानून | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0388 · क़िस्सा → किस्सा | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0389 · वक्त्र → वक्त | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0390 · ख़बर → खबरि | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0391 · ख़ास → खास | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0392 · ख़ुश → खुश | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0393 · त़ारीख़ → तारीख | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0394 · ग़लत → गलत | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0395 · ग़रीब → गरीब | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0396 · मज़दूर → मजदूर | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0397 · बाज़ार → बजार | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0398 · आवाज़ → अवाज | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0399 · कागज़ → कागच | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

प्रयोग-वर्ग — लिपि/नुक्ता/अवग्रह

VID-2026-0400 · ज़, फ़, क़, ख़, ग़ (नुक्तायुक्त) → ज, फ, क, ख, ग | निर्णय: नियम १८, ४७९, ४८३ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0401 · ढोल, ढाक, ढेकी → ढोल, ढाक, ढेकी | निर्णय: नियम १८, ४८० | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0402 · डर, डाँट (शब्दारम्भमे ड) → डर, डाँट | निर्णय: नियम ४८२ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0403 · पढल, बढल, चढल, गढल → पढ़ल, बढ़ल, चढ़ल, गढ़ल | निर्णय: नियम ४८१ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0404 · बाढि, पीढी → बाढ़ि, पीढ़ी | निर्णय: नियम ४८१ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0405 · तरहडि → तरहड़ि | निर्णय: नियम ४८०-४८१ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0406 · पडल, मोड, झाडि → पड़ल, मोड़, झाड़ि | निर्णय: नियम ४८२ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0407 · तहखाना → तरहड़ि | निर्णय: स्वीकृत सम्पादकीय शब्दरूप | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0408 · कs, कS, क5, क' → कऽ | निर्णय: नियम १९ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0409 · भs, भS, भ' → भऽ | निर्णयः नियम १९ | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0410 · घुरs, घुरS → घुरऽ | निर्णयः नियम १९ | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0411 · क ऽ, भ ऽ (बीचमे फाँक) → कऽ, भऽ | निर्णयः नियम १९ |

यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

प्रयोग-वर्ग — पञ्चमाक्षर/अनुस्वार

VID-2026-0412 · संपादक, संपादकीय → सम्पादक, सम्पादकीय | निर्णयः नियम

४८४ | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0413 · संबंध → सम्बन्ध | निर्णयः नियम ४८४ | यन्त्रवत् परिवर्तनः

नहि

VID-2026-0414 · संदर्भ → सन्दर्भ | निर्णयः नियम ४८४ | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0415 · संभव → सम्भव | निर्णयः नियम ४८४ | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0416 · संधि → सन्धि | निर्णयः नियम ४८४ | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0417 · अंक → अङ्क | निर्णयः नियम ४८४ | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0418 · रंग → रङ्ग | निर्णयः नियम ४८४ | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0419 · अंग → अङ्ग | निर्णयः नियम ४८४ | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0420 · अंतिम, अंतराल → अन्तिम, अन्तराल | निर्णयः नियम ४८४ |

यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0421 · स्वतंत्र, नियंत्रण → स्वतन्त्र, नियन्त्रण | निर्णयः नियम ४८४ |

यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0422 · पदबंध → पदबन्ध | निर्णयः नियम ४८४ | यन्त्रवत् परिवर्तनः

नहि

VID-2026-0423 · आंचलिक → आज्वलिक | निर्णयः नियम ४८४ | यन्त्रवत्

परिवर्तनः नहि

VID-2026-0424 · श्रृंखला, श्रृंखला → शृङ्खला | निर्णयः नियम ४८४ | यन्त्रवत्

परिवर्तनः नहि

प्रयोग-वर्ग — परसर्ग/स्थान

VID-2026-0425 · गाम सँ, हाथ सँ → गामसँ, हाथसँ | निर्णय: नियम ४८-५०, ४९६
| यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0426 · घर मे, गद्य मे → घरमे, गद्यमे | निर्णय: नियम ४८, ४९८ |
यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0427 · ओकरा कै → ओकराकै | निर्णय: नियम ४९९ | यन्त्रवत्
परिवर्तन: नहि

VID-2026-0428 · पोथी क पन्ना → पोथीक पन्ना | निर्णय: नियम ५३ | यन्त्रवत्
परिवर्तन: नहि

VID-2026-0429 · ओकरा सं, गाम सं → ओकरासँ, गामसँ | निर्णय: नियम ५०, ५०१
| यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0430 · को (परसर्ग) → कै | निर्णय: नियम ४८, ४९९ | यन्त्रवत्
परिवर्तन: नहि

VID-2026-0431 · से (परसर्ग) → सँ | निर्णय: नियम ४९-५० | यन्त्रवत् परिवर्तन:
नहि

VID-2026-0432 · का, की, के (सम्बन्ध) → क | निर्णय: नियम ५३ | यन्त्रवत्
परिवर्तन: नहि

VID-2026-0433 · वाक्यान्तमे '।' वा '।' → । | निर्णय: नियम २४ | यन्त्रवत्
परिवर्तन: नहि

VID-2026-0434 · '!!', '???' → '!', '?' | निर्णय: नियम २८ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0435 · '...' (तीन बिन्दु) → '...' | निर्णय: नियम ३० | यन्त्रवत् परिवर्तन:
नहि

VID-2026-0436 · ASCII उद्धरण "..." वा '...' → “...” आ ‘...’ | निर्णय: नियम २९ |
यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0437 · सामान्य गद्यमे अंग्रेजी अङ्क 12 → १२ | निर्णय: नियम ३३ |
यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

प्रयोग-वर्ग — क्रिया/काल

VID-2026-0438 · ओ पोथी दैत अछि → ओ पोथी दैत अछि | निर्णय: नियम ९०
| यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0439 · ओ काल्हि दैत → ओ काल्हि दैत | निर्णय: नियम ९०, ४०८ |
यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0440 · देबैत → दैत | निर्णय: नियम ९१क | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0441 · लेबैत → लैत | निर्णय: नियम ९१क | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0442 · करबैत → करैत | निर्णय: नियम ९१क | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0443 · कहबैत → कहैत | निर्णय: नियम ९१क | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0444 · जाएबैत → जाइत | निर्णय: नियम ९१क | यन्त्रवत् परिवर्तन:
नहि

VID-2026-0445 · खाएबैत → खाइत | निर्णय: नियम ९१क | यन्त्रवत् परिवर्तन:
नहि

VID-2026-0446 · ओ वापस जाने लगा → ओ घुरऽ लागल | निर्णय: नियम ४०५,
४३७ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0447 · अन्हार खसयक डर → अन्हार खसबाक डर | निर्णय: नियम ४१३
| यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0448 · न करू, मत करू → नहि करू | निर्णय: नियम १०८; नकार: नहि /
नै—सभ मान्य; सम्पूर्ण लेखकीय पाठमे एकरूपता; मूल उद्धरण सुरक्षित । |
यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0449 · दियौ गेल अछि → देल गेल अछि | निर्णय: कर्मवाच्य रूप |
यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0450 · अंग्रेजी चलैत क्रियाक सभ उदाहरणमे 'रहल' → साधारण
वर्तमान वा आवृत्तिरूप | निर्णय: नियम ४२४ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

प्रयोग-वर्ग — सर्वनाम/सम्मान

VID-2026-0451 · ई पोथी छथि → ई पोथी अछि | निर्णय: नियम ६१, ४२९ |
यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0452 · आचार्य उपस्थित अछि → आचार्य उपस्थित छथि | निर्णय:
नियम ६१, ४३० | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0453 · अहाँ संग साधारण/अशिष्ट क्रिया → पूरा वाक्यमे एक
सम्मानरूप | निर्णय: नियम ४३१ | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0454 · ककरो आएल (कर्ताक रूपमे) → कियो आएल | निर्णय: नियम
६८, ४२२; आबऽ क्रियाक भूत: आएल / आयल—सभ मान्य; सम्पूर्ण लेखकीय
पाठमे एकरूपता; मूल उद्धरण सुरक्षित। | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0455 · कियो पोथी (सम्बन्ध) → ककरो पोथी | निर्णय: नियम ६९, ४२३
| यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0456 · कियो उपाय (विशेषक) → कोनो उपाय | निर्णय: नियम ७०, ४२१
| यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0457 · हम सब, सब लोग → हम सभ, सभ लोक | निर्णय: नियम ४५ |
यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0458 · जब...तब → जखन...तखन | निर्णय: नियम ७३ | यन्त्रवत्
परिवर्तन: नहि

VID-2026-0459 · अगर...तो → जँ...तँ | निर्णय: नियम ७४ | यन्त्रवत् परिवर्तन:
नहि

VID-2026-0460 · झार सुखि गेल (वनस्पतिक डंठल) → डाँट सुखि गेल | निर्णय:
नियम ४१६, ४४० | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0461 · ओ डाँट देलक (फटकारक अर्थमे) → ओ झार देलक | निर्णय:
नियम ४१५, ४४० | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

प्रयोग-वर्ग — वाक्य-पुनर्रचना

VID-2026-0462 · मैं घर जा रहा हूँ। → हम घर जाइत छी। | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0463 · तुम कहाँ जा रहे हो? → अहाँ कतय जाइत छी? | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0464 · आप कब आएँगे? → अहाँ कहिया आएब? | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0465 · यह क्या है? → ई की अछि? | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0466 · मुझे पानी चाहिए। → हमरा पानि चाही। | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0467 · मुझे जाना है। → हमरा जएबाक अछि। | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0468 · उसे बुखार है। → ओकरा जर अछि। | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0469 · मेरे पास किताब है। → हमरा लग पोथी अछि। | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0470 · यहाँ कोई नहीं है। → एतय कियो नहि अछि। | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित; नकार: नहि / नै—सभ मान्य; | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0471 · कल मैं आऊँगा। → काल्हि हम आएब। | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0472 · अब मैं जा रहा हूँ। → आब हम जाइत छी। | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0473 · सब लोग आ गए। → सभ लोक आबि गेल। | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0474 · किसी ने नहीं देखा। → कियो नहि देखलक। | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित; नकार: नहि / नै—सभ मान्य; | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0475 · उसने मुझसे कहा कि वह आएगा। → ओ हमरासँ कहलक जे ओ आओत। | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0476 · इसके अलावा कुछ नहीं बचा। → एकरा बाहेक किछु नहि बाँचल। | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित; नकार: नहि / नै—सभ मान्य; | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0477 · जैसा कि कहा गया है। → जेना कहल गेल अछि। | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0478 · इस कारण से वह नहीं आया। → एहि कारणँ ओ नहि आएल। | निर्णय: केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप

सुरक्षित; आबऽ क्रियाक भूतः आएल / आयल—सभ मान्य; | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0479 · मेरे लिए यह काम कठिन है। → हमरा लेल ई काज कठिन अछि। | निर्णयः केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0480 · उसके साथ जाओ। → ओकरा संग जाउ। | निर्णयः केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0481 · किताब पढ़ने के बाद वह सोया। → पोथी पढ़लाक बाद ओ सुतल। | निर्णयः केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0482 · वह आया और बैठ गया। → ओ आएल आ बैसि गेल। | निर्णयः केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित; आबऽ क्रियाक भूतः आएल / आयल—सभ मान्य; | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0483 · जब वर्षा थमी, तब वह गया। → जखन वर्षा थमल, तखन ओ गेल। | निर्णयः केवल नव सम्पादकीय गद्यमे; उद्धरण, नाम आ संवादमे मूल रूप सुरक्षित | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

प्रयोग-वर्ग — सम्पादकीय शब्दरूप

VID-2026-0484 · अङ्गूठा → औंठा | निर्णयः नव मानक गद्य; स्रोत-उद्धरण नहि | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0485 · खोआइल → हेरायल | निर्णयः नव मानक गद्य; स्रोत-उद्धरण नहि | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0486 · गायब → बिलायल | निर्णयः नव मानक गद्य; स्रोत-उद्धरण नहि | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0487 · भूलल → बिसरल | निर्णयः नव मानक गद्य; स्रोत-उद्धरण नहि | यन्त्रवत् परिवर्तनः नहि

VID-2026-0488 · दरवाजा → केवाड़ी | निर्णय: नव मानक गद्य; स्रोत-उद्धरण नहि | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0489 · बरामदा → ओसारा | निर्णय: नव मानक गद्य; स्रोत-उद्धरण नहि | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0490 · कमरा / कोठरी → कोठली | निर्णय: नव मानक गद्य; स्रोत-उद्धरण नहि | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0491 · आईना → अएना | निर्णय: नव मानक गद्य; स्रोत-उद्धरण नहि | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0492 · पीतल → पित्तरि | निर्णय: नव मानक गद्य; स्रोत-उद्धरण नहि | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0493 · चाय → चाह | निर्णय: नव मानक गद्य; स्रोत-उद्धरण नहि | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

VID-2026-0494 · बारी-बारी → बेराबेरी | निर्णय: नव मानक गद्य; स्रोत-उद्धरण नहि | यन्त्रवत् परिवर्तन: नहि

चारिम भाग — १७७ प्रतिगमन-परीक्षण : पूर्ण क्रम

ई परीक्षण-नमूना मूल उपन्यासक उद्धरण नहि, सम्पादकीय परीक्षण-वाक्य अछि; एकर परिणामकेँ स्वतः सफल प्रमाणित नहि मानल गेल अछि।

T-001 · सम्पादकीय | परीक्षण: मुझे पानी चाहिए। | अपेक्षित: हमरा पानि चाही। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-002 · सम्पादकीय | परीक्षण: गाँव में बात हुई। मुझे पानी चाहिए। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। हमरा पानि चाही। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-003 · सम्पादकीय | परीक्षण: आज चर्चा हुई। मुझे पानी चाहिए। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। हमरा पानि चाही। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-004 · सम्पादकीय | परीक्षण: इस पर विचार करो। मुझे पानी चाहिए। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। हमरा पानि चाही। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-005 · सम्पादकीय | परीक्षण: यह मेरा घर है। | अपेक्षित: ई हमर घर अछि। |
मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-006 · सम्पादकीय | परीक्षण: गाँव में बात हुई। यह मेरा घर है। | अपेक्षित:
गाममे गप भेल। ई हमर घर अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-007 · सम्पादकीय | परीक्षण: आज चर्चा हुई। यह मेरा घर है। | अपेक्षित: आइ
चर्चा भेल। ई हमर घर अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-008 · सम्पादकीय | परीक्षण: इस पर विचार करो। यह मेरा घर है। | अपेक्षित:
एहि पर विचार करू। ई हमर घर अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-009 · सम्पादकीय | परीक्षण: वह अब यहाँ है। | अपेक्षित: ओ आब एतय
अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-010 · सम्पादकीय | परीक्षण: गाँव में बात हुई। वह अब यहाँ है। | अपेक्षित:
गाममे गप भेल। ओ आब एतय अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-011 · सम्पादकीय | परीक्षण: आज चर्चा हुई। वह अब यहाँ है। | अपेक्षित: आइ
चर्चा भेल। ओ आब एतय अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-012 · सम्पादकीय | परीक्षण: इस पर विचार करो। वह अब यहाँ है। | अपेक्षित:
एहि पर विचार करू। ओ आब एतय अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-013 · सम्पादकीय | परीक्षण: यह किताब अच्छी है। | अपेक्षित: ई पोथी नीक
अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-014 · सम्पादकीय | परीक्षण: गाँव में बात हुई। यह किताब अच्छी है। |
अपेक्षित: गाममे गप भेल। ई पोथी नीक अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-015 · सम्पादकीय | परीक्षण: आज चर्चा हुई। यह किताब अच्छी है। |
अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ई पोथी नीक अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-016 · सम्पादकीय | परीक्षण: इस पर विचार करो। यह किताब अच्छी है। |
अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ई पोथी नीक अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-
आधारित

T-017 · कथा | परीक्षण: वह वहाँ जाएगा। | अपेक्षित: ओ ओतय जाएत। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-018 · कथा | परीक्षण: गाँव में बात हुई। वह वहाँ जाएगा। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। ओ ओतय जाएत। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-019 · कथा | परीक्षण: आज चर्चा हुई। वह वहाँ जाएगा। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ओ ओतय जाएत। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-020 · कथा | परीक्षण: इस पर विचार करो। वह वहाँ जाएगा। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ओ ओतय जाएत। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-021 · समाचार | परीक्षण: आज बारिश हुई। | अपेक्षित: आइ बरखा भेल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-022 · समाचार | परीक्षण: गाँव में बात हुई। आज बारिश हुई। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। आइ बरखा भेल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-023 · समाचार | परीक्षण: आज चर्चा हुई। आज बारिश हुई। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। आइ बरखा भेल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-024 · समाचार | परीक्षण: इस पर विचार करो। आज बारिश हुई। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। आइ बरखा भेल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-025 · वर्णन | परीक्षण: कुआँ घर के पास है। | अपेक्षित: इनार घरक लग अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-026 · वर्णन | परीक्षण: गाँव में बात हुई। कुआँ घर के पास है। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। इनार घरक लग अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-027 · वर्णन | परीक्षण: आज चर्चा हुई। कुआँ घर के पास है। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। इनार घरक लग अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-028 · वर्णन | परीक्षण: इस पर विचार करो। कुआँ घर के पास है। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। इनार घरक लग अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-029 · संवाद | परीक्षण: मैं कल वापस आऊँगा। | अपेक्षित: हम काल्हि घुरि आएब। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-030 · संवाद | परीक्षण: गाँव में बात हुई। मैं कल वापस आऊँगा। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। हम काल्हि घुरि आएब। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-031 · संवाद | परीक्षण: आज चर्चा हुई। मैं कल वापस आऊँगा। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। हम काल्हि घुरि आएब। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-032 · संवाद | परीक्षण: इस पर विचार करो। मैं कल वापस आऊँगा। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। हम काल्हि घुरि आएब। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-033 · संवाद | परीक्षण: मेरे साथ आओ। | अपेक्षित: हमर संग आउ। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-034 · संवाद | परीक्षण: गाँव में बात हुई। मेरे साथ आओ। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। हमर संग आउ। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-035 · संवाद | परीक्षण: आज चर्चा हुई। मेरे साथ आओ। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। हमर संग आउ। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-036 · संवाद | परीक्षण: इस पर विचार करो। मेरे साथ आओ। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। हमर संग आउ। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-037 · संवाद | परीक्षण: वह कहाँ गया? | अपेक्षित: ओ कतय गेल? | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-038 · संवाद | परीक्षण: गाँव में बात हुई। वह कहाँ गया? | अपेक्षित: गाममे गप भेल। ओ कतय गेल? | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-039 · संवाद | परीक्षण: आज चर्चा हुई। वह कहाँ गया? | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ओ कतय गेल? | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-040 · संवाद | परीक्षण: इस पर विचार करो। वह कहाँ गया? | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ओ कतय गेल? | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-041 · संवाद | परीक्षण: तुम क्यों आए? | अपेक्षित: अहाँ किएक आएलहुँ? | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-042 : संवाद | परीक्षण: गाँव में बात हुई। तुम क्यों आए? | अपेक्षित: गाममे गप भेल। अहाँ किएक आएलहुँ? | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-043 : संवाद | परीक्षण: आज चर्चा हुई। तुम क्यों आए? | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। अहाँ किएक आएलहुँ? | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-044 : संवाद | परीक्षण: इस पर विचार करो। तुम क्यों आए? | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। अहाँ किएक आएलहुँ? | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-045 : संवाद | परीक्षण: किसने कहा? | अपेक्षित: के कहलक? | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-046 : संवाद | परीक्षण: गाँव में बात हुई। किसने कहा? | अपेक्षित: गाममे गप भेल। के कहलक? | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-047 : संवाद | परीक्षण: आज चर्चा हुई। किसने कहा? | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। के कहलक? | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-048 : संवाद | परीक्षण: इस पर विचार करो। किसने कहा? | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। के कहलक? | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-049 : कथा | परीक्षण: कोई आदमी आया। | अपेक्षित: कियो आदमी आएल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-050 : कथा | परीक्षण: गाँव में बात हुई। कोई आदमी आया। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। कियो आदमी आएल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-051 : कथा | परीक्षण: आज चर्चा हुई। कोई आदमी आया। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। कियो आदमी आएल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-052 : कथा | परीक्षण: इस पर विचार करो। कोई आदमी आया। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। कियो आदमी आएल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-053 : समाचार | परीक्षण: कुछ लोग आए। | अपेक्षित: किछु लोक आएल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-054 : समाचार | परीक्षण: गाँव में बात हुई। कुछ लोग आए। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। किछु लोक आएल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-055 · समाचार | परीक्षण: आज चर्चा हुई। कुछ लोग आए। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। किछु लोक आएल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-056 · समाचार | परीक्षण: इस पर विचार करो। कुछ लोग आए। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। किछु लोक आएल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-057 · वर्णन | परीक्षण: यह कमरा खाली है। | अपेक्षित: ई कोठली रिक्त अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-058 · वर्णन | परीक्षण: गाँव में बात हुई। यह कमरा खाली है। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। ई कोठली रिक्त अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-059 · वर्णन | परीक्षण: आज चर्चा हुई। यह कमरा खाली है। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ई कोठली रिक्त अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-060 · वर्णन | परीक्षण: इस पर विचार करो। यह कमरा खाली है। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ई कोठली रिक्त अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-061 · कथा | परीक्षण: वह किताब पढ़कर सोया। | अपेक्षित: ओ पोथी पढ़ि कऽ सूति गेल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-062 · कथा | परीक्षण: गाँव में बात हुई। वह किताब पढ़कर सोया। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। ओ पोथी पढ़ि कऽ सूति गेल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-063 · कथा | परीक्षण: आज चर्चा हुई। वह किताब पढ़कर सोया। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ओ पोथी पढ़ि कऽ सूति गेल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-064 · कथा | परीक्षण: इस पर विचार करो। वह किताब पढ़कर सोया। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ओ पोथी पढ़ि कऽ सूति गेल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-065 · संवाद | परीक्षण: पेड़ के नीचे बैठो। | अपेक्षित: गाछक नीचाँ बैसू। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-066 · संवाद | परीक्षण: गाँव में बात हुई। पेड़ के नीचे बैठो। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। गाछक नीचाँ बैसू। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-067 : संवाद | परीक्षण: आज चर्चा हुई। पेड़ के नीचे बैठो। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। गाछक नीचाँ बैसू। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-068 : संवाद | परीक्षण: इस पर विचार करो। पेड़ के नीचे बैठो। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। गाछक नीचाँ बैसू। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-069 : कथा | परीक्षण: वह फिर आया। | अपेक्षित: ओ फेर आएल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-070 : कथा | परीक्षण: गाँव में बात हुई। वह फिर आया। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। ओ फेर आएल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-071 : कथा | परीक्षण: आज चर्चा हुई। वह फिर आया। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ओ फेर आएल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-072 : कथा | परीक्षण: इस पर विचार करो। वह फिर आया। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ओ फेर आएल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-073 : सम्पादकीय | परीक्षण: यह काम कठिन है। | अपेक्षित: ई काज कठिन अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-074 : सम्पादकीय | परीक्षण: गाँव में बात हुई। यह काम कठिन है। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। ई काज कठिन अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-075 : सम्पादकीय | परीक्षण: आज चर्चा हुई। यह काम कठिन है। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ई काज कठिन अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-076 : सम्पादकीय | परीक्षण: इस पर विचार करो। यह काम कठिन है। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ई काज कठिन अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-077 : कथा | परीक्षण: उसने पुस्तक दे दी। | अपेक्षित: ओ पोथी दऽ देलक। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-078 : कथा | परीक्षण: गाँव में बात हुई। उसने पुस्तक दे दी। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। ओ पोथी दऽ देलक। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-079 · कथा | परीक्षण: आज चर्चा हुई। उसने पुस्तक दे दी। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ओ पोथी दऽ देलक। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-080 · कथा | परीक्षण: इस पर विचार करो। उसने पुस्तक दे दी। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ओ पोथी दऽ देलक। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-081 · शोध | परीक्षण: यह प्रश्न आसान है। | अपेक्षित: ई प्रश्न सहज अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-082 · शोध | परीक्षण: गाँव में बात हुई। यह प्रश्न आसान है। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। ई प्रश्न सहज अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-083 · शोध | परीक्षण: आज चर्चा हुई। यह प्रश्न आसान है। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ई प्रश्न सहज अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-084 · शोध | परीक्षण: इस पर विचार करो। यह प्रश्न आसान है। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ई प्रश्न सहज अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-085 · वर्णन | परीक्षण: यह रास्ता लंबा है। | अपेक्षित: ई बाट लाम अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-086 · वर्णन | परीक्षण: गाँव में बात हुई। यह रास्ता लंबा है। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। ई बाट लाम अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-087 · वर्णन | परीक्षण: आज चर्चा हुई। यह रास्ता लंबा है। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ई बाट लाम अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-088 · वर्णन | परीक्षण: इस पर विचार करो। यह रास्ता लंबा है। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ई बाट लाम अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-089 · वर्णन | परीक्षण: वह बड़ा पेड़ है। | अपेक्षित: ओ पैघ गाछ अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-090 · वर्णन | परीक्षण: गाँव में बात हुई। वह बड़ा पेड़ है। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। ओ पैघ गाछ अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-091 · वर्णन | परीक्षण: आज चर्चा हुई। वह बड़ा पेड़ है। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ओ पैघ गाछ अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-092 · वर्णन | परीक्षण: इस पर विचार करो। वह बड़ा पेड़ है। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ओ पैघ गाछ अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-093 · वर्णन | परीक्षण: इस गाँव में एक कुआँ है। | अपेक्षित: एहि गाममे एकटा इनार अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-094 · वर्णन | परीक्षण: गाँव में बात हुई। इस गाँव में एक कुआँ है। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। एहि गाममे एकटा इनार अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-095 · वर्णन | परीक्षण: आज चर्चा हुई। इस गाँव में एक कुआँ है। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। एहि गाममे एकटा इनार अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-096 · वर्णन | परीक्षण: इस पर विचार करो। इस गाँव में एक कुआँ है। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। एहि गाममे एकटा इनार अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-097 · कथा | परीक्षण: उसने आईना देखा। | अपेक्षित: ओ अएना देखलक। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-098 · कथा | परीक्षण: गाँव में बात हुई। उसने आईना देखा। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। ओ अएना देखलक। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-099 · कथा | परीक्षण: आज चर्चा हुई। उसने आईना देखा। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ओ अएना देखलक। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-100 · कथा | परीक्षण: इस पर विचार करो। उसने आईना देखा। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ओ अएना देखलक। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-101 · वर्णन | परीक्षण: यह पीतल का बर्तन है। | अपेक्षित: ई पित्तरिक बरतन अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-102 · वर्णन | परीक्षण: गाँव में बात हुई। यह पीतल का बर्तन है। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। ई पित्तरिक बरतन अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-103 · वर्णन | परीक्षण: आज चर्चा हुई। यह पीतल का बर्तन है। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ई पित्तरिक बरतन अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-104 · वर्णन | परीक्षण: इस पर विचार करो। यह पीतल का बर्तन है। |
अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ई पित्तरिक बरतन अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-
आधारित

T-105 · कथा | परीक्षण: वह कमरे में बैठा है। | अपेक्षित: ओ कोठलीमे बैसल
अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-106 · कथा | परीक्षण: गाँव में बात हुई। वह कमरे में बैठा है। | अपेक्षित: गाममे
गप भेल। ओ कोठलीमे बैसल अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-107 · कथा | परीक्षण: आज चर्चा हुई। वह कमरे में बैठा है। | अपेक्षित: आइ
चर्चा भेल। ओ कोठलीमे बैसल अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-108 · कथा | परीक्षण: इस पर विचार करो। वह कमरे में बैठा है। | अपेक्षित:
एहि पर विचार करू। ओ कोठलीमे बैसल अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-109 · कथा | परीक्षण: मैंने दरवाजा खोला। | अपेक्षित: हम केवाड़ी खोललहुँ। |
मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-110 · कथा | परीक्षण: गाँव में बात हुई। मैंने दरवाजा खोला। | अपेक्षित: गाममे
गप भेल। हम केवाड़ी खोललहुँ। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-111 · कथा | परीक्षण: आज चर्चा हुई। मैंने दरवाजा खोला। | अपेक्षित: आइ
चर्चा भेल। हम केवाड़ी खोललहुँ। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-112 · कथा | परीक्षण: इस पर विचार करो। मैंने दरवाजा खोला। | अपेक्षित:
एहि पर विचार करू। हम केवाड़ी खोललहुँ। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-113 · कथा | परीक्षण: वे बरामदे में बैठे हैं। | अपेक्षित: ओ सभ ओसारामे बैसल
छथि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-114 · कथा | परीक्षण: गाँव में बात हुई। वे बरामदे में बैठे हैं। | अपेक्षित: गाममे
गप भेल। ओ सभ ओसारामे बैसल छथि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-115 · कथा | परीक्षण: आज चर्चा हुई। वे बरामदे में बैठे हैं। | अपेक्षित: आइ
चर्चा भेल। ओ सभ ओसारामे बैसल छथि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-116 · कथा | परीक्षण: इस पर विचार करो। वे बरामदे में बैठे हैं। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ओ सभ ओसारामे बैसल छथि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-117 · शोध | परीक्षण: हर आदमी यह नहीं जानता। | अपेक्षित: सभ गोटे ई नहि जनैत छथि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-118 · शोध | परीक्षण: गाँव में बात हुई। हर आदमी यह नहीं जानता। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। सभ गोटे ई नहि जनैत छथि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-119 · शोध | परीक्षण: आज चर्चा हुई। हर आदमी यह नहीं जानता। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। सभ गोटे ई नहि जनैत छथि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-120 · शोध | परीक्षण: इस पर विचार करो। हर आदमी यह नहीं जानता। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। सभ गोटे ई नहि जनैत छथि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-121 · सम्पादकीय | परीक्षण: वह आज नहीं आएगा। | अपेक्षित: ओ आइ नहि आएत। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-122 · सम्पादकीय | परीक्षण: गाँव में बात हुई। वह आज नहीं आएगा। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। ओ आइ नहि आएत। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-123 · सम्पादकीय | परीक्षण: आज चर्चा हुई। वह आज नहीं आएगा। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ओ आइ नहि आएत। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-124 · सम्पादकीय | परीक्षण: इस पर विचार करो। वह आज नहीं आएगा। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ओ आइ नहि आएत। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-125 · संवाद | परीक्षण: किसी को मत बुलाओ। | अपेक्षित: ककरो नहि बजाउ। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-126 · संवाद | परीक्षण: गाँव में बात हुई। किसी को मत बुलाओ। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। ककरो नहि बजाउ। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-127 · संवाद | परीक्षण: आज चर्चा हुई। किसी को मत बुलाओ। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ककरो नहि बजाउ। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-128 · संवाद | परीक्षण: इस पर विचार करो। किसी को मत बुलाओ। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ककरो नहि बजाउ। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-129 · संवाद | परीक्षण: आप कब आएँगे? | अपेक्षित: अहाँ कहिया आएब? | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-130 · संवाद | परीक्षण: गाँव में बात हुई। आप कब आएँगे? | अपेक्षित: गाममे गप भेल। अहाँ कहिया आएब? | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-131 · संवाद | परीक्षण: आज चर्चा हुई। आप कब आएँगे? | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। अहाँ कहिया आएब? | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-132 · संवाद | परीक्षण: इस पर विचार करो। आप कब आएँगे? | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। अहाँ कहिया आएब? | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-133 · सम्पादकीय | परीक्षण: यह बात सही है। | अपेक्षित: ई गप ठीक अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-134 · सम्पादकीय | परीक्षण: गाँव में बात हुई। यह बात सही है। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। ई गप ठीक अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-135 · सम्पादकीय | परीक्षण: आज चर्चा हुई। यह बात सही है। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ई गप ठीक अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-136 · सम्पादकीय | परीक्षण: इस पर विचार करो। यह बात सही है। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ई गप ठीक अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-137 · संवाद | परीक्षण: उसकी बात सुनो। | अपेक्षित: ओकर गप सुनू। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-138 · संवाद | परीक्षण: गाँव में बात हुई। उसकी बात सुनो। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। ओकर गप सुनू। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-139 · संवाद | परीक्षण: आज चर्चा हुई। उसकी बात सुनो। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ओकर गप सुनू। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-140 · संवाद | परीक्षण: इस पर विचार करो। उसकी बात सुनो। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ओकर गप सुनू। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-141 · समाचार | परीक्षण: यह नई पुस्तक है। | अपेक्षित: ई नव पोथी अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-142 · समाचार | परीक्षण: गाँव में बात हुई। यह नई पुस्तक है। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। ई नव पोथी अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-143 · समाचार | परीक्षण: आज चर्चा हुई। यह नई पुस्तक है। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ई नव पोथी अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-144 · समाचार | परीक्षण: इस पर विचार करो। यह नई पुस्तक है। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ई नव पोथी अछि। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-145 · समाचार | परीक्षण: पुराना घर गिर गया। | अपेक्षित: पुरान घर खसि गेल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-146 · समाचार | परीक्षण: गाँव में बात हुई। पुराना घर गिर गया। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। पुरान घर खसि गेल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-147 · समाचार | परीक्षण: आज चर्चा हुई। पुराना घर गिर गया। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। पुरान घर खसि गेल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-148 · समाचार | परीक्षण: इस पर विचार करो। पुराना घर गिर गया। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। पुरान घर खसि गेल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-149 · कथा | परीक्षण: वह पहले आया था। | अपेक्षित: ओ पहिने आएल छल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-150 · कथा | परीक्षण: गाँव में बात हुई। वह पहले आया था। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। ओ पहिने आएल छल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-151 · कथा | परीक्षण: आज चर्चा हुई। वह पहले आया था। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ओ पहिने आएल छल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-152 · कथा | परीक्षण: इस पर विचार करो। वह पहले आया था। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ओ पहिने आएल छल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-153 · संवाद | परीक्षण: मुझे कुछ नहीं चाहिए। | अपेक्षित: हमरा किछु नहि चाही। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-154 · संवाद | परीक्षण: गाँव में बात हुई। मुझे कुछ नहीं चाहिए। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। हमरा किछु नहि चाही। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-155 · संवाद | परीक्षण: आज चर्चा हुई। मुझे कुछ नहीं चाहिए। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। हमरा किछु नहि चाही। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-156 · संवाद | परीक्षण: इस पर विचार करो। मुझे कुछ नहीं चाहिए। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। हमरा किछु नहि चाही। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-157 · कथा | परीक्षण: वह धीरे-धीरे चला। | अपेक्षित: ओ धीरे-धीरे चलल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-158 · कथा | परीक्षण: गाँव में बात हुई। वह धीरे-धीरे चला। | अपेक्षित: गाममे गप भेल। ओ धीरे-धीरे चलल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-159 · कथा | परीक्षण: आज चर्चा हुई। वह धीरे-धीरे चला। | अपेक्षित: आइ चर्चा भेल। ओ धीरे-धीरे चलल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-160 · कथा | परीक्षण: इस पर विचार करो। वह धीरे-धीरे चला। | अपेक्षित: एहि पर विचार करू। ओ धीरे-धीरे चलल। | मूल-संरक्षण: प्रसंग-आधारित

T-161 · मूल उद्धरण संरक्षण | परीक्षण: उद्धरण: “मैं जा रहा हूँ।” | अपेक्षित: उद्धरण: “मैं जा रहा हूँ।” | मूल-संरक्षण: हाँ

T-162 · मूल उद्धरण संरक्षण | परीक्षण: शीर्षक: ‘आयल’ | अपेक्षित: शीर्षक: ‘आयल’ | मूल-संरक्षण: हाँ

T-163 · मूल उद्धरण संरक्षण | परीक्षण: व्यक्तिनाम: ज़फ़र | अपेक्षित: व्यक्तिनाम: ज़फ़र | मूल-संरक्षण: हाँ

V-001 · स्वीकृत रूपक संरक्षण | परीक्षण: आएल व्यक्ति घर गेल | | अपेक्षित: आएल व्यक्ति घर गेल | | मूल-संरक्षण: हाँ

V-002 · स्वीकृत रूपक संरक्षण | परीक्षण: आयल व्यक्ति घर गेल | | अपेक्षित: आयल व्यक्ति घर गेल | | मूल-संरक्षण: हाँ

V-003 · स्वीकृत रूपक संरक्षण | परीक्षण: ओ नहि आएल | | अपेक्षित: ओ नहि आएल | | मूल-संरक्षण: हाँ

V-004 · स्वीकृत रूपक संरक्षण | परीक्षण: ओ नै आएल | | अपेक्षित: ओ नै आएल | | मूल-संरक्षण: हाँ

V-005 · स्वीकृत रूपक संरक्षण | परीक्षण: ओ काज कएल | | अपेक्षित: ओ काज कएल | | मूल-संरक्षण: हाँ

V-006 · स्वीकृत रूपक संरक्षण | परीक्षण: ओ काज कयल | | अपेक्षित: ओ काज कयल | | मूल-संरक्षण: हाँ

V-007 · स्वीकृत रूपक संरक्षण | परीक्षण: ई काज काल्ह होयत | | अपेक्षित: ई काज काल्ह होयत | | मूल-संरक्षण: हाँ

V-008 · स्वीकृत रूपक संरक्षण | परीक्षण: ई काज काल्ह होएत | | अपेक्षित: ई काज काल्ह होएत | | मूल-संरक्षण: हाँ

V-009 · स्वीकृत रूपक संरक्षण | परीक्षण: ई काज काल्ह हएत | | अपेक्षित: ई काज काल्ह हएत | | मूल-संरक्षण: हाँ

V-010 · एकरूपता-जाँच | परीक्षण: ओ आयल | दोसर दिन ओ आएल | | अपेक्षित: ओ आयल | दोसर दिन ओ आएल | | मूल-संरक्षण: हाँ

V-011 · एकरूपता-जाँच | परीक्षण: हम नहि जनैत छी | ओ नै जनैत छथि | | अपेक्षित: हम नहि जनैत छी | ओ नै जनैत छथि | | मूल-संरक्षण: हाँ

V-012 · एकरूपता-जाँच | परीक्षण: ओ काज कएल। फेर ओकरा कयल कहल गेल। | अपेक्षित: ओ काज कएल। फेर ओकरा कयल कहल गेल। | मूल-संरक्षण: हाँ

V-013 · एकरूपता-जाँच | परीक्षण: काल्ह होयत। परसू होएत। फेर हएत। | अपेक्षित: काल्ह होयत। परसू होएत। फेर हएत। | मूल-संरक्षण: हाँ

V-014 · अर्थभेद | परीक्षण: ओ पोथी देत। ओ पोथी दैत अछि। | अपेक्षित: ओ पोथी देत। ओ पोथी दैत अछि। | मूल-संरक्षण: हाँ

पाँचम भाग — पूर्ण पाठ-संग्रह आ प्रमाणक सीमा

आवृत्ति-पञ्जीक आधार “सहस्रशीर्षा” आ “सहस्रबाद्धनि”क मूल वर्ड पाठ अछि; १००-कथाक संग्रह एहि विशिष्ट गणनामे सम्मिलित नहि अछि।

नहि/नै, आएल/आयल, कएल/कयल आ होयत/होएत/हएतमे कम आवृत्ति अशुद्धताक प्रमाण नहि; लेखकक चयन आ उद्धरणक स्वायत्तता सुरक्षित अछि।

शून्य आवृत्तिक अर्थ नमूना-पाठमे सटीक लिखित रूप नहि मिलब अछि। ई अनिवार्य भाषिक निषेध वा ऐतिहासिक अनुपस्थितिक प्रमाण नहि।

नियमक निर्देशात्मक स्थिति, कोश-प्रविष्टिक प्रमाण-स्थिति आ परीक्षण-वाक्यक कात्पनिक परीक्षण-स्थिति सदा पृथक रहत।

सन्दर्भ-सूची

मुख्य ग्रन्थ — गजेन्द्र ठाकुर, विदेह शुद्ध मैथिली लेखन-शैली निर्देशिका (चौथ संशोधन, २०२६)।

सहायक सन्दर्भ — विदेह मैथिली नियम-पञ्जी, सम्पादकीय कोश आ परीक्षण-वाक्य (२०२६)।

main — <https://videha-ejournal.github.io/videha/index.htm>

archive — <https://videha-ejournal.github.io/videha/videha.htm>

samagra — <https://www.videha.co.in/gajendra-thakur-samagra.htm>

समापन — मैथिली लेखन-शैलीक महत्त्व प्रमाणित भाषिक रूप, अर्थ-सापेक्ष संशोधन आ लेखकीय स्वरक संरक्षणमे निहित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-५६

चौथ संशोधित निर्देशिकाक ५९२ नियम, मूल वर्ड-पाठ आधारित प्रयोग-कोश,
नियम-पञ्जी आ परीक्षण-वाक्यक स्रोताधारित सम्पादकीय विवेचन।

मूल पाठ □ विस्तृत आलोचना □ सम्पादकीय चयन



विदेह



विदेह डिजिटल संग्रह